प्रकाशक
महामाया पब्लिकेशन्स
नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर।
मूल्य 70/-

Writer :

पंडित वाई०एन० झा "तूफान"
(ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक)
टोबरी मुहल्ला, टांडा रोड,
मकान न० 61, जालन्धर सिटी
पिन-144 004 (पंजाब)

Typesetting by : **Sunshine Computers**

Printed By : **Mahamaya Printers**

प्रकाशक :

महामाया पब्लिकेशन्स

नज़दीक चौक अड्डा टांडा,
जालन्धर शहर - 144008
फोन : 0181-2212696, 3251696

विषय सूची

प्रथम भाग

माता महाकाली अवतार खण्ड

दूसरा भाग

माता काली तत्व व रहस्य खण्ड

तृतीय भाग
उपासना से पूर्व आवश्यक ज्ञान खण्ड

चतुर्थ भाग
उपासना हेतु विभिन्न आसन व मालाएँ प्रयोग

पंचम भाग

माता महाकाली पूजन आरम्भ खण्ड

षष्ठम् भाग

माता महाकाली स्तोत्र कवच वन्दना खण्ड

सप्तम भाग
श्री महाकाली यंत्र-मंत्र सिद्धि खण्ड

भूमिका

सर्वव्यापिनी ''आदिशक्ति'' महाकाली भक्तों की रक्षा दानव एवं अधर्मियों के संहार हेतु अनेकों रूप में इस पवित्र-पावन ''भरत धरा'' पर अवतरित हुई है। महामाया प्रकृति स्वरूपिणी ''महाकाली'' ही सृष्टि ब्रह्माण्ड एवं संसार के हर जीवों की मूल प्रेरिका शक्ति हैं। कण-कण में व्याप्त महाकाली की शक्ति ही सारे विश्व में सर्व सम्पत्ति एवं कामना देने वाली एवं सृष्टि को चलाने वाली स्वामिनी हैं।

आदिशक्ति ''पार्वती'' जो महाकाली के रूप में हैं वे ही कलियुग में सबसे अधिक फल देने वाली हैं साथ ही मंत्र-यंत्र-तंत्र की सिद्धि दात्री भी हैं।

जो भी इनकी उपासना हृदय से करता है, उन भक्तों की झोली भगवती क्षण में ही भर देती है किन्तु इनकी उपासना करने की विधि सही रूप में उपलब्ध नहीं होने के कारण उपासक अत्यधिक असफल हो जाया करते हैं।

इन सब कठिनाईयों को देखते हुए सम्पूर्ण शास्त्रों, ग्रन्थों एवं पुराणों आदि का मनन करने के पश्चात् यह ''महाकाली उपासना'' नामक ग्रन्थ आपके कर-कमलों में समर्पित कर रहा हूँ।

इस परम दिव्य उपासना पद्धति में उपासना के अनेकानेक चमत्कारिक विधियों स्तोत्रों कवच आदि का वर्णन किया गया है, जो पूर्व समय के ऋषि-महर्षियों देवि-देवताओं द्वारा रचित है। जिसमें मुख्यतः नित्य पूजन विधि, वैदिक वृहद् षोड़शोपचार पूजन विधि, देवि-देवताओं एवं ऋषि महार्षियों द्वारा विरचित स्तोत्र, हवन, वन्दना आदि का वर्णन है। इसके साथ ही महाकाली के अचूक अनेकानेक यन्त्रों का भी वर्णन है, ये सभी यंत्र का नीरिक्षण सिद्धि द्वारा स्वयं मैंने प्राप्त की है और उसका वास्तविक सफल चमत्कारिक अनुभव प्राप्त कर ही पुस्तक में वर्णित की है। इन यंत्रों को मेरे कार्यालय से प्राप्त कर संसार के अनेकों दुखी लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

अतः आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि महाकाली भक्तों के लिए यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा। इस ग्रन्थ में वर्णित यंत्रों की सिद्धि में हमसे परामर्श प्राप्त करना चाहे या किसी भी समस्याओं से उबरने हेतु यंत्र प्राप्त करना चाहे, जीवन का पूर्ण ''भाग्यफल'' प्राप्त करना चाहे तो पत्राचार करें। मैं आपके सभी पत्रों का उत्तर देने हेतु कृत संकल्पित हूं। ''जय महाकाली''

लेखक
(कार्यालय का पता)
पंडित वाई० एन० झा ''तूफान''
(ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक)
H.No. 61, टोबरी मुहल्ला,
टांडा रोड, (नजदीक देवी तालाब मन्दिर)
जालन्धर सिटी-144004 पंजाब, (भारत)

प्रथम भाग

माता महाकाली अवतार खण्ड

संसार के सभी देवी-देवता एक ही "महा-आद्या शक्ति" के विभिन्न स्वरूप

जगदम्बा शिवा-शक्ति माहेश्वरी महाकाली के उपासको ! "महा आद्या शक्ति" ही "परमात्मा" है जो विभिन्न रूपों में विविध लीलाएं करती हैं।

"परमात्मा के पुरुष वाचक सभी स्वरूप इन्हीं अनादि, अविनाशिनी, अनिर्वचनीया, सर्व शक्तिमयी, परमेश्वरी-"आद्या महाशक्ति" के ही हैं। यही महाशक्ति अपनी माया शक्ति को जब अपने अन्दर छिपाये रखती है, उससे कोई क्रिया नहीं करती, तब निष्क्रिय "शुद्ध ब्रह्म" कहलाती है। यही जब उसे विकासोन्मुख करके एक से अनेक होने का संकल्प करती है तब स्वयं ही पुरुष रूप में मानो अपनी ही प्रकृति रूप योनि में "संकल्प" द्वारा "चेतन रूप बीज" स्थापना करके सगुण, निराकार परमात्मा बन जाती है। इसी की अपनी शक्ति से गर्भाशय में वीर्य स्थापन से होने वाली विकार की भाँति उस प्रकृति में क्रमशः सात विकृति होती है। (महातत्व-समष्टि बुद्धि, अहंकार, और सूक्ष्म पञ्चतन्मात्राएं-मूल प्रकृति के विकार होने से इन्हें "विकृति" कहते हैं, परन्तु इनसे अन्य सोलह विकारों की उत्पत्ति होने के कारण इन सातों के समुदाय को-"प्रकृति" भी कहते हैं)"

फिर "अहंकार से"-मन और दस (ज्ञान कर्म रूप) इन्द्रियों और "पञ्चतन्मात्रा" से "पञ्चभूतों" की उत्पत्ति होती है (इसलिए इन दोनों समुदायों का नाम "प्रकृति" और "विकृति" है। मूल प्रकृति के सात विकार, सप्तधा विकार रूपा प्रकृति से उत्पन्न सोलह विकार और स्वयं मूल प्रकृति -ये कुल मिलाकर "चौबीस तत्व" हैं) यों वह महाशक्ति ही अपनी प्रकृति सहित चौबीस तत्वों के रूप में-यह "स्थूल

संसार'' बन जाती है और ''जीव रूप से'' स्वयं पचीसवें तत्व स्वरूप में प्रविष्ट होकर खेल खेलती है।

चेतन परमात्मरूपणि महाशक्ति के बिन जड़ प्रकृति से यह सारा कार्य कदापि सम्पन्न नहीं हो सकता। इस प्रकार ''महाशक्ति विश्वरूप विराट् पुरुष बनती है'' और इस सृष्टि के निर्माण में स्थूल निर्माता ''प्रजापति'' के रूप में आप ही अंशावतार के भाव से–''ब्रह्मा'' और पालन कर्त्ता के रूप में ''विष्णु'' और संहार कर्त्ता के रूप में–''रुद्र'' बन जाती है। और ये ब्रह्मा विष्णु शिव प्रभृति अंशावतार भी किसी कल्प में–दुर्गा एवं काली रूप में महा शिव रूप से किसी में श्री राम रूप से और किसी में श्री कृष्ण रूप से। ''एक ही शक्ति''–विभिन्न कल्पों में विभिन्न नाम रूपों से–''सृष्टि रचना'' करती है। इस विभिन्नता का कारण और रहस्य भी उन्हीं को ज्ञात है। जो अनन्त ब्रह्मण्ड में ''महाशक्ति'' असंख्य ब्रह्मा, विष्णु, महेश बनी हुई हैं। और अपनी माया शक्ति से अपने को ढककर आप ही ''जीव संज्ञा'' को प्राप्त हैं।

ईश्वर जगत, जीव, तीनों आप ही है। भोक्ता, भोग्य और भोग तीनों आप ही हैं इन तीनों को अपने ही से निर्माण करने वाली तीनों में व्याप्त रहने वाली भी आप ही हैं।

इन्हीं सगुण–निर्गुण रूप भगवान या भगवती से उपर्युक्त प्रकार से कभी ''महादेवी'' रूप के द्वारा, कभी ''महाशिव रूप'' के द्वारा, कभी महाविष्णु रूप के द्वारा कभी श्री कृष्ण रूप के द्वारा कभी श्री राम रूप के द्वारा–''सृष्टि की उत्पत्ति होती है।'' और यही परमात्मा रूपा महाशक्ति पुरुष और नारी रूप में विविध अवतारों में प्रकट होती है। अपने पुरुष रूप अवतारों में स्वयं ''महाशक्ति'' ही लीला के लिए उन्हीं के अनुसार रूपों में उनकी ''पत्नी'' बन जाती है। ऐसे बहुत से इतिहास मिलते हैं जिन में महाविष्णु ने लक्ष्मी से श्री कृष्ण ने राधा से श्री सदाशिव ने उमा से और श्री राम ने सीता से एवं इसी प्रकार श्री लक्ष्मी राधा उमा और सीता ने महाविष्णु श्री कृष्ण, श्री सदाशिव और श्री राम से कहा है कि–''हम दोनों सर्वथा अभिन्न हैं, एक के ही दो रूप हैं, सिर्फ लीला के लिए एक के दो रूप बन गये हैं, वस्तुतः हम दोनों में कोई अन्तर नहीं है।''

यही आदि के तीन जोड़े उत्पन्न करने वाली–''महालक्ष्मी'' है। इन्हीं की शक्ति से ''ब्रह्मा–विष्णु–रुद्र'' बनते हैं, जिनसे विश्व की उत्पत्ति होती है। इन्हीं की शक्ति से विष्णु और शिव प्रकट होकर विश्व का पालन और संहार करते हैं। दया, क्षमा, निद्रा, स्मृति, क्षुधा, तृष्णा, तृप्ति, श्रद्धा, भक्ति, धृति, मति, तुष्टि, पुष्टि, शान्ति, कान्ति, लज्जा आदि इन्हीं ''महाशक्ति की''–''शक्तियां'' हैं। यही गोलोक में श्री राधासाकेत में श्री सीता, क्षीरोदसागर में लक्ष्मी, दक्ष कन्या सती,

दुर्गति नाशिनी श्री दुर्गा व श्री काली हैं। यही वाणी, विद्या, सरस्वती, सावित्री और गायत्री हैं। यही सूर्य की प्रभाशक्ति, पूर्ण चन्द्र की सुधा वर्षिणि शोभा शक्ति अग्नि की दाहिका शक्ति, वायु की वहन शक्ति, जल की शीतलता शक्ति, धरा की धारणा शक्ति, और शस्य की प्रसूति शक्ति है। यही तपस्वियों का तप, ब्रह्मचारियों का ब्रह्मतेज, गृहस्थों की सर्वाश्रम आश्रयता, वान प्रस्थों की संयम शीलता, संन्यासियों का त्याग, महापुरुषों की महत्ता और मुक्त पुरुषों की –"मुक्ति" है।

यही "आद्याशक्ति"–शूरों का बल, दानियों की उदारता, माता–पिता का वात्सल्य, गुरु की गुरुता, पुत्र और शिष्य की गुरुजन भक्ति, साधुओं की साधुता, चतुरों की चातुरी और मायावियों की माया है। यही लेखकों की लेखन शक्ति, नरेशों की प्रजापालन शक्ति और प्रजा की राजशक्ति है। यही विद्वानों की विद्या, सम्पत्ति, धनवानों की अर्थ सम्पत्ति, ज्ञानियों की ज्ञान शक्ति और प्रेमियों के प्रेम शक्ति हैं।

यही परमेश्वरी राजाओं की राज लक्ष्मी, वणिकों की सौभाग्य लक्ष्मी, सज्जनों की शोभा लक्ष्मी और श्रेयार्थियों की श्रीं है। सारांश यह कि जगत में तमाम जगह परमात्मा रूप "महाशक्ति" ही विविध शक्तियों के रूप में खेल रही है। तमाम जगह स्वभाविक ही शक्ति की पूजा ही रही है। जहां शक्ति नहीं है वही "शून्यता" है। शक्ति हीन की कहीं कोई पूछ नहीं। प्रहलाद, ध्रुव–"भक्ति शक्ति" के कारण पूजित हैं। "रोणी" "प्रेम शक्ति" के कारण जगत पूज्य है। भीष्म, हनुमान की ब्रह्मचर्य शक्ति, ब्यास, वाल्मीकि की कवित्व शक्ति, भीम, अर्जुन की शौर्य शक्ति, युधिधिष्ठर हरिश्चन्द्र की सत्य शक्ति, शिवा जी, राणा प्रताप की वीर शक्ति, इस प्रकार जहां देखो वहीं–"शक्ति" के कारण ही सबकी शोभा और पूजा है। सर्वत्र आद्या शक्ति का ही समादर और बोल–बाला है। शक्ति हीन वस्तु जगत में टिक ही नहीं सकती। सारा जगत अनादि काल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निरन्तर केवल–"शक्ति" की ही उपासना में लगा रहा है और सदा लगा रहेगा।

यह "आद्या महाशक्ति" ही सर्व कारण रूप प्रकृति की आधार–भूता होने से "महा कारण" है। यही मायाधीश्वरी है, यही सृजन–पालन–संहार कारिणी आद्या नारायणि शक्ति है, और यही प्रकृति के विस्तार के समय भर्त्ता, भोक्ता और "महेश्वर" होती है। परा और अपरा दोनों प्रकृतियां इन्हीं की हैं। अथवा यही दो प्रकृतियों के रूप में प्रकाशित होती हैं।

जो श्री कृष्ण की उपासना करते हैं वे भी इन्हीं की करते हैं। जो श्री राम शिव या गणेश रूप अथवा दुर्गा, वैष्णवी, ज्वाला, छिन्न

मस्तिका, चामुण्डा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती रूप में उपासना करते हैं वे भी इन्हीं ''आद्या शक्ति'' की करते हैं। श्री कृष्ण ही काली है, माँ काली ही श्री कृष्ण है। इसलिए जो जिस रूप की उपासना करते हैं, उन्हें उस उपासना को छोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। हां, इतना अवश्य निश्चय कर लेना चाहिए कि मैं जिन भगवान या भगवती की उपासना कर रहा हूँ, वही सर्वदेवमय और सर्वरूप मय है, सर्वशक्तिमान और सर्वोपरि है। दूसरों के सभी ''इष्ट देव'' इन्हीं के विभिन्न स्वरूप हैं।

भगवान शिव और आद्या शक्ति भगवती काली

शिव जो ''शक्तिमान'' हैं, उनसे ''शक्ति'' भिन्न नहीं है। अधिष्ठान से अध्यस्त की सत्ता भिन्न नहीं होती, वह तो अधिष्ठान रूप ही है। ''शिव एक रस, अपरिणामी हैं और ''शक्ति'' परिणामी है यह जगत परिणामी शक्ति का ही विलास है। शिव से शक्ति का अविर्भाव होते ही तीनों लोक और चौदहों भुवन उत्पन्न होते हैं और शक्ति का तिरोभाव होते ही जगत का अत्यन्त अभाव हो जाता है। ''वेदान्त'' से नीचे के श्लोकों में इसी बात को स्पष्ट किया गया है–

''शक्तिजातं हि संसारं तस्मिन् सति जगत्त्रयम्।।
तस्मिन क्षीणे जगत क्षीणं तच्चिकिरस्यं प्रयत्नतः।।''

हिन्दी अनुवाद–''शक्ति'' का कार्य यह संसार है। शक्ति के आविर्भाव से तीनों ही जगत उत्पन्न होते हैं और शक्ति का तिरोभाव होने से जगत का अत्यन्त अभाव हो जाता है।

शिव की आद्यस्पन्द रूपा अव्यक्त शक्ति भक्तों के भावनानुसार अनेक रूपों को धारण करती है, जैसे–दुर्गा, महाकाली, राधा, ललिता, त्रिपुरा, महालक्ष्मी, महा सरस्वती अन्नपूर्णा इत्यादि।

क्रिया के अनुसार ''शक्ति'' के अनेक नाम हैं चूंकि शिव से इसकी भिन्न सत्ता नहीं है, इस कारण इसको (महाकाली या पार्वती को) शिव की ''शक्ति'' कहते हैं। संसार को उत्पन्न करने की विशेष क्रिया इसमें है–इस कारण इसे ''प्रकृति'' कहते हैं। यह ''इन्द्रजाल'' के समान अनेक पदार्थों को क्षण भर में बना देती हैं। इस कारण इसे– ''अघटन–घटना–पटीयसी'' माया भी कहते हैं, जहां कोई पदार्थ विद्यमान नहीं है वहां यह क्षण भर में अनेक पदार्थ विद्यमान कर देती है, इस कारण इसे ''अविद्या'' भी कहते हैं।

अव्यक्त नाम्नी परमेश शक्ति-
रणाधविद्या त्रिगुणात्मिका परा।
कार्यानुमेया सुधियैव माया
चया जगत्सर्वमिदं प्रसूयते।।

हिन्दी अनुवाद–(भगवान शंकराचार्य जी कहते हैं) ''परमात्मा की अव्यक्त नाम वाली शक्ति जिसने इस समस्त संसार को उत्पन्न किया है अनादि, अविद्या, त्रिगुणात्मिका और जगत रूपी कार्य के परे है। कार्य रूप जगत को देखकर ही ''शक्ति रूपी माया की सिद्धि होती है।'' बालक माता के उदर में नौ मास रहता है, पिता तो एक क्षण में वीर्य प्रदान कर देता है। दीर्घकाल तक उदर में तो माता ही रखती है। इस लौकिक दृष्टान्त के समान ही तीनों लोक चौदहों भुवन और समस्त दृश्यमान संसार ''शक्ति'' रूपी माता के उदर में स्थित है, वही हमारा पालन–पोषण करती है।''

यही बात श्री कृष्ण भगवान ने गीता के निम्नलिखत श्लोकों में कही है–

मम योनिर्महद् ब्रह्म तस्मिन् गर्भं दधाग्यहम्।
सम्भवः सर्व भूतानां ततो भवति भारत।।
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता।।
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्धि परिवर्तते।।
यावत्सं जायते किञ्चित्सत्वं स्थावर जंगमम।
क्षेत्र क्षेत्रज्ञसं योगात्तद्विद्धि भरतर्षभ।।

हिन्दी अनुवाद–''श्री कृष्ण भगवान कहते हैं कि हे अर्जुन ! मेरी शक्ति रूपी योनिगर्भाधान का स्थान है और मैं उसी योनि में चेतन रूप बीज स्थापित करता हूँ। इन दोनों के संयोग से संसार की उत्पत्ति होती है। अनेक प्रकार की योनियों में जितने शरीरादि आकार वाले पदार्थ उत्पन्न होते हैं, उनमें त्रिगुणमयी शक्ति तो गर्भधारण करने वाली माता है और मैं बीज का स्थापन करने वाला पिता हूँ। मुझ अधिष्ठान के सकाश से मेरी शक्ति चराचर संसार को उत्पन्न करती है, इसी कारण यह संसार जन्म–मरण रूपी चक्र में घूमता रहता है। जितना स्थावर जंगम संसार दीख पड़ता है वह सब क्षेत्रज्ञ और क्षेत्र के संयोग से उत्पन्न हुआ है।''

विद्यारण्य मुनि भी यही कहते हैं–

न केवलम् ब्रह्मैव जगत्कारणं, निर्विकारत्वात्।
नापि केवलम् शक्तिः कारणं स्वातंत्रया भावात्।।
तस्मादुभयं मिलित्वैव जगत्कारणं भवति।

हिन्दी अनुवाद–''केवल ब्रह्म जगत का कारण नहीं, क्योंकि वह निर्विकार है, और केवल शक्ति भी जगत का कारण नहीं, क्योंकि उसमें स्वतंत्रता का अभाव है। इस कारण ब्रह्म और शक्ति दोनों के संयोग से संसार उत्पन्न होता है।'' उपनिषद भी शक्ति की महिमा से भरे पड़े हैं। नीचे के कुछ मंत्रों से यह स्पष्ट हो जायेगा। लेख बढ़ जाने के कारण अधिक प्रमाण नहीं दिये जाते।

मायां तु प्रकृति विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्।
तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत्।।
न तस्य कार्यं करणं च विद्यते।
न तस्समश्चाभ्य धिकश्च दृश्यते।।
परास्य शक्ति र्विविधैव श्रूयते।
सवाभाविकी ज्ञान बलक्रिया च।।
ते ध्यान योगानुगता अपश्यन्।
देवास्म शक्ति निखिभानि तानि।
कालास्म युक्तान्य धितिष्ट त्येकः।।

हिन्दी अनुवाद–''माया को ''प्रकृति'' जानो, माया के अधिपति और प्रेरक ''महेश्वर'' हैं। महेश्वर के अवयव रूप भूतों से यह जगत भरा पड़ा है। महेश्वर और माया को व्यापक समझो। ''ब्रह्मा'' का न कोई कार्य है, न करण, न उसके समान कोई है, न कोई अधिक है। परमात्मा की शक्ति नाना प्रकार की सुनी जाती है, शक्ति में ज्ञान, बल और क्रिया स्वभाविक है। मुनियों ने ध्यान के बल से अपने ही गुणों से निगूढ़ आध्यात्म शक्ति (प्रकृति) और ईश्वर को देखा जो कालस्व भावादि कारणों के भी कारण रूप में एक होकर अधिष्ठित है।'' मुनियों ने योग बल से यह सिद्धान्त निकाला कि इस जगत के कारण ''शिव और शक्ति'' (महाकाली–पार्वती) दोनों हैं।

''दुर्गा सप्तसती'' में भी शिव की अव्यक्ता स्पन्द रूपा शक्ति देवी ने अनेक रूप धारण किए हैं। पांचवें अध्याय में शक्ति रूपी देवी की विलक्षण शक्तियों का खूब स्पष्ट वर्णन आया है। जैसे ''यह शिव की–''शक्ति,–अव्यक्त रूप से दृश्य मात्र जगत में और सब शरीरों में

विष्णु की माया, चेतना, बुद्धि, शक्ति लक्ष्मी, वृत्ति, स्मृति आदि नामों से आप ही स्थित हैं। दृश्यमान जगत की और सब इन्द्रियों की अधिष्ठात्री है और दृश्य अदृश्य जगत मात्र में व्याप्त हैं और चेतना रूप है। ऐसी जगन्माता देवी को बारम्बार प्रणाम है। यही शक्ति रूपी देवी अव्यक्त रूप से नामों को धारण करती है और भक्तों को भावना के अनुसार अव्यक्त होकर भी व्यक्त (प्रकट) रूपों को धारण करती है। दुर्गा, महाकाली, राधा, अन्नपूर्णा, महा सरस्वती, महा लक्ष्मी, तारा इत्यादि अनेक रूपों को धारण करती है। देवी में अनन्त सार्म्थय है। जैसे बीज से अंकुर भिन्न नहीं है, सूर्य की किरणें जैसे सूर्य से भिन्न नहीं, वैसे ही शिव से शक्ति (महाकाली) भिन्न नहीं।''

सूर्य की किरणों का आश्रय लेकर हम सूर्य में लीन हो सकते हैं, वैसे ही शक्ति रूपी महाकाली की उपासना का आश्रय लेकर हम ''ब्रह्म'' में लीन हो सकते हैं, सविकल्प समाधि का आश्रय लेकर हम निर्विकल्प समाधि प्राप्त कर लेते हैं। सविकल्प समाधि साधना रूप है, निर्विकल्प उसका फल है वैसे ही महाकाली शक्ति की उपासना साधन रूप है ''ब्रह्म'' में लीन होना उसका ''फल'' है।

परात्पर नाम से प्रसिद्ध विश्वातीत–महाकाली पुरुष (शिव) की शक्ति का ही नाम ''महाकाली'' है। शक्ति शक्तिमान से अभिन्न है। अतएव अद्वैतवाद अक्षुण्ण रहता है। अग्नि की दाहक शक्ति जैसे अग्नि से अभिन्न है, प्रकाश शक्ति जैसे सूर्य से अभिन्न है, तथैव चिदात्मा की शक्ति चिदात्मा से अभिन्न है। वह एक ही तत्व–''शिव–शक्ति''–रूप में परिणत हो रहा है। ''अर्धनारीश्वर'' की उपासना का यही मौलिक रहस्य है।

वह अप्रज्ञात, अलक्षण तत्व ही ''महाकाल'' है और उसी की (शिव की) शक्ति ''महाकाली'' है। सृष्टि के पहले इन्हीं का साम्राज्य रहता है। दश महाविधाओं में पूजनीय–महाशक्ति का यह ''महाकाली'' पहला स्वरूप है। अतएव महाकाली आगम शास्त्रों में प्रथमा, ''आद्या'' आदि नामों से प्रतिष्ठित है। (भगवती महाकाली के असंख्य रूप हैं, इन्होंने पापियों का संहार करने हेतु असंख्य रूप में असंख्य बार अवतार लिए, ग्रहण किए हैं।

आद्या शक्ति महाकाली के रूप आसन और अस्त्र-शस्त्र

भक्तो ! भगवती महामाया मातेश्वरी काली के अनेक रूप हैं– किसी के चौसठ भुजाएं हैं। किसी के बत्तीस, किसी के आठ,

किसी के चार किसी के दो ही। किसी ने जिह्वा निकाल रक्खी है। किसी के हाथ में कमल है। किसी के हाथ में नरमुंड, किसी के कर्त्तरी (कैंची) किसी के परशु है। कोई मुर्दे पर खड़ी है। कोई अट्टहास करती हुई सुरापान कर रही है। कोई नग्न है। उनकी शरीराकृति महाडरावनी है। उसकी दष्ट्रा (दंत) बड़ी तीक्ष्ण अतएव महा भयावन है। ऐसे महा भयानक रूप वाली वह आदि माया हंस रही है। श्मशान ही उनकी आवास भूमि है। जिह्वा बाहर निकल रही है। गले में मुण्ड माला है। एक हाथ में नरमुण्ड और एक हाथ में खड़ग है। एक में अभय मुद्रा है, प्यार है दुलार है और एक में भक्तों को देने हेतु दया का भंडार है, सुखी संसार और ''मोक्ष'' है। महाकाली महाप्रलय की ''अधिष्ठात्री'' और भक्तों को शीघ्र प्रदान करने वाली ''वरदात्री'' है। इनकी उपासना से मानव कुछ भी प्राप्त कर सकता है।

काली संहार की देवी है। इसकी उत्पत्ति भी असुरों के विनाश के लिए देवी आद्या के भ्रू–विलाश से ही हुई है। यही महामाया रूप से सृष्टि के आदि व अन्त में सर्वदा विद्यमान रहती है। यह शक्ति स्वरूपा है। इसके बिना शिव भी संहार करने में असमर्थ हैं। काली ''काल'' का भी विनाश कर देने वाली होने के कारण ''काल विनाशिनी'' कही गयी है। काली का जहां ''रौद्र रूप'' जग विख्यात है, वहीं ''सौम्य रूप'' में भी इनकी पूजा–अर्चना की जाती है। संसार में सर्वप्रथम ''दक्षिण भैरव'' ने इनकी पूजा वन्दना की थी इसलिए ये आद्या भवानी– ''दक्षिण काली'' के नाम से विशेष रूप में विख्यात है। भगवती भक्तों एवं देवगणों की कार्य सिद्धि के लिए समय–समय पर अवतरित होती रहती है और काली ''काल'' से भी ''सर्वोपरि'' है।

''वाक्य प्रदीप'' में लिखा है कि–

अव्याहताः कला यस्य काल शक्ति मुपाश्रिताः।
जन्माद्यो विकाराः षड्भाव भेदस्य योनयः॥
एकस्य सर्व बीजस्य यस्य चेय मनेकधा।
भोक्तृ भोक्त व्यरूपेण भोग रूपेण च स्थितिः॥

अर्थात् ''काल का दूसरा स्वरूप रुद्र, भैरव या सदाशिव है, लेकिन यह काली के चरणों में स्थित होने से इसका अस्तित्व काली से कम ही जान पड़ता है। जब प्राणी महाकाली का ध्यान करता है तो ''काल'' अर्थात् महादेव–महारुद्र या शिव काली के चरणों में स्थित होने से इसका अस्तित्व महाकाली से कम ही प्रतीत किया जा सकता है।''

आद्या शक्ति महाकाली अवतारों की विभिन्न वैदिक कथाएं

माता महाकाली के भक्तो ! "आद्या शक्ति" महा काली के रूप में एक बार नहीं अनेकों बार अवतरित हुई हैं। जब–जब भी सृष्टि संहार करने की बारी आयी है, भक्तों ने उन्हें पुकारा है, तब–तब वे दुष्टों के संहार हेतु महाकाली रूप में अवतरित हुई हैं। कुछ संक्षिप्त कथाएं इस प्रकार हैं–

एक समय की बात है कि शक्तिवान महेश्वर भगवती उमा से रूठ कर कहीं चलने को तत्पर हुए। भगवती ने कहा हे परमेश्वर ! हे प्राण नाथ !! आप इस प्रकार हमसे रुष्ट होकर कहां जा रहे हैं ? भगवान शंकर ने उत्तर दिया "हमारी जहां इच्छा होगी वहां मैं जाऊंगा।"

भवगती ने मुस्कराते हुए निवेदन किया–"हमारे पास से अन्यत्र जाने का विचार आप त्याग दीजिए।" परन्तु भगवान सदा शिव ने भगवती के शब्दों पर ध्यान न देते हुए अन्यत्र जाने के विचार से प्रस्थान कर ही दिया। कुछ दूर जाने पर देखा कि मार्ग अवरुद्ध करके भगवती श्री महाकाली सामने खड़ी हैं और भगवान शंकर से बोली–

"इस दिशा में आप नहीं जा सकते।"

पुनः भगवान शंकर ने उस ओर से प्रत्यावर्तित होकर विभिन्न दिशाओं की ओर क्रमशः प्रस्थान किया। परन्तु जिस–जिस दिशा की ओर शंकर भगवान गये, उन–उन दिशाओं में भगवती का कोई न कोई स्वरूप मार्ग रोके हुए उपस्थित रहा।

इस प्रकार भगवती जगदम्बा के दश–दिशाओं में दश स्वरूप प्रकट हुए। जो आगम ग्रन्थों में "दश महाविद्या" के नाम से विख्यात हुए।

"भगवती महाकाली रूप में" आद्या शक्ति की अवतरण की दूसरी कथा इस प्रकार है–

प्रलय काल में सम्पूर्ण संसार के जल मग्न होने पर भगवान विष्णु शेषशय्या पर योगनिद्रा में सो रहे थे। उस समय भगवान के कर्णकीट से उत्पन्न "मधु" और "कैटभ" नामक दो घोर राक्षस ब्रह्मा जी को मारने को उद्यत हो गये। भगवान के नाभि कमल में स्थित प्रजापति ब्रह्मा ने असुरों को देखकर भगवान को जगाने के लिए एकाग्र हृदय से "हरि" भगवान के नेत्र कमल स्थित "योगनिद्रा" की स्तुति की–

"हे देवि ! तू ही इस जगत की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करने वाली है, तू ही महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति, और मोह

स्वरूपा है, दारुण कालरात्रि, महारात्रि, और मोहरात्रि, भी तू ही है। तूने जगत की उत्पत्ति, स्थिति और लय करने वाले साक्षात् भगवान विष्णु को भी–योगनिद्रा के वश में कर दिया है और विष्णु, शंकर और मैं (ब्रह्मा) शरीर ग्रहण करने को बाधित किये गये हैं। ऐसी महामाया शक्ति की स्तुति कौन कर सकता है ? हे देवि ! अपने प्रभाव से इन असुरों को मोहित कर मारने के लिए कृपया भगवान को जगाइये।''

इस प्रकार स्तुति करने पर वह महामाया भगवती भगवान के नेत्र, मुख, नासिका, बाहु तथा हृदय से बाहर निकलकर प्रत्यक्ष खड़ी हो गई। भगवान भी उठे और देखा कि दो भयंकर राक्षस ब्रह्मा को खाने के लिए उद्यत हो रहे हैं। ब्रह्मा की रक्षा के लिए स्वयं भगवान उनसे युद्ध करने लगे। युद्ध करते–करते पांच हज़ार वर्ष बीत गये, परन्तु वे राक्षस नहीं मरे। तब महामाया ने उन राक्षसों की बुद्धि मोहित कर दी, जिससे वे अभिमान पूर्वक विष्णु भगवान से कहने लगे कि– ''हम तुम्हारे युद्ध से अति संतुष्ट हुए हैं तुम इच्छित वर मांगो।'' भगवान कहने लगे–''यदि आप मुझे वर ही देना चाहते हैं तो यही वर दीजिए कि आप दोनों मेरे द्वार मारे जायें मधु–कैटभ ने ''तथास्तु'' कहा, और बोले कि–''जहां पृथ्वी जल से ढकी हुई हो वहां हमको नहीं मारना।'' अन्त में भगवान ने उनके शिरों को अपनी जंघाओं पर रखकर चक्र से काट डाला। इस प्रकार देव कार्य सिद्ध करने के लिए आद्या शक्ति जगदम्बा ने ''महाकाली'' का रूप धारण किया।''

भगवान शंकर की जटा से ''काली अवतरण कथा''

''महा शिव पुराण'' के रुद्र संहिता में ब्रह्मा जी कहते हैं कि–हे नारद ! पूर्व काल में समस्त महात्मा मुनि प्रयाग में यज्ञ हेतु उपस्थित हुए थे। उस यज्ञ में सनकादिक सिद्ध गण, देवर्षि, प्रजापति तथा भगवान शंकर भी पधारे थे।

उसी समय प्रजापतियों के पति प्रभु–''दक्ष'' जो भगवान शंकर के श्वसुर भी हैं, पधारे ! वे सबके सम्माननीय थे, क्योंकि उस समय वे पूरे ब्रह्माण्ड के अधिपति बनाए गये थे।

उनके आते ही समस्त देवर्षियों ने नतमस्तक हो स्तुति और प्रणाम के द्वारा दोनों हाथ जोड़कर उत्तम तेजस्वी दक्ष का आदर सत्कार किया। परन्तु भगवान शंकर ने उनके सामने मस्तक नहीं झुकाया। इस पर दक्ष प्रजापति अति क्रोधित होकर उच्च स्वर में बोल उठे ''देवता, असुर, श्रेष्ठ ब्राह्मण, ऋषि सभी मेरे चरणों पर सिर

झुकाते हैं, परन्तु यह जो (भगवान शंकर की ओर उंगली से इंगित करते हुए) प्रेतों और पिशाचों से घिरा हुआ महामनस्वी बनकर बैठा है, वह दुष्ट मुझे उठकर क्यों नहीं प्रणाम करता?

श्मशान में निवास करने वाला यह निर्लज्ज हो गया, यह भूतों और पिशाचों के बीच में मतवाला हो गया अतः इसे यज्ञ से बहिष्कृत कर दिया जाये।

श्री दक्ष ने भगवान शंकर से अपमान का बदला लेने के ख्याल से कुछ ही दिनों के बाद एक बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन करवाया। उस यज्ञ में सभी देवी–देवताओं को आमंत्रित किया किन्तु भगवान शंकर को नहीं बुलाया।

जब यज्ञ स्थल की ओर राजा दक्ष के यहां सभी देवता और ऋषिगण जा रहे थे तब दक्ष कन्या देवी सती गंधमादन पर्वत पर धारागृह में सखियों के साथ भान्ति–भान्ति की क्रीड़ाएं कर रही थीं। संयोग वश उस समय रोहिणी के साथ दक्ष यज्ञ में जाते हुए चन्द्रमा को देखा। देखकर वे अपनी हितकारिणी श्रेष्ठ सखी विजया से बोलीं–"हे विजये ! जल्दी जाकर पूछ तो आज ये चन्द्रदेव रोहिणी के साथ कहां जा रहे हैं ?"

सती के इस प्रकार आज्ञा देने से विजया तुरन्त उनके पास गई और शिष्टाचार से पूछा–"चन्द्रदेव ! आप कहां जा रहे हैं ?"

विजया का यह प्रश्न सुनकर चन्द्रदेव ने अपनी यात्रा का उद्देश्य आदरपूर्वक बताया। दक्ष के यहां होने वाले यज्ञोत्सव आदि का सारा वृत्तान्त कहा।

सारी बातें सुनकर विजया बड़ी उतावली के साथ देवी के पास आयी और चन्द्रमा ने जो खुद कहा था, वह सब उनसे कह सुनाया। उसे सुनकर सती देवी भगवान शंकर से जाकर यज्ञ स्थल में जाने की प्रार्थना करने लगी। सती की बातें सुनकर महेश्वर मधुर बाणी में बोले–"देवी ! तुम्हारे पिता दक्ष मेरे विशेष द्रोही हो गये हैं, अतः हमें यज्ञ में आने का निमंत्रण नहीं दिया। जो लोग बिना बुलाये दूसरे के घर जाते हैं, वे वहां अनादर पाते हैं, जो मृत्यु से भी बढ़कर कष्टदायक है। अतः प्रिये ! तुमको और मुझको इस यज्ञ में नहीं जाना चाहिए।"

भगवान महेश्वर के ऐसा कहने पर सती रोषपूर्वक बोली–शम्भो! आप सबके ईश्वर हैं। जिनके जाने से यज्ञ सफल होता है, उन्हीं आपको मेरे दुष्ट पिता ने इस समय आमंत्रित नहीं किया है। प्रभो ! उस दुरात्मा का अभिप्राय क्या है, वह सब मैं जानना चाहती हूँ, अतः आप मुझे वहां जाने की आज्ञा दें। शिव ने कहा हे देवी ! यदि तुम्हारी रुचि वहां अवश्य जाने के लिए हो ही गई तो मेरी आज्ञा से तुम शीघ्र अपने पिता के यज्ञ में जाओ।

रुद्र क्रा आदेश पाने पर आभूषणों से अलंकृत हो देवी सती पिता के घर की ओर चली। परमात्मा शिव ने उन्हें सुन्दर वस्त्र, आभूषण और उज्ज्वल छत्र प्रदान कर विदाई दी। भगवान शिव की आज्ञा से साठ हज़ार रुद्र गण उनके साथ चले।

जब भगवती सती दक्ष के भवन द्वार पर पहुंची तो अपने वाहन नन्दी से उतरकर अकेली ही शीघ्रता पूर्वक यज्ञशाला के भीतर चली गई। सती को आया देखकर उनकी यशस्विनी माता असिक्री (विरिणी) और बहनों ने उनका यथोचित आदर सत्कार किया, परन्तु दक्ष ने क्रोध से उनकी तरफ देखा भी नहीं।

यज्ञ स्थल में भगवान शिव का भाग नहीं देखकर तिरस्कृत सती अपने पिता से क्रोध युक्त होकर बोली–''प्रजापते ! आप ने परम मंगल कारक भगवान शिव को इस यज्ञ में क्यों नहीं बुलाया, आपने इन्हें समान देव समझकर क्यों अनादर किया ? हे ब्रह्मा, हे विष्णु आदि देवता मुनियो ! अपने प्रभु भगवान शिव के आए बिना आप लोग इस यज्ञ में कैसे चले आये ? सभी देव गण उनकी बातों पर चुप थे।''

इस पर दक्ष बोले–''भद्रे ! तुम्हारे बहुत कहने से क्या लाभ। इससमय यहां तुम्हारा कोई काम नहीं है और तुम यहां आयी ही क्यों ? तुम्हारा पति शिव अमंगल रूप है। वे कुलीन भी नहीं है। वेद से बहिष्कृत और भूतों–प्रेतों एवं पिशाचों का स्वामी है, अतः उसे बुलाकर हमें क्या यज्ञ भ्रष्ट करना था। तुम्हें भी ठहरना है तो ठहरो वरना उल्टी पांव वापस जाओ।''

इस तरह पिता के द्वारा भगवान शंकर की निन्दा सुनकर सती व्याकुल हो उठी और उसी वक्त अपने तन में ''ब्रह्माग्नि'' पैदा कर भस्म हो गयी। चारों ओर हाहाकार छा गया। सभी रुद्रगण यज्ञ स्थल को नष्ट करने लगे, किन्तु देवताओं की ताकत के सामने रुद्रगण टिक न सके और जान बचाकर कुछ रुद्रगण भगवान शंकर के पास भाग कर पहुंचे। गणों ने आकर महेश्वर से कहा–''हे महादेव ! दक्ष बड़ा दुरात्मा और घमंडी है, उसने देवी सती का वहां पर अपमान किया, फलस्वरूप योगाग्नि द्वारा जल कर भस्म हो गयी। ये देख दश हज़ार से अधिक शिवगण लज्जा वश शस्त्रों द्वारा अपने ही अंगों को काट–काट कर वहां मर गये। शेष हमलोग दक्ष का यज्ञ विध्वंस कर डालते किन्तु भृगु के मंत्र बल का सामना न कर सके।''

रुद्रगणों के मुख से सारी बातें सुनकर सर्वेश्वर रुद्र ने उस समय बड़ा भारी क्रोध प्रकट किया। संहारकारी शिव ने अपने सिर से एक जटा उखाड़ी और उसे रोष पूर्वक पर्वत के ऊपर दे पटका। भगवान शंकर के पटकने से उस जटा के दो टुकड़े हो गये और महा प्रलय के समान भयंकर शब्द प्रकट हुआ।

हे नारद ! उस जटा के पूर्व भाग से महा भयंकर, महा बली वीरभद्र प्रकट हुए जो समस्त शिव गणों के अगुआ हैं तथा "जटा के दूसरी भाग से "महाकाली" उत्पन्न हुई, जो बड़ी भयंकर दिखायी देती थी। फिर इन दोनों ने जाकर दक्ष सेना सहित को मार गिराया। तत्पश्चात् कुछ समय बाद दक्ष प्रजापति शिव जी द्वारा "पुनर्जीवित" हुए थे।"

माहेश्वरी "पार्वती जी" की "कौशिकी" रूप में महाकाली अवतार कथा

पूर्व काल में "शुम्भ और निशुम्भ" नामक असुरों ने अपने बल के घमण्ड में आकर शचिपति इन्द्र के हाथ से तीनों लोकों का राज्य और यज्ञ छीन लिए। वे ही दोनों सूर्य, चन्द्रमा, कुबेर, यम और वरुण के सभी अधिकार का उपयोग करने लगे। वायु और अग्नि का कार्य भी वे ही करने लगे।

उन दोनों ने सभी देवताओं को अपमानित, राज्य भ्रष्ट, पराजित तथा अधिकार छीन करके स्वर्ग से निकाल दिया। उन दोनों महान् असुरों से तिरस्कृत देवताओं ने "अपराजिता" देवी का स्मरण किया और सोचा कि "जगदम्बा ने "महिषासुर वध" के पश्चात् हम लोगों को वर दिया था कि आपत्ति काल में स्मरण करने पर मैं तुम्हारी सब आपत्तियों का नाश कर दूंगी।"

यह विचार कर देवता गिरिराज हिमाचल पर गये और भगवती– "आदि शक्ति" की स्तुति करने लगे।

इस प्रकार जब देवता स्तुति कर रहे थे, तभी उस समय "पार्वती जी" गंगा स्नान करने के लिए उधर से ही जा रही थीं। देवताओं को स्तुति करते देखकर भगवती ने पूछा कि हे देवगण आप सभी यहां किस स्तुति में लीन हैं ?

तब उस वक्त "पार्वती जी" के ही शरीर कोष से "शिवा देवी" प्रकट होकर बोली "शुम्भ–निशुम्भ दैत्य से तिरस्कृत और युद्ध में पराजित ये समस्त देवता मेरी ही स्तुति कर रहे हैं।"

पार्वती जी के शरीर कोश से अम्बिका का प्रादुर्भाव हुआ था, इसीलिए वे समस्त लोकों में "कौशिकी" कही जाती हैं। कौशिकी के प्रकट होने के बाद उस वक्त पार्वती जी का शरीर "काले रंग" का हो गया, अतः वे हिमालय पर रहने वाली "कालिका देवी" के नाम से विख्यात हुई।

भगवती "चामुण्डा महाकाली" अवतार कथा

जब ''पार्वती जी'' ने शुम्भ निशुम्भ से सताए हुए देवताओं का आर्तनाद सुना तो उन्हें संकट से मुक्ति दिलाने की दिलासा देकर स्वयं आद्या भवानी ''अष्टभुजी'' बन कर हिमालय पर निवास करने लगी ताकि उस क्षेत्र में शुम्भ–निशुम्भ के दूत उन्हें देख सकें और अपने असुरपति से उनके बारे में सब कुछ बता सकें, और मैं देवताओं को उसके प्रभावों से मुक्त करा सकूं, और हुआ भी ऐसा ही।

एक दिन शुम्भ–निशुम्भ के हितैषी ''चण्ड और मुण्ड'' वहां आए और उन्होंने परम मनोहर रूप धारण करने वाली–''अम्बिका देवी'' को देखा। फिर वे शुम्भ–निशुम्भ के पास जाकर बोले–''महाराज ! एक अत्यन्त मनोहर ''स्त्री'' है, जो अपनी दिव्य कान्ति से हिमालय को प्रकाशित कर रही है। वैसा उत्तम नारी रूप कहीं किसी ने भी नहीं देखा होगा। इसलिए हे असुरेश्वर यह पता लगाइये कि वह देवी कौन है और उसे पकड़ लीजिए।''

''हे स्वामी ! स्त्रियों में तो वह रत्न है। उसका प्रत्येक अंग बहुत ही सुन्दर है तथा अपने ''श्री'' अंगों की प्रभा से सम्पूर्ण दिशाओं में प्रकाश फैला रही है। दैत्यराज ! अभी वह हिमालय पर ही मौजूद है, आप उसे देख सकते हैं।''

''चण्ड–मुण्ड'' का यह वचन सुनकर शुम्भ महादैत्य ने ''सुग्रीव दैत्य'' को दूत बनाकर देवी के पास भेजा और कहा–तुम मेरी आज्ञा से निम्न ये बातें कहना और ऐसा उपाय करना जिससे प्रसन्न होकर वह शीघ्र ही आ जाये। संदेश सुनने के बाद दूत अत्यन्त रमणीय प्रदेश में जहां मौजूद थीं, गया और मधुर वाणी में कोमल वचन बोला– ''देवी! दैत्यराज शुम्भ इस समय तीनों लोकों के परमेश्वर हैं, मैं उन्हीं का भेजा हुआ दूत हूँ और यहां तुम्हारे ही पास आया हूँ, उनकी आज्ञा उनके आदेश का उलंघन नहीं कर सकता। वे सम्पूर्ण देवताओं को परास्त कर चुके हैं। उन्होंने जो तुम्हारे लिए संदेश दिया है उसे सुनो–

''सम्पूर्ण त्रिलोक मेरे अधिकार में है। सम्पूर्ण देवता भी मेरी आज्ञा के आधीन चलते हैं। अतः तुम भी मेरे पास आ जाओ और तुम मेरे या मेरे भाई निशुम्भ की पत्नी बनकर महारानी की तरह राज्य करो।''

''दूत के कहने पर भगवती बोली कि हमें पता है कि आपके असुरपति दोनों भाई बहुत पराक्रमी हैं, किन्तु मैंने भी यह प्रतिज्ञा कर

रखी है, कि जो भी हमें युद्ध में हरायेगा उसी को ''वरण'' करूंगी। तुम जाओ, अपने असुरपति को कहो कि हमसे युद्ध करें और हमें जीतकर अपने राज महल में ले जायें।'' दूत चला गया।

दूत के द्वारा देवी का यह कथन सुनकर दैत्य राज कुपित हो उठा और दैत्य सेनापति ''धूम्रलोचन'' से बोला–''तुम अपनी सेना को साथ लेकर जाओ और उस दुष्टा को केश से पकड़कर घसीटते हुए ज़बरदस्ती यहां ले आओ। उसकी रक्षा करने के लिए यदि कोई दूसरा खड़ा हो तो वह देवता, यक्ष, गन्धर्व कोई भी क्यों न हो उसे अवश्य मार डालना।''

शुम्भ के इस प्रकार आज्ञा देने पर धुम्रलोचन दैत्य साठ हजार असुरों की सेना को साथ लेक वहां से तुरन्त चल दिया। हिमालय पर पहुंचते ही उसने देवी को देखा और ललकार कर कहा–''अरी ! शुम्भ–निशुम्भ के पास चल। यदि इस समय प्रसन्नता पूर्वक मेरे स्वामी के समीप नहीं चलेगी, तो मैं बल पूर्वक केश पकड़ कर घसीटते हुए तुझे ले चलूंगा।''

देवी बोली–''तुम्हें दैत्यों के राजा ने भेजा है, तुम स्वयं भी बलवान हो और तुम्हारे पास विशाल सेना भी है, ऐसी दशा में यदि मुझे बल पूर्वक ले चलोगे तो मैं तुम्हारा क्या कर सकती हूँ।''

देवी के यों कहने पर असुर धूम्रलोचन उनकी ओर दौड़ा, तब अम्बिका ने–''हुं'' शब्द के उच्चारण मात्र से उसको भस्म कर दिया। फिर तो भयानक युद्ध छिड़ गया। उस महासंग्राम में जब दैत्य पति के कई असुर बलवान सेनापति धराशायी हो गए तब शुम्भ की आज्ञा पाकर ''चण्ड–मुण्ड'' रणक्षेत्र में भगवती से मुकाबला करने आये। आते ही उसके बलवान सैनिकों ने चारों तरफ से घेरकर अस्त्र–शस्त्रों की बरसात शुरु कर दी।

तब ''अम्बिका'' ने उन शत्रुओं के प्रति बड़ा क्रोध किया। उस समय क्रोध के कारण उनका मुख ''काला'' पड़ गया। ललाट में भौहें टेढ़ी हो गईं और वहां से तुरन्त–''विकराल मुख वाली महाकाली'' प्रकट हुई जो तलवार और पाश लिए हुए थी।

विचित्र खटवाङ्ग धारण किये–और चीते के चर्म की साड़ी पहने ''नरमुंडों की माला'' से विभूषित थीं। उनके शरीर का मांस सूख गया था, केवल हड्डियों का ढांचा था, जिससे वे भयंकर जान पड़ती थीं, उनका मुख बहुत विशाल था। जीभ लपलपाने के कारण वे और डरावनी प्रतीत होती थीं। उनकी आंखें भीतर की ओर धंसी हुई और लाल थीं। वे अपनी भयंकर गर्जना से सम्पूर्ण दिशाओं को गुंजा रही थीं।

बड़े–बड़े दैत्यों का वध करती हुई कालिका देवी बड़े वेग से दैत्यों

की उस सेना पर टूट पड़ी और उन सब को भक्षण करने लगी। योद्धाओं और घण्टा सहित कितने ही हाथियों को एक ही हाथ से पकड़कर मुंह में डाल लेती थी।

माता महाकाली ने बलवान एवं दुरात्मा दैत्यों की वह सारी सेना क्षण भर में रौंद डाली, खा डाली और कितने को मार गिराया। कोई तलवार के घाट उतारे गये, कोई खटवाङ्ग से पीटे गये और कितने ही असुर दांतों के अग्रभाग से कुचले जाकर मृत्यु को प्राप्त हुए।

यह देख ''चण्ड'' उस अत्यन्त भयानक काली देवी की ओर दौड़ा तथा महादैत्य मुण्ड ने भी अत्यन्त भयानक बाणों की वर्षा से तथा हज़ारों बार चलाये हुए चक्रों से उन भयानक नेत्रों वाली देवी को आच्छादित कर दिया। भयानक संग्राम के पश्चात् महाकाली ने अपने खड़ग से ''चण्ड–मुण्ड'' का सिर काटकर हाथ में ले भगवती आदि शक्ति दुर्गा रूपी पार्वती के पास पहुंची और बोली–हे भगवती ! मैंने ''चण्ड और मुण्ड नामक'' दो महा पशुओं को मार डाला।

इस पर आद्या शक्ति बोली–''हे कालिका ! तुमने चण्ड और मुण्ड को मारकर अत्यन्त ही पुण्यदायक कार्य किया है, इसलिए संसार में ''चामुण्डा'' के नाम से तुम्हारी ख्याति होगी। इस प्रकार महाकाली वहीं पर ''चामुण्डा महाकाली''कहलायी।

दैत्य राज "रक्तबीज वध" के समय "महाकाली अवतार" की कथा

चण्ड और मुण्ड नामक दैत्यों के मारे जाने पर तथा बहुत सी सेना का संहार हो जाने पर दैत्यों के राजा प्रतापी शुम्भ के मन में बड़ा क्रोध हुआ और उसने दैत्यों की सम्पूर्ण सेना को युद्ध के लिए कूच करने की आज्ञा दे दी।

युद्ध स्थल में जाकर अनेकों दैत्य सेनापतियों ने महान–महान असुरों की सेना लेकर भगवती को घेर कर बाणों से आच्छादित कर दिया। धनुष की टंकार, सिंह की दहाड़ और घण्टे की ध्वनि से सम्पूर्ण दिशाएं गूंज उठीं। उस भयंकर शब्द से काली ने अपने विकराल मुख को और बढ़ा लिया। उस तुमुल नाद को सुनकर दैत्यों की सेनाओं ने चारों ओर से आकर चंडिका देवी सिंह तथा काली देवी को क्रोध पूर्वक घेर लिया।

इसी बीच असुरों के विनाश तथा देवताओं के अभ्युदय के लिए ब्रह्मा, शिव, कार्तिकेय, विष्णु तथा इन्द्र आदि देवों की ''शक्तियां'' जो अत्यन्त पराक्रम और बल से सम्पन्न थीं, उनके शरीर से निकलकर

उन्हीं के रूप में चण्डिका देवी के पास गयीं, जिस देवता का जैसा रूप जैसी वेषभूषा और जैसा वाहन है, ठीक वैसे ही साधनों से सम्पन्न हो उसकी शक्तियां असुरों से युद्ध करने आयीं। तदनन्तर उन देव शक्तियों में से महा देव जी की ''महाशक्ति'' ने चण्डिका से कहा–''मेरी प्रसन्नता के लिए तुम शीघ्र ही इन असुरों का संहार करो।''

तब देवी के शरीर से अत्यन्त भयानक और परम उग्र चण्डिका शक्ति (महाकाली) प्रकट हुई, जो सैकड़ों गीदड़ियों की भान्ति शब्द करने वाली थी। उस अपराजिता देवी ने धूमिल जटा वाले महादेव जी से कहा–''भगवन ! आप शुम्भ–निशुम्भ के पास दूत बनकर जाइये और उससे कहिए कि यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो पाताल पुनः वापस चले जाओ, इन्द्र को त्रिलोकी का राज्य वापस दे दो। यदि बल के घमंड में आकर तुम युद्ध की अभिलाषा रखते हो तो आओ ! मेरी योगिनियां तुम्हारे कच्चे मांस से तृप्त हों।''

चूंकि उस देवी ने ''भगवन शिव'' को दूत कार्य में नियुक्त किया था, इसलिए वे ''शिव दूती'' के नाम से संसार में विख्यात हुई।

वे महादैत्य भगवान शिव के मुख से देवी के वचन सुनकर क्रोध में भर गये और जहां कात्यायनि विराजमान थीं, उस ओर बढ़े। तदनन्तर वे दैत्य अभर्ष में भरकर पहले ही देवी के ऊपर बाण, शक्ति और ऋष्टि आदि अनेक अस्त्रों की वर्षा करने लगे।

अनेकों असुरों का विनाश होने पर ''रक्तबीज'' युद्ध क्षेत्र में लड़ने हेतु आया। इन्हें वरदान मिला था कि यदि युद्ध क्षेत्र में एक कतरा भी लहू का आपके शरीर से ज़मीन पर गिरेगा तो उसी वक्त कतरे से एक हजार रक्तबीज पैदा होंगे।

वह महासुर रक्तबीज हाथ में गदा लेकर भगवती के साथ युद्ध करने लगा। भगवती के बज्र से घायल होने पर उसके शरीर से रक्त गिरने लगा और उससे उसी के समान रूप–बल वाले लाखों योद्धा उत्पन्न हो गये। समस्त युद्ध क्षेत्र में रक्तबीज ही रक्तबीज दिखाई पड़ने लगे। यह देख सभी देवता भय से उदास हो गये। देवताओं को उदास देखकर चण्डिका ने काली से शीघ्रता पूर्वक कहा–हे चामुण्डे ! तुम अपना मुख और भी फैलाओ तथा मेरे शस्त्रपात से गिरने वाले रक्त बिन्दुओं और उनसे उत्पन्न होने वाले महादैत्यों को तुम अपने इस उतावले मुख से खा जाओ। इस प्रकार रक्त से उत्पन्न होने वाले महादैत्यों का भक्षण करती हुई रण क्षेत्र में विचरती रहो। ऐसा करने से उस दैत्य का सारा रक्त क्षीण हो जाने पर स्वयं ही नष्ट हो जायेगा। उस भयंकर दैत्यों को जब तुम खा जाओगी तो दूसरे नये दैत्य उत्पन्न नहीं हो सकेंगे।

यों कहकर दुर्गा देवी ने रक्तबीज को मारा और काली ने अपने

मुख में उसका रक्त ले लिया। रक्त पीने से काली के मुख में जो महादैत्य उत्पन्न हुए उन्हें भी वह चट कर गई। तत्पश्चात् बाण, खड़ग तथा–ऋष्टि आदि से रक्तबीज को मार डाला। इससे देवताओं को अनुपम हर्ष की प्राप्ति हुई और आकाश से पुष्प बरसाने लगे।

"दस विद्या" रूपी महाकाली के नाम

रुष्ट होकर जाते हुए "भगवान शिव" के दसो मार्ग अवरुद्ध करने वाली पार्वती रूपी (महाकाली) दस विद्याओं के नाम इस प्रकार हैं–1. काली 2. तारा 3. षोड़शी 4. त्रिपुर सुन्दरी 5. भुवनेश्वरी, 6. भैरवी 7. छिन्न मस्तिका 8. धूम्रावती, 9. बगलामुखी और 10. मातंगी।

इन दशों रूपों में काली आदि शक्ति भगवती है और सभी रूप सर्वोच्च हैं जिसमें महाकाली का प्रथम स्थान है।

भगवती महाकाली के स्वरूप

"आद्या भवानी" जब "उग्र तामसी रूप" में आती है तो अपनी आकृति विनाशकारी विकराल बना लेती हैं। उस समय इनके दस मुख, बीस, भुजा, बीस पांव, तीन नेत्र और काजल वर्ण की होती हैं। उनका रूप तो अत्यन्त भंयकर होता है किन्तु वह रूप सिर्फ दुष्टात्मा के लिए भक्तों के लिए तो इस रूप में भी भगवती दया का सागर होती है।

वे अपने हाथों में खड़ग, बाण, गदा, शूल, चक्र, शंख, भृशुण्डी, परिध, धनुष और ताजा लहू टपकता हुआ शीश धारण किये हुए होती है। ये भगवती भक्तों को जन्म–मरणादि सांसारिक बन्धनों से दूर करती है–और सर्वदा अपने उपासकों का मंगल करती हैं। ये अपने गले में दुष्ट मुण्डों की माला धारण करती हैं और विह्वल भाव से अपने भक्तों को गले लगाकर सब कुछ प्रदान कर देती हैं।

माता महाकाली की महानता

महाकाली "आद्या शक्ति" भवानी ही सम्पूर्ण चराचर जगत की "सृष्टि, पालन और संहार" की "मलिका" हैं और "सदाशिव" ही परब्रह्म स्वरूपा "महाकाल" हैं, जिन दोनों के द्वारा ही समस्त जगत का संचालन होता है।

यही ''आदिशक्ति भगवती'' तीनों गुणों को उत्पन्न करने वाली हैं। सृष्टि को चलायमान रखने वाले ''त्रिदेवों'' की ये ''महाशक्ति'' हैं। इसके बिना श्री ब्रह्मा सृष्टि नहीं कर सकते, विष्णु पालन नहीं कर सकते और भगवान शंकर संहार नहीं कर सकते। सर्वेश्वर होते हुए भी ''शक्ति'' के बिना शिव ''शव'' के समान हो जाते हैं।

यही ''महादेवी'' सात्विकी रूप में ''वैष्णवी, कौमारी, सरस्वती, लक्ष्मी, सीता, रुक्मिणी और राधा बनकर आयी हैं और भक्तों के कष्टों को मिटाया हैं।''

जब ये ''तामसी रूप में'' आती हैं तो महाकाली, चामुण्डा, वाराही, मोहरात्रि, कालरात्रि, और भंयकर दारुण मोहरात्रि कहलाती हैं।

जब–जब भी देवताओं पर संकट आया है, तब–तब ये आद्या शक्ति भगवती ने अनेकों रूप में अवतरित होकर उनके कष्ट को दूर किया है।

''मार्कण्डेय पुराण में'' आदि शक्ति के बारे में वर्णन करते हुए राजा सूरथ से मेघा मुनि बोले है कि हे राजन ! ''आदि शक्ति महामाया'' की कृपा से ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी जीते हैं।

ये भगवती सृष्टि को चलायमान करने वाले विष्णु को भी मोहित कर नींद में सुला देती हैं और सृष्टि कर्ता विधाता को भी भ्रमित कर देती हैं।

ये भगवती भगवान शंकर के साथ ''पार्वती'' के रूप में इसलिए हैं कि सृष्टि का कोई भी कार्य ''नर–नारी'' के संयोग के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता। भगवान शंकर के हाथों में विनाश कार्य ''आद्या शक्ति'' (परब्रह्म) ने सौंपी है, फिर यदि आद्या शक्ति उनसे विलग हो जाय तो वे संहार कैसे कर पायेंगे ? अतः संहार हेतु उनके साथ आद्या शक्ति साथ निभाती हैं।

श्री दक्ष प्रजापति को मातेश्वरी महाकाली की वरदान कथा

''श्री देवी भागवत पुराण में'' महर्षि माकण्डेय जी कहते हैं कि जब ब्रह्मा जी मधुकैटभ दानव के भय से भयभीत हुए थे, उस समय प्रथम बार उन्होंने योग निद्रा महाकाली का स्तवन किया था।

तत्पश्चात् फिर ''दक्ष प्रजापति'' ने चिरकाल तक भगवती का तप किया था। वे तप में रत रहते हुए बहुत प्रकार के नियमों से सुन्दर व्रतधारी होकर देवी की अराधना में निरन्तर हो गये थे। हे मुनिसत्तमो! फिर नियमों में युक्त महाकाली का यजन करने वाले दक्ष–प्रजापति के

समक्ष में ''महाकालिका'' प्रत्यक्ष हुई थी। इसके अनन्तर प्रजापति दक्ष प्रत्यक्ष रूप में जगन्मयी महामाया का दर्शन प्राप्त करके अपने आप को कृत्कृत्य अर्थात् पूर्णतया सफल मानने लगा था।

जब वो भगवती की आराधना कर रहे थे तब भगवती महाकाली ने प्रत्यक्ष होकर पूछा–''हे दक्ष ! आपकी अत्यधिक भक्ति से मैं बहुत प्रसन्न हूं, अब तुम वरदान को धारण कर लो, जो भी तुम्हारी कामना है उसे अभी इसी वक्त प्राप्त करो।''

श्री दक्ष ने कहा–''हे जगन्मयी ! हे महामते !! यदि आप मुझे वरदान देना चाहती हैं तो आप स्वयं मेरी पुत्री होकर भगवान शंकर की अब पत्नी बन जायें, क्योंकि दानव ''ताड़कासुर'' के अत्याचार से देवताओं में हाहाकार मचा हुआ है। जब आप भगवान शंकर की पत्नी बनेंगी तब आपके द्वारा उत्पन्न किए पुत्र से ही उस महा भयंकर मायावी का वध हो सकेगा, यह उन्हें ब्रह्मा जी का ''वरदान'' है। अतः हे भगवती उन देवताओं के कष्ट को दूर करें, जो अनादि काल में आपको जन्म लेने की तपस्या में बैठे हुए हैं।''

''इसलिए हे देवी ! यह वर केवल मेरा ही नहीं है, अपितु समस्त जगत का है। हे प्रजेश्वरी ! यह वर ''लोकों के ईश'' ब्रह्मा जी का है तथा भगवान विष्णु का है और भगवान शिव का भी है।''

तब देवी ने कहा–''हे प्रजापते ! मैं आपकी पुत्री होकर जन्म अति शीघ्र लूंगी, और जब तुम मेरा अनादर कर दोगे, तब मैं अपने शरीर को त्याग दूंगी।''

मार्कण्डेय मुनि ने कहा–इस प्रकार से दक्ष प्रजापति को महामाया काली ने वर धारण करवा कर अन्तर्ध्यान हो गयीं। तत्पश्चात कुछ समय बाद दक्ष की पत्नी ''वीरणी'' के गर्भ से महाकाली उत्पन्न हुई, जिसका नाम–''सती'' पड़ा। तत्पश्चात् ''भगवान कार्तिकेय'' (सती पुत्र) के द्वारा ''ताड़कासुर'' का वध हुआ और जब महाकाली का अपमान ''सती'' के रूप में दक्ष ने अपने यज्ञस्थल में किया, तब भगवती ने अपने दिए हुए वर के अनुसार ब्रह्माग्नि उत्पन्न कर भस्म होकर शरीर को त्याग दिया।

दूसरा भाग

माता काली तत्व व रहस्य खण्ड

आद्या शक्ति की "कालिका" नाम क्यों पड़ा?

देवी आद्या शक्ति का "कालिका नाम" क्यों पड़ा ? इसका स्पष्टी-करण करते हुए कहा गया है कि पार्वती के "शरीर-कोष" में से एक "शिखा" निकली जिसके कारण "देवी" "कृष्ण वर्ण" की हो गयी और "कालिका" नाम पड़ा।

श्री काली के आविर्भाव के उद्देश्य का प्रतिपादन करते हुए "मार्कण्डेय पुराण" में कहा गया है कि देवी नित्य है, परन्तु देवताओं की कार्य सिद्धि के लिए विशेष रूप ग्रहण करके इस लोक में अवतीर्ण होती है। इनका आद्या शक्ति महामाया के नाम से गुणगान किया जाता है। "दशा महाविद्याओं" में सबसे पहला नाम "काली" का ही आता है। शिव की तरह काली की मूर्तियों के भी आठ भेद हैं। परन्तु "दक्षिणी"-अधिक प्रसिद्ध है।

काली का रूप भयंकर है। उसके हाथों में खड्ग और नरमुण्ड है। रक्तधारा का प्रवाह, श्मशान में निवास, जलती चिता, उसकी वाह्याकृति में ध्वंस और प्रलय के दर्शन होते हैं। यह उनके-"श्मशानाजय वासिनी" "शवासना" शवरूप आदि नामों से ही विदित होता है

"मुण्डकोपनिषद-1-2-4"-में भी लिखा है-

काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा। स्फुलिलिङ्गी विश्वरूचि च देवी लेलीयमाना इति सप्त जिह्वा।।

अर्थात्-काली अत्यन्त उग्र मन के समान चंचल, लाली युक्त,

धूम्र वर्ण चिंगारियों से युक्त देदीप्यमान, विश्व रूचि यह लपलपाती सात जिह्वायें अग्नि की हैं।

काल का तत्व ज्ञान करने के लिए यह रूप आवश्यक है, क्योंकि काली का सम्बन्ध ''काल'' से है। काली वह है जो काल पर प्रतिष्ठित है। शास्त्र भी इसका अनुमोदन करते हुए कहता है–

''कालो हि जगदाधारः''

अर्थात् वह ''काल'' जगत का आधार है।

''काल'' का दूसरा नाम रुद्र अथवा सदाशिव है। रुद्र उग्रता के प्रतीक और ध्वंस के देवता हैं। शास्त्रों ने काल की परिभाषा करते हुए कहा है–

''जो सर्वभूतों का नाश करता है वह काल कहलाता है। वह काल ही नहीं ''महाकाल'' कहलाता है। ''काली तत्व'' का विवेचन करते हुए बताया गया है कि वह काल तत्व पर प्रतिष्ठित रहती है।''

''महाकाली'' को पुराणों में इस प्रकार चित्रित किया गया है कि महाकाल भूमि पर लेटे हुए हैं और वे उनकी छाती पर खड़ी अट्टहास कर रही है। यों पति की छाती पर पत्नी का खड़ा होना अटपटा सा लगता है। पर पहेलियों में यह अटपटापन जहां कोतुहल वर्द्धक एवं मनोरंजक होता है वहीं ज्ञान वर्द्धक भी। कबीर की ''उलटबांसी'' और खुसरों की ''मुकरनी'' पहेलियों के रूप में सामने आती है और अपना रहस्य जानने के लिए बुद्धिमता को चुनौती देती है। भूमि पर लेटे हुए शिव की छाती पर काली का खड़े होकर अट्टहास करना, घटना के रूप में घटित हुआ था या नहीं, इस झंझट में पड़ने की अपेक्षा हमें उसमें सन्निहित मर्म और तथ्य को समझाने का प्रयत्न करना चाहिए।

ध्वंस एवं आपत्ति धर्म है–सृजन सनातन प्रक्रिया। इसलिए ध्वंस को रुकना पड़ता है, थककर लेट जाना और सो जाना पड़ता है। तब ''सृजन'' को दुहरा काम करना पड़ता है। एक तो स्वभाविक सृष्टि संचालन की रचनात्मक प्रक्रिया का सञ्चालन, दूसरे ध्वंस के कारण हुई विशेष क्षति की विशेष पूर्ति का आयोजन। उस दुहरी उपयोगिता के कारण ध्वंस के देवता महाकाल की अपेक्षा स्वभावतः सृजन की देवी महाकाली का महत्व बहुत अधिक बढ़ जाता है। शिव जब सोये पड़े होते हैं तब शक्ति रहती हैं, शिव पीछे पड़ जाते हैं ''शक्ति'' आगे आती है। शिव सोये रहते हैं और शक्ति जागृत रहती है। शिव का महत्व घट जाता है और शक्ति की ''गतिशीलता'' पूजी जाती है। महाकाल की छाती पर खड़े होकर महाकाली का अट्टहास करना इसी तथ्य का आलंकारिक चित्रण है।

काली का ''श्याम वर्ण'' क्यों ?

श्याम वर्ण तमोगुण का प्रतीक है। ध्वंस के सभी चिन्ह उसमें

दिखायी देते हैं। मृत्यु का रंग भी काला दिखाया गया है। मृत्यु के देवता यमराज का शरीर भी श्याम वर्ण से चित्रित किया गया है। काले रंग की यह विशेषता है कि उस पर कोई दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता, और काला रंग किसी वस्तु पर चढ़ जाता है तो वह उतरता भी नहीं। इसमें सभी तरह के रंग समा जाते हैं और वह सभी पर अपना प्रभुत्व रखता है। प्रलय की स्थिति में सारा जगत उसमें समा जाता है परन्तु इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता।

ऋग्वेद १२/१६७/४७–में सूर्य को ''कृष्ण'' कहा गया है। ऋग्वेद–१/३५/२–में पृथ्वी को भी ''कृष्ण वर्ण'' कहा गया है। वेदों में आकर्षण शक्ति से युक्त वस्तु को भी ''कृष्ण'' कहा गया है। संसार में सबसे अधिक आकर्षण शक्ति सूर्य में होती है, इसलिए इसे ''कृष्ण'' कहा गया।

जिन ग्रहों को सूर्य संचलित करता है, उनको भी ''कृष्ण'' (काल) कहा गया है, क्योंकि उसमें भी आकर्षण शक्ति होती है। यदि उनमें यह शक्ति न होती तो वह नियम वद्ध रूप से सूर्य के चारों ओर न घूमते रहते। सूर्य उन्हें अपनी ओर खींच लेता और भस्म कर देता, इसलिए पृथ्वी को भी कृष्ण (काला) कहा जाता है।

बाह्य जगत में पृथ्वी, सूर्य और उनके ग्रहादि विश्व की महान शक्ति के द्योतक हैं। अतः काली का यह ''कृष्ण वर्ण'' शक्ति प्रतिष्ठा को चित्रित करता है। कहते हैं, सृष्टि के पहले चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार था। यह स्थिति भी काली की ही है और यही महाकाली के काले रंग का होने का रहस्यात्मक चित्रण है।

अनेक विद्वानों ने माता महाकाली को ''नीलवर्णा'' भी कहा है। यह वर्ण शरीरस्थ सभी वर्णों से अव्याप्त है। वर्ण का अभिप्राय गुण से है, यदि कोई वर्ण निश्चित वर्णों से भिन्न है तो वह अवर्ण समझा जायेगा। जब वर्ण नहीं तो गुण भी नहीं। अभिप्राय हुआ कि भगवती गुणों के परे अर्थात् ''निर्गुण'' हैं, काले वर्ण का तात्पर्य भगवती का गुणातीत होना ही होगा।

''नील वर्ण'' भी काले वर्ण के समान ही है। भगवान के सभी अवतार काले या नीले वर्ण के ही हुए हैं। आकाश का वर्ण नीला है, जिसे ''खं ब्रह्म'' कहते हैं। इस प्रकार दृश्यमान आकाश रूपी ब्रह्म का वर्ण नीला प्रत्यक्ष दिखाई देता है।

''महानिर्वाह तन्त्र'' में कहा है–

श्वेतपीतादिको वर्णो यथा कृष्णे विलीयते।
प्रविशन्ति तथा काल्यां सर्वभूतानि शैलजे।।

अतस्तस्याः कालशक्ते र्निगुणायाः निराकृते।
हितायाः प्राप्तयोगानां वर्णः कृष्णो निरूपितः।।

हिन्दी अनुवाद–''जैसे सफ़ेद, पीले आदि वर्ण काले वर्ण (रंग) में विलीन हो जाते हैं, वैसे ही सब प्राणी, भगवती काली में लीन हो जाते हैं। इसीलिए ''काल शक्ति'' का रूप निर्गुन और निराकार भवती के योगियों के हितार्थ कृष्ण वर्ण निरूपित हुआ है।''

माता काली और महाकाल का रहस्य

पाठको ! ''काल'' क्या है? ''काली'' क्या? इस विषय में भी कुछ भ्रान्तियां हैं। कोई काल को ''समय का बोधक'' या पर्याय मानते हैं तो कोई उसे ''मृत्यु'' समझते हैं। किसी के मत में काल ''रुद्र'' है तो किसी के मत में सूर्य, चन्द्र, मेघ दिवस या रात्रि है। संवत्सर, ऋतु, मास, पक्ष, सप्ताह तथा दिवस का बोध कराने वाला भी ''काल'' ही है।

वस्तुतः ''काल'' में वह सभी निहित है जो संसार को गतिशील बनाए रखता है, क्योंकि काल चक्र के समान सदा गतिशील रहता है, वह कभी रुकता नहीं। उसका कभी कोई तिरस्कार नहीं कर सकता। अनेक विद्वानों के मत में ''काली की छाया ही काल है।'' काली स्पन्दन करती है तो काल में गति आती है। काली थिरकती है तो काल की गति में वेग उत्पन्न हो जाता है।

काली काल की शक्ति है, काली ने अपनी शक्ति द्वारा माया की रचना की। काल जब अधिक सामर्थ्यवान हो जाता है तो उसे ''महाकाल'' कहते हैं। वह महाकाल ही प्रलय काल में इस संसार का संहार करता है। जब वह सुषुप्ति से जागता है तो काली के संकेत पर सृष्टि की रचना करता है। वही संसार के पालन में समर्थ है। काल के बिना कहीं कुछ नहीं हो सकता। भूत, भविष्य, वर्तमान का प्रेरक होने से काल और काली ही जगत का सर्वेसर्वा है। संसार की समस्त क्रियाएं काल पर ही आधारित हैं, इसलिए काली की इच्छा से काल (रुद्र) को ही परम देव महादेव माना गया है। वह सभी लोकों के विजेता हैं। देवयान और पितृयान का संचालक भी वही हैं। इसलिए प्राणियों के कर्मों का फल भी ''काल'' (रुद्र) के अधीन है।

जब काल की ऐसी महिमा है, तब उसका उद्भव करने वाली तथा प्रेरणा दायिनी भगवती काली की महिमा तो उससे भी अधिक होनी चाहिए। संक्षेप में काली ही मृत्युलोक, परलोक आदि सभी का नियंत्रण करती हैं।

महाकाल की विशेषता के विषय में कहा गया है कि उनका स्थान ''श्मशान'' में है। जहां पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि, और अहंकार का जहां लय होता हो, वही श्मशान है तथा ''महाकाल'' वहीं रहते हैं।

अनेक आचार्य महाकाल को ''दिगम्बर'' या वस्त्र रहित कहते हैं। ''अम्बर'' का अर्थ–वस्त्र या आवरण है। आवरण माया का भी हो सकता है और विकार का भी। महाकाल को न तो माया ही व्याप्त होती है और न ही विकार ही प्रभावित करते हैं। इस प्रकार महाकाल माया रहित और विकार रहित हैं, यही उनका ''दिगम्बर वेष'' है।

वे अपने हाथों में डमरू,खप्पर, त्रिशूल, खड़ग धारण किये हुए बताये जाते हैं–

''डमरू'' का अर्थ है ''अनहद नाद करने वाला'' वह नाद ही संसार को अपने वश में रखता है। ''नाद'' को अनेक ज्ञानी जन ''ब्रह्म'' कहते हैं। इसलिए योगीजन ब्रह्म की प्राप्ति के लिए ''नाद'' का अभ्यास करते हैं। जब वह अभ्यास सिद्ध होता है, तब ''ज्योति स्वरूप परमात्मा'' का नाद रूप में साक्षातकार होता है।

''खप्पर'' का अर्थ है–''अन्न भंडार''। प्राणियों को महाकाल की कृपा से ही अन्नों की प्राप्ति होती है। कुछ विद्वानों के मत में ''खप्पर'' रजोगुण को सतोगुण में लय करने का प्रतीक है। अनेक विद्वान इसे जगत के स्थिति काल में पालन करने वाला मानते हैं।

''त्रिशूल'' का अभिप्राय है– त्रिताप को नष्ट करने का साधन। ''ताप'' तीन प्रकार के माने गये हैं– भौतिक, दैहिक और दैविक। ये ताप प्राणियों को संकट में डाल देते हैं, परन्तु ''त्रिशूल धारण'' उन तापों से बचाने का प्रतीक है।

''खड्ग'' का अभिप्राय–छिन्न करने वाले साधन से है। अज्ञान का नाश होने पर ही प्राणी अपने उत्कर्ष की ओर प्रवृत्त हो सकता है खड्ग अज्ञान नाशक साधन का प्रतीक है, वह साधुओं के परित्राण और दुष्कर्मियों के विनाश की द्योतक है।

अब काली के ''रूप विन्यास'' पर ध्यान कीजिए–

भगवती को भी विद्वान ''श्मशान वासिनी'' कहते हैं। ''कल्पद्रुम'' में श्मशान का शब्दार्थ इस प्रकार किया गया है–

''श'' शब्देन शवः प्रोक्तः शानं शयनमुच्यते।
निर्वचन्ति श्मशानार्थं मुनि शब्दार्थ कोविदाः।।
महान्त्यपि च भूतानि प्रलये समुपस्थिते।
शेरतेऽत्र शवा भूत्वा श्मशानस्तु ततो भवेत्।।

हिन्दी अनुवाद–''श'' शब्द से ''शव'' और ''शान'' शब्द र

''शयन'' कहा जाता है। इस प्रकार ''शव'' जहां शयन करे, उस स्थान को मुनिजन और विद्वान–''श्मशान'' कहते हैं। जहां पंचभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) का लय होता हो और प्राणी शव (मुर्दा) रूप हो जाय वह श्मशान होता है।

यदि उपासक अपने हृदय में भगवती के निवास की इच्छा करता हो तो उसे अपने हृदय को राग द्वेश आदि समस्त विकारों से रहित (श्मशान के समान) बना लेना चाहिए। क्योंकि हृदय में राग–द्वेश आदि उपस्थित रहते हुए भगवती का ध्यान ठीक प्रकार से कभी हो ही नहीं सकता और ध्यान के ठीक प्रकार से न होने पर भगवती की कृपा भी प्राप्त नहीं हो सकती। यही बात भगवती कृपा ने गीता में भी कहा है– ''गुणेभ्यश्य परंवेत्ति मदभावं सोऽधि गच्छति।''

''कालीकर्पूर स्तव'' के अनुसार–

शिवाभिर्घोराभिः शर्वान् वह मुण्डास्थि निकरैः।
परं संकीर्णायां प्रकटित चितायां हर वधूम्।।

वह श्मशान है जहां घोर शिवा (शृंगाल) कंकाल, शवमुण्ड, अस्थि आदि के ढेर पड़े हैं।

प्रज्ज्वलित चिता का अभिप्राय है– प्रज्ज्वलित चिता का अभिप्राय लक्षण से चित् शक्ति ही सम्भव है।

भवगती महाकाली के आसन

''महाकाल'' रूप–आसन पर भगवती विराजमान रहती हैं और ''शव'' उनकी शय्या है। भक्तो ! वह महाकाल ही महाप्रेत कहा गया है। चिद्रब्रह्म की स्वरूपावस्था गुणों और विकारों से रहित है। अर्थात् भगवती जहां विराजमान रहती हैं, वहां गुणों और विकारों का अभाव रहता है। इस कारण भगवती स्वयं भी निर्गुण और निर्विकार रहती है। किन्तु ''सर्गकाल'' उपस्थित होने पर अगुण से सगुण हो जाती हैं।

माता महाकाली के श्मशान निवास का रहस्य

विद्वानों ने भगवती के श्मशान निवास के रहस्य के बारे में कहा है कि जब महाकाल से महाकाली पृथक् होती है, तब महाकाली रूप प्राण के निकल जाने पर महाकाल ''शव'' के समान हो जाता है। ''शिव शब्द'' के आरम्भ में जो इकार (ि) है, वह शक्ति का बोधक है।

शक्ति से शिव पृथक् होते ही, इकार हट जाता है और ''शव'' शेष रह जाता है। इसी कारण ''शंकर भगवत्पाद'' का कथन–''शिव–शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभावितु''–युक्त–युक्त है, जिसका अर्थ है कि शिव शक्ति से सम्पन्न होकर ही सृष्टि की रचना में समर्थ है।

''भगवत्पाद'' ने–''न चेद्देवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि''–कहकर यह भी स्पष्ट कर दिया है कि ''शिव शक्ति से सम्पन्न न रहने पर वे देव स्पन्दन (हिलने–डुलने) के योग्य भी नहीं रहते। इस कथन से भी शिव का शववत् होना ही सिद्ध होता है।''

माता महाकाली के मस्तक पर चन्द्रमा का रहस्य

भक्तो ! भगवती महाकाली को ''शशिशेखरा'' भी कहा गया है–अर्थात्–मस्तक पर चन्द्रमा धारण करने वाली। शिव को भी ''शशि शेखर'' कहा गया है।

''महानिर्वाण तन्त्र'' के मतानुसार–

नित्यायाः काल रूपाया अव्यायाः शिवात्मनः।
अमृत्वाल्लाटेऽस्याः शशिविहनं निरूपितम्।।

अर्थात्–''नित्य स्वरूपा एवं काल रूपा, अविनाशिनी शिवा या कल्याणात्मिका भगवती से ललाट पर अमृतत्व का बोध कराने वाली चन्द्रमा का चिन्ह निरूपित है।''

इससे अमृतत्व का बोध होता है, वह भगवती की अव्यया शक्ति के प्रतिपादन में पर्याप्त है। अमृतत्व से नित्य अविनाशी ब्रह्म का बोध होता है, जिसके विषय में भगवती स्वयं ही–''अहं ब्रह्म स्वरूपिणी''–कहती हैं। इस प्रकार भगवती सदा ही विद्यमान रहने वाली होने के कारण नित्या कही जाती है।

''केश रहित'' माता महाकाली का रहस्य

''मुक्तकेशी'' अर्थात्–केश रहित। इसका अभिप्राय यह नहीं कि भगवती के सिर में केश नहीं है। वरन केशों में अस्थि का विकार मानते हैं। इसलिए केश रहित कहने का अभिप्राय विकार रहित ही है। इसलिए यह सिद्ध होता है कि भगवती निर्विकार ही हैं।

''केश'' के तीन अक्षर हैं–क+अ+ईश। इनमें–''क'' का अर्थ

"ब्रह्मा अथवा ब्रह्म," "अ" का अर्थ विष्णु और "ईस" का अर्थ–ईश्वर अर्थात् "शिव"। इस प्रकार से "केश" का अर्थ हुआ ब्रह्मा विष्णु और शिव अर्थात्–"सत्–रज–तम" के अधिपति। इनसे मुक्त रहने का अभिप्राय है–सत्वादि तीनों गुणों से रहित रहना। इससे सिद्ध हुआ कि भगवती–"त्रिगुणातीत" है।

"तमोगुण" की तो बात ही क्या भगवती "रजोगुण" से भी बाधा को प्राप्त नहीं होती। "योग कुण्ड उपनिषद" में लिखा है–

ब्रह्मग्रन्थि ततो भित्वा रजोगुण समुद्भवाम्।
सुषुम्ना शीघ्र विद्युल्लखेव संस्फुरेत्।।

हिन्दी अनुवाद–यह "शक्ति" (कुण्डलिनी) रजोगुण से उत्पन्न ब्रह्म ग्रन्थि को भेदन कर सुषुम्ना के भीतर विद्युत की रेखा के समान चढ़ती है, इस प्रकार भगवती रजोगुण और तमोगुण दोनों से परे हैं, ही तमोगुण से मुक्त रहने के कारण "गुणातीत" ही हैं।

माता महाकाली "तीन नेत्रों" का रहस्य

भक्तो ! भगवती काली "त्रिनेत्रा" कहलाती है, जिसका अभिप्राय कि वे तीन नयन वाली हैं। जैसे शिव को "त्रिनेत्र" कहा है वैसे ही ये मातेश्वरी भी "त्रिनयना" हैं।

महानिर्वाण तंत्र के अनुसार–

शशिसूर्याग्नि भिर्नेत्ररखिलं कालिका जगत्।
सम्पश्यति यतस्तस्मात्कल्पितं नयत्र त्रियम।।

अर्थात्–चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि यह तीनों काली के नेत्र हैं। उन नेत्रों के द्वारा यह भगवती अलि प्रकार से सम्पूर्ण जगत को देखती हैं, इसलिए इनके तीन नेत्र कल्पित किये गये हैं

तीन नेत्र कहने का अभिप्राय यह भी है कि प्राणियों के दो नेत्र होते हैं, वे तो अज्ञान के आवरण से आवृत्त होने के कारण देहाभिमान से ही सम्बन्धित रहते हैं, परन्तु जब भगवती की कृपा से उनका तीसरा ज्ञान नेत्र खुल जाता है, तब वह भौतिक समृद्धि को तुच्छ मानकर अपने को "ब्रह्म" होने का अनुभव करता है। इस विषय में श्री शंकर भगवत्पाद ने बहुत स्पष्ट कहा है–

स्वदेहोद्द भूतभिर्घृणि रनिमाऽऽद्या भिरभितो,
निषेब्ये नित्ये त्वामह मिति तदा भावयति यः।

किमाश्चर्य तस्य त्रिनयन समृद्धि तृणयतो,
महा संवर्तग्नि र्विरचयति निराजन विधिम्।।

अर्थात्–हे निषेब्ये ! (सेवा के योग्य) हे नित्ये ! अपने देह से निर्गत होने वाल अणिमादि सिद्धि स्वरूपा रश्मियों से घिरा हुआ तुम्हारा जो भक्त सदैव "अहम" (जो तुम हो वह मैं हूँ) ऐसी भावना रखता है, वह यदि त्रिनेत्र (शिव) की समृद्धि को भी तृणवत् तुच्छ समझे और उस उपासक की संवर्तग्नि (प्रलयाग्नि) आरती उतारे तो क्या आश्चर्य है ?

उक्त श्लोक का सीधा सा अर्थ है कि भगवती में और अपने में अभेद की भावना रखने वाले के लिए शिव की समृद्धि भी तिनके के समान तुच्छ है। परन्तु वह अभेद भावना तभी सिद्ध होगी, जब साधक का तृतीय ज्ञान नेत्र खुल जायेगा। भगवती की सामर्थ्य और महिमा का ज्ञान जगत में चन्द्र, सूर्य और अग्नि की विद्यमानता से सम्यक प्रकारेण हो जाता है।

"त्रिनेत्रा" कहने का अभिप्राय साक्षी अथवा द्रष्टा मानना भी है। इससे भगवती के सर्वव्यापिका होने का बोध होता है। "कल्पद्रुम" के अनुसार–

त्रिनयनभित्युक्त्वा सर्वज्योति पदार्थानां प्रधान-
भूता चन्द्र सूर्याग्नयः प्रकाश शक्ते राधि क्यात्
तेरे वास्या देव्या नयन त्रित्वेन प्रकल्पितं वस्तुतः
सर्व प्रकाश काना सूर्या दिनां सैवान्तर्या मितया
धिष्टात्री देवता रूपिणी बोध्यम्।

अभिप्राय यह है कि जो तीन नयन कहे गये हैं, वे सभी प्रकाश मान पदार्थों में प्रमुख चन्द्र, सूर्य अग्नि रूपी नेत्र हैं, जो कि प्रकाश शक्ति की अधिकता से इच्छा शक्ति, और ज्ञान शक्ति के प्रतीक होते हैं। यह ब्रह्म के द्योतक हैं, क्योंकि यह तीनों शक्तियां ब्रह्म ही हैं।

इस प्रकार भगवती महाकाली का ब्रह्म रूपिणी होना भी सिद्ध होता है।

भगवती महाकाली के कानों में "कुण्डल" रूप में लटके दो अवोध बालक के "शवों" का रहस्य

"महाघोर बालव्रतंसा" अर्थात् "महाघोर बालकर्णा भूषण"। निर्बोध बालक के कान का आभूषण कहने का अभिप्राय "निष्काम रूप से आलंकारिका भाषा में स्तुत होने पर प्रसन्न होना।"

इस प्रकार भगवती ऐसे साधकों पर शीघ्र ही प्रसन्न हो जाती है, जो पूजनादि की विधियों को न जानते हुए भी अपने सहज स्वभाव से भगवती की प्रार्थना करते हैं, उन ज्ञानी जनों की अपेक्षा, जो कि वेद–वेदांग एवं पूजनोपचारादि का पूर्ण ज्ञान रखते हुए विधिपूर्वक पूजनादि करते हैं, भगवती सरल हृदय साधकों पर शीघ्र प्रसन्न होती हैं, क्योंकि वेदांगादि के ज्ञानी पुरुष उतना अधिक भक्ति भाव नहीं रख पाते, जितना कि सरल हृदय भक्त रख पाता है।

परमेश्वरी महाकाली के ओष्ठों से रक्त प्रवाहित होने, बाहर निकली दन्त पंक्ति और लपलपाती जिह्वा का रहस्य

भक्तो ! ''सृक्कद्वयगलद्रक्त धारा'' कहने का शब्दार्थ तो तीनों ओष्ठ प्रान्तों से रूधिर की धारा का बहना है।

रक्त से रजोगुण का बोध होता है,, उसका बहना इस तथ्य का सूचक है कि भगवती रजोगुण रहित तथा विशुद्ध सर्वात्मका है। व्याख्याकारों ने इसका अर्थ रजोगुण से रहित अर्थात् ''विरजा'' कहा है।

''प्रकटित रदना''–अर्थात्–दिखायी देने वाली दांतों वाली। अभिप्राय यह है कि भगवती के वे दांत बाहर निकले हुए हैं जो दुष्टों के चर्वण (चबाने) करने में समर्थ हैं।

उनकी लपलपाती जिह्वा–शुभ्र दन्त पंक्ति से दबी कालेपन पर होती है, जिससे रजोगुण और तमोगुण का आभाश मिलता है। शुभ्र दांत सतोगुण के प्रतीक हैं, इसलिए भगवती सतोगुण से रजोगुण और तमोगुण को–

गुण सूचक दंत पंक्त्या रजोगुण सूचक रक्त वर्ण लोल रसनां दशाति। सत्वगुणेन रजस्तमश्य-नाशयति इति भावः।।

अर्थात्–भगवती की दंत पंक्ति स्वप्रकाश युक्त एवं सत्व गुण की सूचक है और लाल जिह्वा रजोगुण की सूचक। इस प्रकार सत्वगुण से रज–तम का नाश होने का भाव है।

महा मातेश्वरी काली के अमृतरूपी दुग्ध प्रवाहित करने वाले उन्नत स्तनों का रहस्य

माता काली को ''पीनोन्नत पयोधरा'' कहा गया है, अर्थात्– ''बड़े और उन्नत स्तनों वाली।''

भक्तो ! माता शिशु को स्तन पिलाकर ही जीवन प्रदान करती हैं। जिसके स्तनों में भरपूर दूध होता है वह बालक का पालन भी सम्यक प्रकार से कर सकती है। जिसके स्तनों में दूध की कमी होती है उसका बालक दुर्बल, कृश, और शाश्वत निस्तेज रहता है।

भगवती के स्तन संसार का पालन करने वाले हैं। वेदों में भी उन्हें अन्न के समान पुष्ट करने वाला माना है। उनसे सभी कामनाओं की सिद्धि होती है।

ऋग्वेद (७/१/१०) के अनुसार–

चस्ते स्तनः शशयुर्यो मयोभूर्यः सुम्नयुः सुहवो चः सुदब।
येन विश्वं पुष्यसि वीर्याणि सरस्वति तमिहधातवे कः।।

अर्थात्–''हे सरस्वती ! तुम्हारा स्तन शक्ति, सुखदायक, पुष्टि दायक मन को पवित्र करने वाला और प्रार्थना के योग्य है। उसे हमें भी प्रदान कीजिए।''

''काली विलास तंत्र'' के अनुसार–भगवती ने कृष्ण को भी ''दुग्धपान'' कराया है। यथा–

श्रृणु पुत्र महाभाग कृष्ण कमल लोचन।
न गव्य स्तनुजं पुत्र अमृत नित्य नूतनम्।।
सहस्त्र दल पद्माच्च उद्धृत्य कृष्ण सुन्दर।
पुत्र ब्रह्माण्ड गुप्तं वै अमृतामृत मव्ययम्।।
गंगा सरस्वती रेवा यमुना पुष्करां तथा।
गोलोकं यत्तु हे पुत्र वैकुण्ठं तद्‌दा हृतम्।।
तस्माद् वै कमलात् पुत्र उत्पन्न चामृत द्रवम्।
तेनामृतेन वै पुत्र स्तनं मे परिपूरितम्।।
अमृतं पिव हे पुत्र स्तनं मे परिपूरितम्।
अमृतं पिव हे पुत्र जरा-मरण वर्जितम्।।

इस प्रकार भगवती ने कृष्ण को अपने अमृत रूप दुग्ध का पान कराया। वह दूध कैसा है ? वृद्धावस्था और मृत्यु को भी नष्ट करने वाला। ऐसे स्तन पान का सौभाग्य साधारण प्राणियों को कहां मिल सकता है ?

''त्रिपोनिषद'' में भगवती के स्तनों को सूर्य और चन्द्रमा से उपमित किया है। इसलिए भगवती के स्तन सहज प्रकाश के भी कारण है। इसमें कहा गया है–

चन्मण्डलाद्धा स्तनबिम्ब मेकं,
मुखं चाधस्त्रीणि गुहामदनानि।
कामकलां कामरूपां चिकित्वा,
नरो जायते कामरूपश्य काम्यः।।

अर्थात्–सूर्य चन्द्रमा के मण्डल रूपी स्तन बिम्ब और नीचे की ओर एक मुख इस प्रकार उपलक्षित त्रिपुर सुन्दरी देहमय रूप गुहा में स्थित परमेश्वर की कला काम रूप चित्त शक्ति का ध्यान करके, साधक कामनाओं को प्राप्त करता हुआ अपनी इच्छा के अनुसार ही काम रूपता को प्राप्त होता है।

आनन्द लहरी में भी भगवती के सूर्य, चन्द्र रूपी दो स्तनों की विशेषता स्वीकार की गई है–

मुखं बिन्दुं कत्वा कुचयुगम मधस्तस्य तद्धो,
हराधं ध्यायेद्योहर महिषि ते मन्मथ कलाम्।
स सद्यः संक्षोभं नयति वनिता इत्य तिलधु,
त्रिलोकीमप्याशु भ्रम यति रवीन्दु स्तन युगा।।

अर्थात्–मुख को बिन्दु बनाकर उसके नीचे दोनों स्तनों के दो बिन्दु और बनावें तथा उसके नीचे होकर आधे भाग का ध्यान करें। हे हरमहिषी ! (शिव पत्नी) तुम्हारी काम कला का जो साधक इस प्रकार ध्यान करता है, वह स्त्रियों के चित्त को तुरन्त ही क्षोभ युक्त कर देता है। वस्तुतः यह कार्य तो अति तुच्छ है, क्योंकि सूर्य–चंद्र रूप दो स्तनों वाली भगवती तो त्रिलोकी को भ्रमित करने में असमर्थ हैं।

इस विषय में ''सरस्वती रहस्योपनिषद'' ने भगवती को दूध रूप में सब भागों को देने वाली कहा है–

यद्वाग्व दन्त्य विचेत नानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा।
चतस्त्र ऊर्ज दुदुहे पयांसि क्वस्विदस्याः परमं जगाम।।

अर्थात्–''जिस बाणी स्वरूपा देवी का प्रकट, अप्रकट बाणी वाले

देवादि सभी जीव उच्चारण करते हैं और जो भगवती दुग्ध रूप में पदार्थ प्रदान करने वाली ''कामधेनु'' हैं, मेरी रक्षा करें।''

''शंकर भगवत्पाद'' के मत में तो भगवती के स्तन द्वारा पोषण प्राप्त होने पर साधक असंयमित और उच्छृंखल नहीं हो पाता। उनके अनुसार–

अमृते वक्षोजाव मृत रस माणिक्य कलशौ,
न सन्देह स्पंदो नगपति पताके मनसि भः।
पिबन्तौ तौ यस्मांद विदित वधूसङ्ग भरसौ,
कुमारावद्यापि द्विरद वदन क्रौच दलनौ।।

अर्थात्–''हे नगरपति पताके ! तुम्हारे अमृत रस से परिपूर्ण माणिक्य निर्मित कलशों के समान स्तनों को देखकर मन में सन्देह का स्पन्दन नहीं होता, क्योंकि उनका दूध पीने से स्कन्ध (कार्तिकेय) और गणेश दोनों ही अब तक भी रति प्रसंग से अनभिज्ञ और ''कुमार'' ही बने हुए हैं।''

भगवती पार्वती के स्कन्ध और गणेश दो पुत्र हैं। स्कन्ध देव सेना का नायक होने से शक्ति के प्रतीक हैं और गणेश बुद्धि के देवता होने के कारण विद्या के प्रतीक हैं। इस प्रकार भगवती के दोनों स्तन प्राणियों की शक्ति और बुद्धि दोनों को पुष्ट और परिष्कृत करते हैं। स्कन्ध और गणेश के ''रति क्रीड़ा'' से अनभिज्ञ रहने का तात्पर्य रति क्रीड़ा के अनियमित अयोग से है। इससे दाम्पत्य जीवन में ''संयम'' की आवश्यकता का भी प्रतिपादन हुआ है।

यहां भाव यह है कि माता के वात्सल्य भाव के कारण बालक उछृंखल होने से भी बचे रहते हैं। उनमें अनैतिकता का समावेश नहीं हो पाता और वे स्त्री प्रसंग से तब तक बचे रहते हैं जब तक कि उनकी आयु उस योग्य नहीं हो जाती।

इस प्रकार भगवती को–''पीनोन्नतपयोधरा''–कहने का अभिप्राय भगवती का पालन शक्ति की महत्ता को व्यक्त करना ही है, साथ ही यह है कि भगवती के ''स्तनद्वय'' संसार की रक्षा और समृद्धि में सदैव विद्यमान रहते हैं।

भगवती महाकाली के गले में ''मुण्डमाल'' का रहस्य

उपासको ! ''कण्ठावसक्त मुण्डाली गलद् रुधिर चर्चिता'' का अर्थ हुआ कि भगवती के कंठ में टपकते हुए रक्त वाले मुण्डों की जो

माला पड़ी है, उससे उनका शरीर चर्चित (लिप्त हो) हो रहा है। भगवती दुष्टों और राक्षसों के मुण्डों की माला धारण करती है, किन्तु क्यों ? इसलिए कि उन मुण्डों को देख कर अन्य दुष्कर्मी सचेत हो जाएं और वे दुष्कर्म करना छोड़ दें।

माला में पचास मुण्ड होते हैं। मुण्डों का अर्थ सिर ही नहीं है, वरन् दाने भी हैं। दाने अनेक प्रकार के हो सकते हैं—मणियों के दाने मोतियों के दाने, रुद्राक्ष के दाने, तुलसी आदि के दाने। स्वर और व्यञ्जन रूप भाषा वर्ण भी पचास है।

''कामधेनु तन्त्र'' के अनुसार''—

''मम कण्ठे बीजं पंचाशद्द वर्ण मद्दभुतम''

अर्थात् ''मेरे कण्ठ में पचास अद्भुत ''वर्ण बीज'' स्थित है। ''निरूत्तर तंत्र'' में भी ''पंचाशत वर्ण मण्डली कहकर इसी की पुष्टि की है।''

कुछ विद्वान टपकते हुए रक्त का अभिप्राय रजोगुण बताते हुए भगवती को पचासों प्रकार की सृष्टि उत्पन्न करने वाली मानते हैं, क्योंकि रचना का कार्य रजोगुण द्वारा ही होता है।

भगवती महाकाली के ''दिगम्बरा'' नाम का रहस्य

भक्तो ! ''दिगम्बर'' का अर्थ—''वस्त्र विहीना'' माना जाता है। भगवती महाकाली के वस्त्र ''दिक्'' अर्थात् दिशाएं हैं। दशो दिशाएं ही भगवती के शरीर को ढकती हैं। यह उनके लिए आवरण है।

भगवती चित् शक्ति हैं, उनका स्वरूप माया के द्वारा आच्छादित नहीं है। इसलिए दिगम्बरा कहने का अभिप्राय माया रहित या विकार रहित भी है। जहां लक्ष्य और लक्षण का अभाव हो वहां विकार नहीं रहता—''लक्ष्य लक्षण हीनोऽसि निर्विकारो निरामयः। वस्त्रादि तो विकार रूप ही हैं। आवरण की आवश्यकता प्रायः छिपाने योग्य के लिए होती है। जो स्वयं प्रकाश है, वह कभी किसी आवरण से छिपाने योग्य नहीं। अग्नि को किसी वस्त्र से ढकना चाहें तो वस्त्र को ही भस्म कर डालेगी। इस प्रकार ''दिगम्बरा'' कहने का अभिप्राय भगवती को माया से रहित अथवा ''चिद् ब्रह्म स्वरूपिणी'' सिद्ध करना ही है।

महादेवी महाकाली के बायें हाथ में खड्ग और कटा हुआ सिर धारण करने का रहस्य

''खड्ग'' भगवती के उपरी वाम हस्त में स्थित हैं। इससे यह शंका की जा सकती है कि दांए हाथ में स्थित हथियार अधिक सुविधा जनक होता है। उस पर भी यदि एक ही अस्त्र है तब तो उसे दाएं हाथ में ही होना चाहिए। इसका समाधान यह है कि वह खड्ग किसी धातु से नहीं बनी है। यह तो सहज है, जिसकी प्राप्ति भी स्वयं सिद्ध है। वह न तो किसी ने दी और न कभी उसका निर्माण हुआ। वह बड़े–बड़े पापियों के भी बन्धन काटने वाली है, ज्ञानी जन उसी को ज्ञान कहते हैं। जो साधक कामना रहित होकर भगवती की साधना करते हैं, उनका मोह जाल काटने में यह खड्ग अद्वितीय अस्त्र है।

''योगिनी तंत्र'' के अनुसार–

''पापं पुण्यं पशु'' हत्वा ज्ञान खड़गेण शाम्भवी।

अर्थात् भगवती शिवा ज्ञान रूपी खड़ग को हाथ में लेकर पाप–पुण्य और पशुओं का हनन करती है। ''शिव धर्मोत्तर'' का भी मत है–

तस्मात् ज्ञानासिना तूर्णम शेषं कर्म बन्धनम्।
कामाकाम-कृतं छित्वा शुद्धश्चात्मनि तिष्ठति।।

अर्थात्–''इसलिए ज्ञान रूपी तलवार से कर्म बन्धन के जाल को काटने के लिए काम और अकाम कर्मों को काटकर शुद्ध आत्म रूप में स्थित होना चाहिए।''

''अथर्व वेदद्रोक्त क्षुरिको पनिषद''–ने ''खड़ग'' के स्थान पर छुरी का रूपक प्रयोग किया हैं–

योग निर्मल सारेण क्षुरेणानल वर्चसा।
छिन्देन्नाडी-शतं धीरः प्रभवादिह जन्मनि।।

अर्थात्–''धीर पुरुष को इस जन्म में आत्मा के प्रभाव से अग्नि के समान तेजस्वी और योग रूपी स्वच्छ धार वाली छुरी से सब नाड़ियों का छेदन करना चाहिए।''

परन्तु ज्ञान की प्राप्ति उन्हीं को होती है जो सब कामनाओं का त्याग कर भगवती की शरण को प्राप्त होते हैं। जब तक कामना रहेगी तब तक मोक्ष सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। यदि प्राप्त हो भी जाय तो उसमें स्थायित्व का अभाव रहेगा। इसलिए यह ज्ञान निरर्थक है। उसके लिए कठोर संयम की आवश्यकता होती है। संयम में रखने के प्रतीक रूप में ही भगवती का खड्ग धारण करना कहा गया है,

परन्तु वाम अंग में धारण करने के कारण अनिष्ठान सूचक नहीं, वरन् कल्याण सूचक है। उनमें प्रवृत्ति का नहीं निवृति का ही भाव निहित है।

कुछ विद्वानों ने इसका यह अर्थ लगाया कि मोक्ष की प्राप्ति का अधिकार वामाङ्ग से ही मिलता है। कुछ व्यक्तियों ने इसी उद्देश्य से "वाम मार्ग" को चलाया। यद्यपि वाम मार्ग का अर्थ शिव के वाम अर्द्धाङ्ग से सम्बन्धित उपासना ही है, फिर भी उसमें कुछ दोष उपस्थित हो गये और वह मार्ग उस मत के अनुयायियों तक ही सीमित हो गया।

वाम का अभिप्राय "निष्क्रियता" से भी लगाया जाता है। निष्क्रियता अर्थात् निवृत्ति जब कोई कामना शेष नहीं रहती और सभी कामनाओं का त्याग कर दिया जाता है, तब मोक्ष का मार्ग भी सरल हो जाता है। इस प्रकार वाम हाथ में खड़ग का होना ज्ञान रूपी तलवार का होना है। इसी के द्वारा जीवों को मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। इसलिए इसका तात्पर्य भगवती को मोक्ष के देने वाली सिद्ध करना है।

"छिन्न मुण्ड"–अर्थात्–"कटा हुआ सिर", वह भी निचले बायें हाथ में। यह भी एक शंकास्पद स्थिति है, क्योंकि शत्रु का सिर काटकर हाथ में रखे रहने का कोई प्रयोजन नहीं है। काटने के पश्चात् सिर को हाथ में रखना ही कौन चाहेगा?

इसका समाधान यह है कि भगवान का शत्रु या मित्र है ही नहीं उनके लिए तो सभी प्राणी समान हैं। दैत्य या देवता सभी उनकी उपासना करते हैं। इसलिए किसी का भी सिर काटकर हाथ में लिये रहना आलंकारिक भाषा में ही सम्भव है।

अब इसमें "अलंकार" क्या है? इस पर ध्यान दें तो स्पष्ट होगा कि ज्ञान रूपी खड़ग से अज्ञान रूपी शत्रु का मस्तक काटा जाना सम्भव है। जब तक अज्ञान रहता है तब तक प्राणी अपने कर्तव्य को नहीं समझता और न वह अपने जन्म मरण के बन्धनों को काटने के लिए ही कुछ प्रयत्न करता है। किन्तु भगवती के शरण में जाने पर सर्व प्रथम साधक के अज्ञान को ही नष्ट करने का विचार करता है। अज्ञान या ज्ञान मस्तिष्क में रहता है, वह अज्ञान को ज्ञान रूपी खड्ग के बल पर साधक के मस्तिष्क को निकाल देती है और फिर उसे ज्ञान प्रदान करती हैं। इस प्रकार मस्तिष्क में भरा हुआ अज्ञान निकल जाना ही अज्ञान का मस्तक काटना है।

महादेवी के दाहिने हाथों में वर और अभय मुद्राएं धारण करने का रहस्य

"सव्वे चाभीर्वरं च" का अभिप्राय दाहिने हाथों में "वर और

अभय मुद्राओं का धारण करना है। तात्पर्य स्पष्ट है कि साधकों को भगवती वर (अभीष्ट) प्रदान करती और भय से मुक्त करती हैं।''

कुछ विद्वानों के मत में वर और अभय दोनों मुद्राएं सकाम साधकों के लिए हितकर है, क्योंकि निष्काम साधकों को तो न किसी प्रकार की कामना होती है और न भय ही! उन्हें तो वर या अभय कुछ भी नहीं चाहिए। किन्तु अनेक विद्वान यह मानते हैं कि जैसे भगवती सकाम साधकों को अभीष्ट वर देने और उन्हें सभी प्रकार के भयों से मुक्त करने में समर्थ हैं, वैसे ही निष्काम साधकों को मोक्ष रूप वर देती हैं तथा जन्म–मरण के चक्र के भय से मुक्त कर देती है। ''महानिर्वाण तंत्र के अनुसार''–

समये-समये जीव रक्षणं विपदः शिवे।
प्रेरण स्वस्व कार्येषु वरश्चा भय मीरितम्।।

अर्थात्–''समय–समय पर प्राणियों की रक्षा और विपदा में कल्याण तथा सभी का उनके अपने–अपने कार्यों में प्रेरित करना–वर और अभय कहा जाता है।''

देवताओं के द्वारा दो प्रकार का ''अनुग्रह'' किया जाना कहा जाता है 1. वर प्रदान और 2. अभय प्रदान। उनके प्रसन्न मुद्रा में वरद हस्त और अभय हस्त लोक प्रसिद्ध है। साधक की साधना से प्रसन्न होकर वे हाथ उठाकर कामना सिद्धि का जो आश्वासन देते हैं, वह हस्त चालनादि क्रियाएं अभिनय कही जाती हैं। गुरुजन आदि सम्मानीय एवं समर्थ पुरुष भी ऐसा करते हुए देखे जाते हैं। उनकी वे क्रियाएं ही कार्य सिद्धि का विश्वास दिलाती है। परन्तु ''शंकर भगवत्पाद'' भगवती द्वारा वर और अभय प्रदान में अभिनय न करने का प्रतिपादन करते हैं। उनके अनुसार–

त्वदन्यः पाणिभ्या मभय वरदो दैवतागण
स्त्मेका नैवासि प्रकटित वराभीर भिनया।
भयात्त्रातुं दातुं फलमपि च वांछासमधिकं,
शरण्ये लोकानां तब हि चरणावेव निपुणौ।।

अर्थात्–''तुम्हारे अतिरिक्त अन्य सभी देवगण दोनों हाथों के अभिनय से वर प्रदान करते हैं। परन्तु एक तुम ही ऐसी ही जो अभय या वर प्रदान के समय हाथों से अभिनय नहीं करती, अर्थात्–हाथों को न चलाकर चुपचाप साधक की कामना पूर्ति कर देती हो, क्योंकि हे लोकों को शरण देने वाली भगवती ! इच्छित फल प्रदान करने में ''तुम्हारे चरण ही निपुण हैं।''

इस प्रकार ''भगवत्पाद'' भगवती की गति में ही अभय और वर

दोनों का समावेश मानते हैं। ''भय'' का मूल कारण देहाध्यास और संसार में आसक्ति ही है, उसका नष्ट होना भगवती के स्वरूप ज्ञान से ही सम्भव है।

''देव्युपनिषद में''–

''नमामि त्वामहं देवी महा भय विनाशिनीम्''

कहकर महाभयों को भी दूर कर देने वाली प्रतिपादित किया है।

सांसारिक भोगों की कामना अथवा मोक्ष की कामना से जो उपासक भगवती की उपासना करते हैं, उन्हें अभीष्ट प्राप्त होने के विषय में ''सरस्वती रहस्योपनिषद्''– का कथन है–

क्लीं यद्वाग्व दन्त्य विचेत नानि,
राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा।
चतस्त्र उर्जं दुदुहे पयांसि,
क्वंस्विदस्याः परमं जगाम।।

अर्थात्–''जिस वाणी स्वरूपा सरस्वती का उच्चारण प्रकट या अप्रकट वाणी वाले देवगण आदि सभी प्राणी करते हैं तथा जो भगवती सभी अभीष्ट पदार्थों को दुग्ध रूप में प्रदान करने वाली ''कामधेनु'' हैं, वे मेरी रक्षा करें।''

इसी प्रकार भगवती सभी भयों को दूर कर अभय देने वाली तथा समस्त अभिष्टों की पूर्ति कर वर प्रदान करने वाली हैं। इसका अभिप्राय यह है कि वर देना कहने से भोग और मोक्ष दोनों प्रदान करना तथा अभय से आधिभौतिक आधिदैविक और आध्यात्मिक (त्रितापों) से रक्षा करना भगवती के द्वारा ही सम्भव है।

माता महाकाली के भयानक रूप का रहस्य

भक्तो ! माता महाकाली को–''कराल वदना''–भी कहा गया है, जिसका अर्थ–''भयावन रूप'' होता है। जब भगवती सर्ग रचनार्थ लघुतम से महत्तम का रूप धारण करती हैं तब उनके ''विराट् रूप'' को देखकर माया में आवृत प्राणियों का भयभीत होना स्वाभाविक ही है। इसका यह रहस्य है कि देवी का भयावना रूप तो दुष्टों को ही दिखायी देता है, भक्तों और विवेकी पुरुषों को नहीं, क्योंकि भक्त पुरुष तो उनके भयावने रूप में भी अपना कल्याण ही देखते हैं।

''वस्तुतः संसार में सुख–दुख की प्राप्ति ''कर्मानुसार'' ही होती है। मनुष्य अशुभ कर्म करता है तो उसे भय का होना अस्वाभाविक

नहीं है। कोई व्यक्ति किसी की हत्या करता है तो उसे पकड़े जाने का भय सदा लगा रहता है जो लोग भूत–प्रेत में विश्वास करते हैं, उन्हें मृतक का प्रेत का भय सदैव सताता रहता है, इसलिए दुष्कर्म करने वाले को भय रहे तो यह कोई आश्चर्य की बात नही है। अन्यथा भगवती का स्वरूप तो किसी भी रूप में सदा ही भक्तों के लिए कल्याणकारी ही है।''

सरस्वती रहस्योंपनिषद् के अनुसार–

यद्वाग्वदत्य विचेतनानि राष्ट्री देवाना निषसादभन्द्रा।
चतस्त्र ऊर्ज दुदुहे पयांसि क्वस्वि दस्याः परमं जगाम।।

नमामि यामिनी नाथ लेखाऽलंकृत कुन्तलाम्।
भवानी भवसन्ताप निर्वापन सुधानदीम्।।

अर्थात्–''दिव्य भावों को व्यक्त करने वाली, देवताओं को आनन्दित करने वाली अज्ञानियों को ज्ञान प्रदान करने वाली, यज्ञ में विराजमान होने वाली भगवती सब दिशाओं में अन्न–जल का दोहन करती है। जो इस मध्यमा वाणी में श्रेष्ठ है, उनका गमन कहां होता है ? चन्द्रकला से विभूषित केश वाली तथा संसार रूपी बन्धन को काटने वाली सुधामयी नदी स्वरूपा भगवती को मैं नमस्कार करता हूँ।''

''शंकर भगवत्पाद'' भगवती के रूप की शोभा का वर्णन करते हुए ''सौन्दर्य लहरी'' में कहते हैं–

अरालैः स्वाभाव्या दलिकल भस श्री भिरलकैः
परीतं ते वक्त्रं परिहसति पंकेरुह रुचिम्।
दरस्मेरे यस्मिन्द शनरुचि किंजल्क रुचिरे,
सुगन्धि माद्यन्ति स्मरदहन चक्षुर्मधुलिहः।।

अर्थात्–स्वाभाविक घुंघराली और तरुण भ्रमरों की कान्ति के समान अलंकारों से परिपूर्ण तुम्हारा मुख सरसिजों की शोभा की भी हंसी उड़ाता है। जिसमें स्फटिक मणि के समान दांतों से कुछ मुस्कराने पर निकलने वाली सुगन्ध से कामदेव को भस्म करने वाले शिव के नेत्र रूपी भ्रमर मुग्ध हो जाते हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि भगवती का स्वरूप तो पूर्णतया सौम्य–सात्विक है। उसमें काम की उच्छंखला को सहन करने के कारण उसके मन का भाव निहित है। यदि मनन पूर्वक ''कराल वदना''–के अभिप्राय पर ध्यान दें तो यही प्रतीत होता है कि भगवती प्रसन्न मुद्रा में अतीव सुन्दरी और अप्रसन्न मुद्रा में भयावनी प्रतीत होती हैं। उनकी अप्रसन्नता में नाश निहित है।

भगवती सदा भय को नष्ट करने वाली हैं।

माता महाकाली का महाकाल से मिलन और सृष्टि की रचना

भक्तो ! माता महाकाली को–''महाकाल सुरता'' भी कहा गया है। ''महाकाल सुरता'' से अभिप्राय महाकाल से मिलन के पश्चात् सर्ग (सृष्टि)–की रचना करने वाली हैं। ''सुरत'' का अर्थ गार्हस्थ जीवन की दृष्टि से स्पष्ट है, परन्तु भगवती सभी प्रकार के हाव भावों से रहित एवं विकारों से मुक्त हैं, उनके प्रति सुरता का अर्थ–''सर्गोत्पत्ति के लिए उन्मुख होना ही कहा जा सकता है।''

कुछ विद्वान ''सुरता'' का शाब्दिक अर्थ विपरीतता भी लगाते हैं, जिसका अभिप्राय भगवती द्वारा अपनी काल शक्ति को शक्ति से सम्पन्न करना ही है। शक्ति समय के अनुसार–

चिद्व्यापक स्वरूपेण स्वयञ्च विभ्रतीं पराम्।
एतस्मिन्नेव काले तु स्वबिम्ब पश्यति शिवा।।
मद् बिम्ब तु भवेन्माया तत्र मानसिकं शिवम्।
सृष्टे रुत्पा दनार्थ तु भर्तृ रूपं प्रकल्पयेत्।।

अर्थात्–वह भगवती चिद्व्यापक ब्रह्म स्वरूप से स्वप्रकाशित होती हुई सुशोभित रहकर काल में अपने ही बिम्ब को देखती है। वह बिम्ब मानसिक कल्पना से माया रूप होता है तथा सृष्टि के उत्पादनार्थ महाकाल को भर्त्ता (पति) रूप में कल्पित कर सृष्टि रचती है। प्रलय की अवस्था में भगवती ही चिद्व्यापक रूप में स्थित रहती हैं।

उसके बाद जब सर्ग काल (सृष्टि करने का समय) आता है तब–''ब्रह्म एकोऽहं बहुश्याम''– की इच्छा करता है और तब उसी इच्छा शक्ति रूप महादेवी के द्वारा मानसिक ''महाकाल'' उत्पन्न हो जाता है। उसी के साथ मिलकर भगवती सर्ग रचना का कार्य करने लगती है।

देवि ह्वेकाऽग्र, आसीत सैव जगदण्ड मसृजत।
कामकलेति विज्ञायते श्रृंगार कलेति विज्ञायेत।।

अर्थात्–''देवी ने ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति की तथा संसार की उत्पत्ति से पहले वही थी। वही काम कला और श्रृंगार कला के नाम से प्रसिद्ध है।''

''शंकर भगवत्पाद'' ने भी ''महाकाल सुरता'' का प्रति पादन अन्य प्रकार से किया है, यथा–

सुधसिन्धो र्मध्ये सुरविट पिवाटी परिवृते,
मणिद्वीपे नोपोपव नवति चिन्तामणि गृहे।
शिवाऽऽकारे मंचे परमशिवपर्यं कनिलयां,
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्द लहरीम्।।

अर्थात्–"अमृत के सिन्धु के मध्य में कल्पवृक्षों की वाटिका से परिवृत मणिद्वीप में नीम वृक्षों के उपवन के मध्य चिन्ता मणियों से निर्मित घर में शिवाकार (त्रिकोणाकार) मंच पर परम शिव (महाकाल) की शैय्यापर विराज मान हैं। चिदानन्द लहरी स्वरूपिणी ! जो विरले मनुष्य तुम्हारी साधना करते हैं, वे धन्य हैं।"

"महाकाल संहिता" में तो इसका और भी स्पष्ट रूप से प्रतिपादन हुआ है, यथा–

महानिर्गुण रूपा तु वाचातीता परा कला।
क्रीडया शून्य रूपन्तु भर्त्तारञ्च प्रकल्पयेत्।।
सृष्टेरारम्भ कायार्थं छाया दृष्टवा तदा तया।
इच्छाशक्तिस्तु सा जाता तथा काला विनिर्मिता।।

अर्थात्–भगवती महा निपुण स्वरूप, वाणी से परे परम कला रूपिणी हैं। शून्य रूप में क्रीड़ा करती हुई भगवती पति रूप की कल्पना करती हैं। सृष्टि आरम्भ करने के निमित्त विश्व को देखने पर काल के द्वारा इच्छा शक्ति उत्पन्न होती है।

वस्तुतः प्रलयावस्था में भगवती गुणातीत (निर्गुन) होती हैं, उस समय महाकाल भी उन्हीं में लीन हो जाता है तथा एक महाकाली भगवती ही स्थित रहती हैं, किन्तु सर्गकाल उपस्थित होने पर सगुण हो जाती हैं तथा महाकाल से युक्त होकर ही सृष्टि की रचना करती हैं।

"आनन्द लहरी" के अनुसार–

विरंचिः पंचत्वं व्रजति हरिराप्नोति विरतिं,
विनाशं किनासो भजति धनदो याति निर्धनम्।
वितन्द्री माहेन्द्री विततिरपि सम्मीलित हशा,
महासंसारेऽस्मिन्चि हरति सति त्वत्पतिरसौ।।

अर्थात्–"हे सति ! इस महा संसार (प्रलय) काल में ब्रह्मा पंचत्व (मरण) को प्राप्त होता है और विष्णु (विरति को) प्राप्त हो जाते हैं। तन्द्रा रहित सहस्त्र नेत्र वाले महेन्द्र भी अपनी विस्फारित (सर्वत्र देखने वाली) दृष्टि वाले नेत्रों को बन्द कर लेते हैं। परन्तु तुम्हारे पति उस समय भी बिहार करते रहते हैं।

शिव पुराण की वायु संहिता में भी इसका वर्णन स्पष्ट रूप में हुआ है, यथा–

आत्मन्यव स्थितेऽव्यक्ते विकारे प्रतिसंहृते।
साधर्म्येणाधितिष्ठेते प्रधान पुरुषा वुभौ।।"

अर्थात्–"यह सम्पूर्ण जगत आत्मा में स्थित होकर विकार युक्त प्रति संहृत होता है, उस समय यह प्रधान पुरुष (शक्ति और शिव) सामर्थ्य से युक्त होते हैं।"

इस प्रकार शिव–शक्ति ही विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कारण है। उसके वश में देवता, दैत्य, यक्ष, गन्धर्व, मनुष्य आदि सभी रहते हैं। इसलिए महा प्रलय काल में अपनी काल स्वरूपा शक्ति (काली) के सहित वे परब्रह्म शिव (महाकाल) ही जाग्रत रहते हैं तथा सर्ग काल उपस्थित होने पर शक्ति के साथ मिलकर सर्ग रचना करते हैं।

"गन्धर्व तन्त्र" में इसका वर्णन इस प्रकार मिलता है–

यदा सा परमा शक्तिः स्वेच्छया विश्वरूपिणी।
अद्यः कृत्वा तु पुरुषं संग मेच्छाऽभवेत्तदा।।
तदाक्रम्य स्वयं देवी भैरवोपरि संस्थिता।
सहजानन्द सन्दोहै र्निजानन्द प्रवर्द्धिनी।।

अर्थात्–"जब वह परमा शक्ति भगवती स्वेच्छा पूर्वक विश्व रूप धारण करती हैं, तब वह पुरुष को नीचे करके विपरीत होती हैं। इस प्रकार स्वयं भगतवी भैरव (काल) के उपर स्थित होकर, सहज आनन्द में मग्न होकर आनन्द का वर्द्धन करने वाली होती है। (अर्थात् सृष्टि की रचना करती है)"

इस विषय में यही कहना पर्याप्त होगा कि–"एषा शाम्भवी विद्या गुप्ता कुलवधू रिव"–अर्थात्–यह शाम्भवी विद्या कुलवधु के समान गोपनीय है। इसलिए यही समझाना चाहिए कि सृष्टि का रहस्य समझना कोई साधारण कार्य नहीं है।

भगवती महाकाली के "नित्य यौवनावती" होने का रहस्य

भगवती को "नित्य यौवनावती" कहा गया है, जिसका अभिप्राय भगवती का सदैव "युवावस्था" में रहना है। वे न तो "अवयस्का" हैं और न "वृद्धा" ही। अभिप्राय यह है कि उनकी अवस्था में कभी परिवर्तन नहीं होता।

वस्तुतः युवा वस्था में ही कार्य क्षमता अधिक रहती है। बाल्यकाल में ''शक्ति'' की कमी रहती है और युवावस्था के ढलते–ढलते शक्ति की कमी होती जाती है। इसलिए युवा वस्था का महत्व सभी अवस्थाओं में सर्वोपरि है।

''आनन्द लहरी'' के अनुसार

''चिदानन्दा कारं शिव युति भावेन विभृये''।

अर्थात्–तुम ''शिव युवती'' के रूप में सदा चिदानन्दाकार रहती हुई व्यक्त होती हो।

''सुधाराजस्तव'' के अनुसार–

''न वाला न च त्वं वयस्था न वृद्धाः''।

अर्थात्–''तुम न तो वाला हो, न वयस्था, प्रौढ़ा हो और न वृद्धा ही हो।''

निराकार स्वरूपा मातेश्वरी महाकाली

उपासको ! ''तंत्र शास्त्रों ने'' माता महाकाली को ''निराकार'' रूप स्वकीर किया है।

''निर्वाण तन्त्र'' के अनुसार–

अरूपायाः कालिकायाः कालमातु र्महाद्युतेः।
गुणा क्रियानुसारेण क्रियते रूप कल्पना।।

अर्थात्–''यह रूप रहित ''काल माता'' कालिका अत्यन्त प्रकाशमयी हैं। उनके रूप की कल्पना ''गुण क्रिया'' के अनुसार ही की जाती है।''

''कालमाता–'' का अभिप्राय यहां काल की जननी से नहीं, वरन् काल को प्रेरणा देने वाली से है। माता का अर्थ प्रेरणा देने वाली निर्देश देने वाली, पालन करने वाली, अनुशासन में रखने वाली भी होता है।

कुछ आचार्यों ने उसे ''महाकाल'' की छाती पर खड़ा हुआ बताया है और इस प्रकार की अनेक ''प्रतिमाएं'' भी हैं जिनमें महाकाल (शिव) भूमि पर लेटे हुए हैं और महाकाली उनकी छ़ाती पर खड़ी हुई अट्टहास कर रही हैं।

इस प्रकार के चित्रण में एक तथ्य है एक सत्यता है। शिव जब अपना ''संहारात्मक'' रौद्र रूप धारण करते हैं, तब उनके संहार कार्य में काली ही सहायक होती है, परन्तु वह संहार कार्य विद्धंशक न होकर नवनिर्माणकारी हो, इसका ध्यान रखना भी उसी काली शक्ति का कार्य है।

वस्तुतः प्रलय का अर्थ विध्वंशा नहीं ''सुषुप्ति'' है। मनुष्य दिन भर कार्य करते–करते थक जाता है, तब उसे रात्रि में विश्राम की आवश्यकता होती है। सर्ग, स्थिति और प्रलय का अर्थ भी यही है। ''स्थिति'' काल में विद्यमान जगत् प्राणियों को जन्म–मरण रूप फल प्राप्त कराता–कराता थक जाता है तब वह ''सुषुप्ति'' का आश्रय ग्रहण करता है, उस समय जन्म–मरण का चक्र रूक जाता है उस ''भवचक्र'' की अवाध गति रोकने के लिए काली को अपनी शक्ति से काम लेना होता है। उस समय वो ''काल पुरुष'' को बाध्य करती है कि अपनी गति को रोक दे। परन्तु काल की गति रोकना कोई साधारण कार्य तो नहीं, उसे रोकने के लिए काली को जो प्रयत्न करने पड़ते हैं, उनमें अन्तिम प्रयत्न काल की छाती पर खड़े होकर उसे रोके रखना ही है।

और जब सर्ग काल आता है, तब काली उस ''काल पुरुष'' (शिव) की छाती से हट जाती है। काल पुरुष उठकर सर्ग रचनार्थ महा विष्णु (ब्रह्म) रूप धारण कर लेता है और काली महालक्ष्मी रूप ले लेती हैं।

सृष्टि और जगत की क्रियाशक्ति मातेश्वरी महाकाली

उपासको ! माता महा काली ही ''कालानुसार'' क्रिया शक्ति का रूप धारण कर लेती हैं। निम्न श्लोक भी इसी की पुष्टि करता है–

विश्वधात्री त्यजाख्याता शैवी चित्रकृतिः परा।
तामजां लोहितां शुक्लां कृष्णामेकां त्वजां प्रजाम्।।

अर्थात्–''विश्व को उत्पन्न करने वाली प्रकृति ''अज'' है, वही शैवी है, वह रजोगुण वाली होने पर लाल वर्ण की, सत्व गुण वाली होने से श्वेत वर्ण की और तमोगुण वाली होने से काले वर्ण की है।''

इस प्रकार काली ही विविध वर्णों और रूपों को धारण कर लेती हैं।

''परात्रिंशिका'' के अनुसार–

तन्वते संस्कृतिं चित्रां कर्ममायाणु तामयीम्।
अस्याः साम्यं स्वभावेन शुद्ध भैरव तामयम्।।

अर्थात्–''वही कार्मत्व और मायात्वमयी शक्ति इस विचित्र संसार की रचना करती हैं। वह स्वभाव से ही शुद्ध भैरवतामय साम्य से सम्पन्न रहती हैं।''

संसार चक्र की स्थिति अविद्या से और अमृतत्व की उपलब्धि विद्या से होती है और विद्या–अविद्या दोनों के ही अधीश्वर शिव अर्थात् काल पुरुष हैं। वे एक ही परमेश्वर अनेक प्रपंचों को रचते और सब देह धारियों तथा चराचर जगत को रचते हैं। उन्हीं को कोई ''स्वभाव'' कहते और कोई ''काल'' कहते हैं। उन्हीं काल पुरुष के वश में यह विश्व है। इस विषय में आचार्यों का प्रतिपादन है–

''तस्यांशमयी शक्तिः महात्मीनः महात्मनिः''।

अर्थात्–उनकी अंशमयी शक्ति कालात्मा रूप से उसी प्रकार प्रविष्ट हो गयी, जिस प्रकार लोहे में अग्नि प्रविष्ट रहती है।

मायी और माया स्वरूपा शिव और काली

उपासको ! ''श्वेताश्वतर उपनिषद'' ने भगवान शिव को– ''मायी'' और उनकी शक्ति महाकाली को ''माया'' कहा है। यथा–

''माया तु प्रकृतिं विद्यान्मायिन्तु महेश्वरम्।''

अर्थात्–''माया को प्रकृति रूप और मायी (माया के अधिपति) को महेश्वर जानो।''

और वह ''माया'' जब अपने कार्य में लगती हैं, तब ''मायी'' का महत्व घट जाता है। मायी सोता है और माया जाग्रत रहती है। उसका कार्य आवश्यकतानुसार विध्वंसात्मक और निर्माणात्मक होता है। वह स्वभाविक रूप से सृष्टि की रचनात्मक प्रक्रिया का संचालन और ध्वंश के कारण होने वाली विशेष क्षति की पूर्ति का भी आयोजन करती है, इस समय आवश्यक होने पर परब्रह्म को भी अपने वश में कर लेती है। ''मार्कण्डेय पुराण के द्वारा भी इस मत की पुष्टि होती है।''

यथा–

यया त्वया जगत्सृष्टा जगत्राताऽपि योजगत्।
सोऽपि निद्रावंश नीतः कस्त्वां स्तोतु महेश्वरः।।
विष्णुः शरीर ग्रहण महमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वा कः स्तोतुं शक्तिमान भवेत।।

अर्थात्–''जगत की सृष्टि, रक्षा और संहार करने वाले ब्रह्म को भी जो निद्रा के वश में रखने की क्षमता रखती है और ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर ये तीनों ही जिसकी इच्छा से अपना रूप धारण करते हैं, उन महान महिमामयी की स्तुति करने में कौन समर्थ है ?''

इस प्रकार वही शिव–शक्ति त्रिदेव रूपानुसार अपना भी रूप धारण कर लेती है। ब्रह्मा के साथ कार्य करती हैं तब उसका नाम ब्राह्मी और विष्णु की सहायिका होती हैं तब ''वैष्णवी'' और शिव का साथ देती हैं तो–शांकरी (महाकाली) होती हैं। इससे सिद्ध हुआ कि उसी एक देवी के ''तीन नाम'' हैं।

भोग और मोक्ष प्रदान करने में भगवती महाकाली की भूमिका

भक्तो ! भगवती ''भोग और मोक्ष'' दोनों ही प्रदान करती हैं।

''संसार बन्ध हेतुश्च सैव सर्वेश्वरी''।

अर्थात–सर्वेश्वरी भगवती ही संसार रूपी बन्धन की हेतु हैं। क्योंकि–

ज्ञानि नामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादा कृष्य मोंहाय महामाया प्रयच्छति।।

अर्थात्–''वह देवी भगवती ही ज्ञानियों के चित्तों में बलपूर्वक आकर्षण उत्पन्न करके उन्हें माया–मोह (रूप जाल) में डाल देती है।''

इसी प्रकार भगवती ''मोक्ष'' भी देने वाली हैं–

''यथा सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।''

अर्थात्–''जब वह प्रसन्न होती हैं, तब ''वर'' प्रदान करने वाली होकर मोक्ष की कारण भूता बन जाती हैं।'' इसी प्रकार–

''सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतु भूता सनातनी।''

अर्थात–''वह विद्या रूपी भगवती ही सनातन कला से परम मोक्ष की हेतु भूता रही हैं।''

''सितोपनिषदकार'' ने भगवती के विभिन्न क्रिया कलापों का वर्णन करते हुए निम्न मत व्यक्त किया है–

सोमात्मिका ओषधीनां प्रभवति कल्प वृक्ष पुष्पलता,
गुल्मात्मिका औषध भेषजात्मिका अमृत रूपा।
देवानां महस्तोम फलप्रदा अमृतेण तृप्तिं जयन्ती,
देवानामन्नेन पशूनां तृणेन तप्तज्जी वानाम्।।

अर्थात्–''वे भगवती चन्द्ररूपिणी होकर औषधियों को पुष्ट करती है। वे ही कल्पवृक्षलता, गुल्म, पुष्प, पत्र, फल और औषधि महौषधियों के स्वरूप को प्रकट करती हैं। वे अमृत स्वरूपा भगवती ही देवताओं

को महस्तोम यज्ञ का फल प्रदान करती हैं। तृणों के द्वारा तृणजीवियों को अन्न के द्वारा मनुष्यों आदि को तथा अमृत के द्वारा देवताओं को तृप्त करती हैं।''

संसार ''काल'' का ही एक जाग्रत रूप है। यह उसी की गति के अनुसार गतिमान रहती है। काल चक्र के ही समान संसार चक्र भी परिवर्तनशील है। भगवती काली उस गति को अपने ''ताण्डव'' से और भी तीव्र कर देती है। विद्वानों की मान्यता है कि संहार की गति काल प्रदत्त है और काली उस गति को अपने नियंत्रण में रखती है। उसे न तो काल की मन्दगति सहनीय है और न तीव्र गति ही, क्योंकि गति की अनिश्चितता संसार की विभिन्न क्रियाओं में व्यवधान डाल देती हैं। अनावृष्टि, अतिवृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी विपत्तियों का कारण काल की अनिश्चित गति ही है। इसलिए उस गति में एक रूपता आवश्यक होता है भगवती काली के रूप में उत्पन्न दैवी शक्ति उस गति में एक रूपता बनाए रखने में सतत प्रयत्नशील रहती है। हमारे इस मत की पुष्टि ''ऋग्वेद'' के द्वारा होती है, यथा–

यद् देवा अदः सलिले सुसंरब्धा अतिष्ठा।
अत्र वो नृत्यतामिव तीव्ररेणु रपायत।।
यद्देवा यततो यथा भुवान्य पिन्वत।
अत्रा समुद्र आ गूलमहा सूर्यभजभतन्।।

(ऋग्वेद १०/२/२/६/७)

अर्थात्–''देव शक्तियां इस पृथ्वी में अत्यन्त उत्साह में भरकर सलिलाकार दिखायी देने लगीं और नृत्य सा करने लगी जिसके कारण सब ओर तीव्र धूल उड़ने लगी। इस प्रकार उन शक्तियों ने समस्त विश्व को मेघ के समान आच्छादित कर लिया तथा आकाश में छिपे हुए सूर्य को भी प्रकाशित किया।''

माता महाकाली की सात जिह्वाएं का सूक्ष्म रहस्य

भक्तो ! भगवती के काले रंग का उल्लेख रहने से भोले मनुष्य समझते हैं कि वह तमोगुण और अज्ञान का सूचक है, उसमें क्रोध और संहार ही निहित है। किन्तु इस प्रकार समझना भ्रम ही कहा जायेगा। यदि इस विषय को विचार दृष्टि से देखें तो इसमें जो रहस्य छिपा है, वह स्वतः खुल जायेगा और तब कोई शंका नहीं रहेगी।

''मुण्डकोपनिषद''–का मत है–

काली कराली च मनोजवा च
सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा।
स्फुलिंगिनी विश्व रूचिश्च देवी
लेलायमाना इति सप्त जिह्वा।।

अर्थात् ''काली कराल रूप वाली, मन के वेग के समान चंचल, लालिमा युक्त, धूम्र वर्ण वाली चिंगारियों से युक्त, देदीप्यमान और विश्व रुचि नाम की सात जिहवाओं से युक्त है।''

सृष्टि को नियम में रखने के लिए यह ''सात जिहवाएं'' आवश्यक है। ''कराल रूप'' के बिना अनुशासन का पालन नहीं हो पाता। ''भय बिना होय न प्रीति'' के न्यायानुसार यम नियमों के पालनार्थ–''कराल रूप'' से इन्कार नहीं किया जा सकता।

मनोजबा–मन के समान वेग एवं चंचलता से ''गतिशीलता'' का बोध होता है। गति में क्रियाशीलता है। यदि गति नहीं हो तो संसार का कोई भी कार्य नहीं चल सकता। इसलिए भगवती का ''नृत्य परायण'' रहना क्रियाशीलता का ही द्योतक है।

सुलोहिता–अर्थात्–''सुन्दर लालिमा से युक्त'' कहने का अभिप्राय ''श्रृंगारात्मक शोभा'' से है। लालिमा सौभाग्य की भी प्रतीक है, जिसके दो अर्थ हैं– 1. सौभाग्यवती या सौभाग्य दायिनी तथा 2. प्राणियों में रक्त अर्थात जीवनी शक्ति का संचार करने वाली। ये दोनों ही कार्य संसार के लिए बहुत आवश्यक है।

सुधूम्रवर्णा–अर्थात्–धुएं के समान गहरे रंग वाली। भक्तो ! संसार की रचना में सात रंगों का समावेश है। यदि उन सात रंगों को एकत्र मिश्रित कर दिया जाय तो धुंए के समान रंग प्रतीत होगा। इससे सिद्ध होता है कि संसार के सभी वर्ण भगवती के ''कृष्ण वर्ण'' में निहित है।

स्फुलिंगिनी अर्थात् ''चिंगारियों से युक्त''। चिंगारियों का अभिप्राय ज्ञान की किरणों से है। काली में सभी ज्ञान समाविष्ट है और साधक को उसकी साधना के अनुसार उनकी प्राप्ति होती रहती है।

''विश्वरुचि'' का अर्थ है–''संसार को शोभा प्रदान करने वाली अथवा प्रवृत्त करने वाली। प्रवृति भी अत्यन्त आवश्यक है। यदि उसका अर्थ ''शोभा'' रहे तो भी उचित ही है, क्योंकि ''शोभा'' के बिना भी सर्ग (सृष्टि) रचना व्यर्थ ही सिद्ध होगी।''

''लेलायमाना'' अर्थात्–लपलपाती जिह्वावों से युक्त। यह भी गति का ही द्योतक है। इसमें कुछ घोरत्व और तमोगुण की अधिकता प्रदर्शित होती है, जो दुष्कृतियों, पापियों को नष्ट करने में अधिक सहायक है। इस प्रकार काली का यह रूप लोकोपकार में ही प्रवृत्त रहने वाला है और उसकी आवश्यकता किसी भी प्रकार कम नहीं है।

फिर भी यह आवश्यक नहीं कि सभी साधकों को इसी रूप के दर्शन होते हो। गुण क्रिया के अनुसार रूप का निर्मित होना पहले बताया जा चुका है। जिसने भगवती के जिस रूप की उपासना की उसे वही रूप दिखायी दिया, "जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरति देखी तिन तैसी"—का न्याय यहां भी व्यवहार्थ है।

समस्त देवियों, अप्सराओं से भी असंख्य गुणा सुन्दर और सौम्य रूपी महाकाली

माता के उपासको ! विद्वानों का मत है कि—काली के घोर रूप की अभिव्यक्ति तो पापियों दुष्टों आदि को ही होती है, सज्जनों को तो उनका "सौम्य रूप" ही दिखायी देता है। वे उसके "घोरत्व" में भी अघोरत्व के दर्शन करते हैं। कोई भी रूप हो, उसमें दुष्टों के विनाश और सज्जनों की रक्षा का भाव निहित रहता है। इसलिए रूप में घोरत्व (भयंकरत्व) भी आवश्यक होता है। अन्यथा भगवती का यथार्थ स्वरूप तो अत्यन्त सुन्दर, शीतल और शान्त एवं सौम्य है।

"दुर्गा सप्तशती" के अनुसार—

सौम्या सौम्यत राशेषा सौम्येभ्य स्त्वति सुन्दरी।
परा पराणं परमां त्वमेव परमेश्वरी।।

अर्थात्—"हे परमेश्वरी ! तुम सौम्य से भी सौम्यतर तथा सौम्यों में भी अत्यन्त सुन्दरी हो, पर और अपरों में तुम परमा हो।"

"शंकर भगवत्पाद" ने भी भगवती के अत्यन्त सुन्दर होने की पुष्टि की है। वे कहते हैं—

त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरि कन्ये तुलयितु।
कबीन्द्रा कल्पन्ते कथमपि विरंचि प्रभृतयः।।
यदालोकौत्सु क्यादम रललना यान्ति मनसा।
तपोभिर्दुष्प्राप्या मपि गिरिश सायुज्य पदवीम्।।

अर्थात्—"हे गिरि कन्ये ! तुम्हारे सौन्दर्य की तुलना करने के लिए विरंचि प्रभृति "कवीन्द्रगण" भी कुछ कल्पना करते रहते हैं। तुम्हारे सौन्दर्य को देखकर देव ललनाएं भी उत्सुकता वश विचार मग्न हो जाती हैं तथा तपस्या से भी दुष्प्राप्य शिव सायुज्य पदवी को प्राप्त कर लेती हैं।"

इसका अर्थ स्पष्ट है कि देव ललनाएं तथा स्वर्ग की अप्सराएं भी भगवती के समान सौन्दर्य मयी नहीं हैं। इसलिए वे भी उनके अत्यन्त

सुन्दर रूप पर ऐसी मोहित हो जाती हैं कि उसके उस रूप का चिन्तन करते–करते ही उनसे तादात्म्य स्थापित कर लेती हैं। वही तादात्म्य शिव सायुज्य है, जो घोर तपस्या करने वाले योगियों के लिए भी दुःसाध्य है।

माता महाकाली के अनेकों रूप और दक्षिणा महाकाली की महिमा

भक्तो ! भगवती महामाया काली ''आद्याशक्ति'' हैं। यही देवी सृष्टि, स्थिति, प्रलय–इन तीनों के कर्तृ (करने वाली) हैं तथा त्रिभुवन स्वामिनी भी हैं।

इनके अनेक रूप हैं–

1. काली 2. महाकाली 3. भद्र काली 4. मंगला काली 5. दक्षिणा काली 6. श्मशान काली 7. गुह्या काली 8. सिद्धि काली 9. कामकला काली 10. हंश काली 11. जयन्ती काली।

भगवती आद्या काली के दश मुख्य भेद कहे गये हैं–1. काली 2. तारा 3. षोडशी 4. भुवनेश्वरी 5. भैरवी 6. छिन्नमस्तका 7. धूम्रावती 8. बगलामुखी 9. मातंगी, तथा 10. कमलालिका। इसमें ''भगवती काली'' प्रमुख हैं।

भगवती काली के असंख्य ''उपभेद'' हैं, जिनसे आठ उपभेद मुख्य माने गये हैं। 1. चिन्तामणि काली 2. स्पर्शमणि काली 3. सन्तति प्रदा काली 4. सिद्धिदा काली 5. दक्षिणा काली 6. कामकला काली 7. हंश काली 8. गुह्या काली।

इसमें से–महादेवी ''दक्षिणा काली'' की उपासना अधिकतर की जाती है, क्योंकि दक्षिण दिशा में रहने वाला सूर्य का पुत्र ''यम'' भगवती ''दक्षिणा काली'' का नाम सुनते ही भयभीत होकर भाग जाता है अर्थात् वह काली उपासकों को नरक में नहीं ले जा सकता।

देवी के ''दक्षिणा काली'' नाम के सम्बन्ध में अन्य शास्त्रों का मत इस प्रकार है–

1. ''जिस प्रकार कर्म की समाप्ति पर ''दक्षिणा'' फल की सिद्धि देने वाला होती है, उसी प्रकार देवी भी सभी फलों की सिद्धि देती हैं, इसलिए उनका नाम ''दक्षिणा'' है।''

2. काल पुरुष को ''दक्षिण'' कहा गया है तथा शक्ति को ''वामा'' कहा जाता है। वही ''वामा'' जब ''दक्षिण'' पर विजय प्राप्त कर ''महा मोक्ष प्रदायिनी'' बनी, इसी कारण तीनों लोकों में उसे ''दक्षिणा काली'' कहा जाता है।

3. देवी वरदान देने में बड़ी चतुर हैं, इसलिए उन्हें—''दक्षिणा'' कहा जाता है।

4. ''दक्षिणा मूर्ति भैरव ने'' इनकी सर्व प्रथम आराधना की थी, इसी हेतु भगवती का नाम ''दक्षिणा काली'' हैं।

इसी प्रकार भगवती काली के ''दक्षिणा'' नाम की अनेक व्याख्याएं शास्त्रों में वर्णित हैं। जिस साधक को जो व्याख्या रुचिकर लगे, उसी को स्वीकार कर लेना ही हितकर है।

भगवती काली को नर बलि एवं पशु बलि चढ़ाना भयानक अपराध

माता काली के उपासको ! यद्यपि ''तंत्र शास्त्र'' समस्त श्रेष्ठ साधन शास्त्रों में एक बहुत उत्तम शास्त्र है, उसमें अधिकांश बातें सर्वथा अभिनन्दनीय और साधकों को परम सिद्धि—मोक्ष प्रदान कराने वाली हैं, तथापि सुन्दर बगीचे में भी जिस प्रकार असावधानी से कुछ ज़हरीले पौधे उत्पन्न हो जाया करते हैं, और फूलने—फलने भी लगते हैं, इसी प्रकार ''तन्त्र'' में भी बहुत सी अवांछनीय गन्दगी आ गयी है। यह विषयी कामान्ध मनुष्यों और मांसाहारी, मद्यलोलुप अनाचारियों की ही ''काली करतूत'' मालूम होती है, नहीं तो श्रीसीय ऋषिप्रणीत मोक्ष प्रदायक ''पवित्र तंत्र शास्त्र'' में ऐसी बातें कहां से और क्यों आती ?

जिस शास्त्र में अमुक—अमुक जाति की स्त्रियों का नाम ले लेकर व्यभिचार की आज्ञा दी गई हो और उसे धर्म तथा साधन बताया गया हो, जिस शास्त्र में पूजा की पद्धति में बहुत ही गन्दी वस्तुएं पूजा सामग्री के रूप में आवश्यक बतायी गयी हो, जिस शास्त्र के मानने वाले साधक हज़ार स्त्रियों के साथ व्यभिचार को, और अष्टोत्तरशतनर बालकों की बलि को अनुष्ठान की सिद्धि में कारण मानते हों, वह शास्त्र तो सर्वथा ''अशास्त्र'' और शास्त्र के नाम को कलंकित करने वाला ही है।

व्यभिचार की आज्ञा देने वाले तन्त्रों के अवतरण हमने पढ़े हैं, और तन्त्र के नाम पर व्यभिचार और ''नरवलि'' करने वाले मनुष्यों की घृणित गाथाएं विश्वस्त सुत्रों से सुनी है। ऐसे महान तामसिक कार्यों को शास्त्र सम्मत मानकर भलाई की इच्छा से इन्हें करना सर्वथा भ्रम है, भारी भूल है और ऐसी भूल में कोई पड़े हुए हों तो उन्हें तुरन्त ही इससे निकल जाना चाहिए। और जान—बूझकर धर्म के नाम पर व्यभिचार, हिंसा आदि करते हों, उनको तो मां काली का भीषण दण्ड

प्राप्त होगा, तभी उनके होश ठिकाने आवेंगे। दयामयी मां अपनी भूली हुई, सन्तान को क्षमा करें और उसे रास्ते पर लावें, यही प्रार्थना है।

इसके अतिरिक्त ''पञ्चामकार'' के नाम पर भी बड़ा अन्याय अनाचार हुआ तथा अब भी बहुत जगह हो रहा है, उससे भी सतर्कता से बचना चाहिए। बलिदान और मद्य प्रदान भी सर्वथा त्याज्य हैं। माता की जो सन्तान अपनी भलाई के लिए उसी माता की प्यारी भोली-भाली सन्तान की हत्या करके उसके खून से माँ को पूजती है, जो माँ के बच्चों के खून से मां के मन्दिर को अपवित्र और कलंकित करता है, उस पर माँ कैसे प्रसन्न हो सकती है ?

माँ दुर्गा-काली ''जगज्जननी विश्वमाता'' हैं स्वार्थी मनुष्य अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए धन, पुत्र, स्वार्थ, वैभव, सिद्धि या मोक्ष के लिए भ्रम वश निरीह बकरे, भैंसे और अन्यान्य पशु-पक्षियों के गले पर छुरी फेरकर माता से सफलता का वरदान चाहता है, यही कैसी असंगत और असम्भव बात है। निरपराध प्राणियों की नृशंसता पूर्वक हत्या करने कराने वाला कभी सुखी हो सकता है ? उसे कभी शान्ति मिल सकती है ? कदापि नहीं।

दयाहीन मांस लोलुप मनुष्यों ने ही इस प्रकार की प्रथा चलायी है। जिसका शीघ्र ही अन्त हो जाना चाहिए। जो दूसरे निर्दोष प्राणियों की गर्दन काटकर भला मनावेगा, उसका यथार्थ भला कभी नहीं हो सकता। यह बात स्मरण रखनी चाहिए। ख्याल करो। तुम्हें खूंटे से बांधकर यदि कोई मारे या तुम्हारे गले पर छुरी फेरे तो तुम्हें कितना कष्ट होगा ? नन्हीं सी सुई या कांटा चुभ जाने पर ही तिलमिला उठते हो। फिर इस पापी पेट के लिए राक्षसों की भान्ति मांस से जीभ को तृप्त करने के लिए गरीब पशु-पक्षियों को धर्म के नाम पर-अरे, माता के भोग के नाम पर मारते तुम्हें शरम नहीं आती ? मानो उन्हें कोई कष्ट ही नहीं होता ? याद रखो, वे सब तुमसे बदला लेंगे। और तब तुम्हें अपनी करनी पर निरुपाय होकर ''हाय तोबा'' करना पड़ेगा। अतएव सावधान! माता के नाम पर गरीब निरीह पशु-पक्षियों को बलि देना तुरन्त बन्द कर दो, माता के पवित्र मन्दिरों को उसी की प्यारी सन्तान के खून से रंगकर मां के अकृपा भाजन मत बनो।

''बलिदान'' जरूर करो, परन्तु करो अपने स्वार्थ का और अपने दोषों का। माँ के नाम पर माँ की दुखी सन्तान के लिए अपना न्यायोपार्जित धन दान कर धन का बलिदान करो, माँ की दुखी सन्तान का दुःख दूर करने के लिए अपने सारे सुखों की, अपने प्यारे शरीर की भी बलि चढ़ा दो। निष्काम भाव से माँ के चरणों पर अपना सारा धन, जन, बुद्धि, बल, ऐश्वर्य, सत्ता और साधन, उसकी दीन हीन दुखी दलित सन्तान को सुखी करने के लिए। तुम पर माँ की कृपा होगी। माँ के

पुलकित हृदय से जो आर्शीवाद मिलेगा, माँ की गद्गद् वाणी तुम्हें अपने दुखी भाइयों की सेवा करते देखकर जो स्वभाविक वरदान देगी उससे तुम निहाल हो जाओगे। तुम्हारे लोक–परलोक दोनों उत्तम हो जायेंगे। तुम प्रेय और श्रेय दोनों को अनायास पा जाओगे, मां तुम्हें गोद में लेकर तुम्हारा मुख चुमेंगी और फिर तुम कभी, उसकी शीतल सुखद नित्यानन्द मय परम धाममय गोद से नीचे नहीं उतरोगे।

बलिदान करना है तो बलि चढ़ाओ–

काम की क्रोध की, लोभ की, हिंसा की, असत्य की, और इन्द्रिय विषया शक्ति की, मां तुम्हारी इन चीजों को नष्ट कर दे, ऐसी मां से प्रार्थना करो। मां के चरण रज रूपी तीक्ष्ण धार तलवार से इन दुर्गुण रूपी असुरों की बलि चढ़ा दो। अथवा प्रेम की कटारी से ममत्व और अभिमान रूपी राक्षसों की बलि दे दो। तुम कहोगे "फिर माँ के हाथ में "नरमुण्ड" क्यों है ? माँ भैंसे को क्यों मार रही हैं ? क्या वे माँ के बच्चे नहीं है ? उन अपने बच्चों की बलि माँ क्यों स्वीकार करती हैं ? तुम इसका रहस्य नहीं समझते। उनकी बलि दूसरा कोई चढ़ाता नहीं, वे स्वयं आकर बलि चढ़ जाते हैं। अवश्य ही वे भी माँ के बच्चे हैं, परन्तु वे ऐसे दुष्ट हैं कि माँ के दूसरे असंख्य निरपराध बच्चों को दुःख देकर, उनके गले काटकर स्वयं राजा बने रहना चाहते हैं, स्वयं मां लक्ष्मी को भोग्या बनाकर मातृगामी होना चाहते हैं, "मां उमा" से विवाह करना चाहते हैं ऐसे दुष्टों को भी मां मारना नहीं चाहती, शिव को दूत बनाकर उनको समझाने के लिए भेजती। पर जब वे किसी प्रकार नहीं मानते, तब दयापरवश हो उनका उद्धार करने के लिए उनको बलि के लिए आह्वान करती हैं और वे आकर जलती हुई अग्नि में पतङ्ग की भान्ति माँ के चरणों पर चढ़ जाते हैं।"

माँ दूसरे सीधे बालकों को आश्वासन देने और ऐसे दुष्टों को शासन में रखने के लिए ही–"मुण्डमाला" धारण करती हैं। मारकर भी उनका उद्धार करती हैं। इन असुरों की इस बलि के साथ तुम्हारी आज की यह स्वार्थ पूर्ण बकरे और पक्षियों की निर्दयता और कायरता पूर्ण बलि से कोई तुलना नहीं हो सकती। हां, यह तुम्हारा आसुरी–पन राक्षसी–पन अवश्य है। और इसका फल तुम्हें भोगना पड़ेगा। अतएव राक्षस न बनो, माँ की प्यारी, दुलारी सन्तान बनकर उसकी सुखद गोद में चढ़ने का प्रयत्न करो।

राग द्वेश पूर्वक किसी का बुरा करने के लिए माँ की आराधना कभी न करो। याद रखो, मां तुम्हारे कहने से अपनी सन्तान का बुरा नहीं कर सकती। जो दूसरे का बुरा चाहेगा, उसकी अपनी बुराई होगी। स्त्री वशीकरण, मारण, मोहन, उच्चाटन आदि के लिए भी उनको मत

पूजो, उन्हें पूजो दैवी गुणों की उत्पत्ति के लिए सबकी भलाई के लिए अथवा मोक्ष के लिए।

"महाकाल संहिता" में "बलि" शब्द का रहस्य इस प्रकार उपदेशित किया गया है–

सात्विको जीव हत्यां वै कदाचिदपि नाचरेत।
इक्षुदण्डश्च कुष्माण्डं तथा वन्य फलादिकम्।।
क्षीरपिण्डैः शालिचूर्णै पशुं कृत्वा चरेद्बलिम।

हिन्दी अनुवाद–सात्विक अधिकार के उपासक कदापि पशु बलि देकर जीव हत्या नहीं करते, वे ईख, कोहड़ा या वन्य फलों की बलि देते हैं। अथवा खोवा, आटा, या चावल के पिंड का पशु बनाकर बलि देते हैं। यह सब भी रिपुओं के बलिदान का निमित्त मात्र ही है।

"महानिर्वाण तन्त्रानुसार"–

काम क्रोधौ पशु इमावेव मनसा बलिमर्पयेत्।
काम क्रोधौ विघ्नकृतौ बलिं दत्वा जपं चरेत्।।

अर्थात्–काम और क्रोध रूपी दोनों विघ्नकारी पशुवों का बलिदान करके उपासना करनी चाहिए। यही "शास्त्रोक्त बलिदान रहस्य है।"

भगवती से मात्र भक्ति का वरदान मांगो

उपासको ! सच तो यह है, परमात्मरूपिणी माँ की उपासना करके उनसे कुछ भी मत मांगो। ऐसी दयामयी सर्वेश्वरी महाकाली से जो कुछ भी तुम मांगोगे, उसी में ठगा जाओगे। तुम्हारा वास्तविक कल्याण किस बात में है, इस बात को तुम नहीं समझते, माँ समझती हैं। तुम्हारी दृष्टि बहुत ही छोटी सीमा में आबद्ध है। माँ की दूरदृष्टि ही नहीं है, वह ईश्वरीय माता, वह श्री कृष्ण और राम रूपा माता वह दुर्गा, काली, उमा, सीता, राधा, तारा सर्वज्ञ हैं। तुम्हारे लिए जो भविष्य है, उनके लिए सभी वर्तमान है। फिर उनका हृदय दया का समुद्र है। वह दयामयी माता तुम्हारे लिए जो कुछ मंगलमय करेगी– कल्याणकारी होगा, उसी का विधान करेंगे, तुम तो बस निश्चित और निर्भय होकर अबोध शिशु की भान्ति उसका पवित्र आंचल पकड़े उनके वात्सल्य भरे मुख की ओर ताकते रहो।

डरना नहीं, "काली" और "तारा" तुम्हारे लिए भयावनी नहीं हैं, वह भयदायिनी राक्षसों के लिए हैं। भगवान नृसिंह देव हिरण्य कशिपु के लिए भयानक थे, परन्तु प्रहलाद के लिए भयानक नहीं थे। फिर, मातृ रूप तो कैसा भी हो, अपने बच्चों के लिए कभी भयावन

होता ही नहीं, सिंहनी का बच्चा अपनी माँ से कभी नहीं डरता। अतः **उनकी गोद से कभी न हटो,** आश्रय पकड़े रहो।

माँ अपना काम आप करेंगी। मांगोगे, उसी में धोखा खाओगे। पता नहीं, तुम्हें कहीं "राज्य" मिलने की बात सोची जा रही हो और तुम मोहवश "कौड़ी" ही मांग बैठो। असल में तो तुम्हें मांगने की बात याद ही क्यों आनी चाहिए? तुम्हारे मन में अभाव की ही—कमी का बोध क्यों होना चाहिए? जबकि तुम त्रिभुवनेश्वरी अनन्त ऐश्वर्यमयी माँ की दुलारी सन्तान हो। माँ का सारा खजाना तो तुम्हारा ही है। परन्तु तुम्हें खजाने से भी क्यों सरोकार होना चाहिए? छोटा बच्चा खज़ाने और धन—दौलत को नहीं जानता, वह तो जानता है केवल माँ की गोद को, माँ के आंचल को, और माँ के दूध भरे स्तनों को। बस, इससे अधिक उसे और क्या चाहिए?

माँ बहुत ही मूल्यवान् वस्तु देकर भी उसे अपने से अलग करना चाहे, तब भी वह अलग नहीं होगा। वह उस बहुमूल्य वस्तु को भोग और मोक्ष को तृणवत फेंक देगा, परन्तु माँ का पल्ला कभी छोड़ना नहीं चाहेगा। ऐसी हालात में राज राजेश्वरी सर्वलोक महेश्वरि माँ भी उसे कभी नहीं छोड़ सकती। इसके सिवा शिशु सन्तान को और क्या चाहिए? अतएव तुम भी माँ के छोटे भोले—भाले बच्चे बन जाओ।

खबरदार ! कभी माँ के सामने सयाने बनने की कल्पना भी मन में न आने पावे।

"कुण्डलिनी" और "षट चक्रों" की बात भी सब ठीक है, परन्तु वर्तमान समय में "योग साधन" बड़ा कठिन है। उपयुक्त अनुभवी गुरु भी प्रायः नहीं मिलते। इस स्थिति में योग के चक्कर में न पड़कर सरल शिशुपन से, आत्म समर्पण भाव से उपासना करके माँ को स्नेह सूत्र में बांध लो। मां की कृपा से सारी "योग सिद्धियां" तुम्हारे चरणों पर बिना ही बुलाये आ—आकार लोटने लगेंगी। "मुक्ति" तो पीछे—पीछे फिरेगी, इस आशा से कि तुम उसे स्वीकार कर लो, परन्तु तुम माता की सेवा में ही सुख मानने वाले उसकी ओर नज़र उठाकर ताकना भी नहीं चाहोगे।

तुम्हें भी माँ विचित्र—विचित्र लीलाएं दिखलावेंगी—अपनी लील का एक पात्र बना लेंगी। कभी तुम व्रज की गोपी बनोगे तो कर्भ मिथिला की सीता सखी, कभी उमा के सहचरी बनोगे तो कभी म लक्ष्मी की चिरसंगिनी सहेली। कभी सुदामा—श्री राम बनोगे, तो कर्भ लक्ष्मण—हनुमान, कभी वीरभद्र नान्दी बनोगे तो कभी नारद औ सनत्कुमार और कभी चामुण्डा बनोगे तो कभी चण्डिका। मतलब य कि तुम माँ की विश्व मोहिनी लीला में लीला रूप बन जाओगे—फि तुम्हें "मोक्ष" से प्रयोजन ही नहीं रहेगा, क्यों कि मोक्ष का अधिकार ग

माँ की लीला से अलग रहने वाले लोगों को ही है। ''मोक्ष'' तुम्हारे लिए तरसेगा, परन्तु तुमको महेश्वर महेश्वरी का ताण्डव–लास्य, राधे श्याम का नाच–गान देखने से और डमरू ध्वनि या मुरली की मधुर तान सुनने से ही कभी फुरसत नहीं मिलेगी। इससे बढ़कर धन्य जीवन और परम सुख और कौन सा होगा ?

माँ की कृपा से मिलने वाले इस आत्यन्तिक से भी परे के श्रेष्ठतम सुख को छोड़कर जो केवल सांसारिक रूप, धन और यश के फेरे में पड़ा रहता है और उन्हें पाने के लिए ही माँ की अराधना करता है वह तो बड़ा ही भोला है। और वह तो अधम ही है जो इन सुखों के लिए माँ की पूजा के नाम पर पापाचार करता है और दूसरे प्राणियों को पीड़ा पहुंचाकर लाभ उठाना चाहता है।

माता महाकाली के दर्शन का सर्वोत्तम उपाय

माता महाकाली के भक्तो ! माँ के दर्शन का सर्वोत्तम उपाय है– ''दर्शन के लिए व्याकुल होना''। जैसे छोटा बच्चा जब किसी वस्तु में न भूलकर एक मात्र माँ के लिए व्याकुल होकर रोने लगता है, केवल ''माँ–माँ'' पुकारता हो और किसी बात को सुनना ही नहीं चाहता, तब माँ हजार जरूरी कामों को छोड़कर उसके पास दौड़ी आती है और उसके आंसू पोंछकर उसे तुरन्त अपनी गोद में छिपाकर मुंह चूमने लगती है। इसी प्रकार वह परमात्मा रूपी जगद अम्बा माँ काली भी तुम्हारा रोना सुनकर, पुकार सुनकर तुम्हारे पास आए बिना नहीं रहेंगी। अतएव उत्कण्ठित हृदय से व्याकुल होकर रोओ, अपने करूण क्रन्दन से करूणामयी माँ के हृदय को हिला दो पिघला दो। राम, कृष्ण, हरि शंकर दुर्गा, काली, तारा, राधा सीता आदि नामों की निर्मल और ऊंची पुकार से आकाश को गुंजा दो। तब भगवती माँ तुम्हें ज़रूर दर्शन देंगी। करुणापूर्ण ''नाम कीर्तन'' माँ को बुलाने का परम साधन है। समस्त मन्त्रों में यह ''नाममंत्र'' ''मंत्रराज'' है, और इसमें कोई विधि निषेध नहीं है, कोई भय नहीं है। बच्चों के लिए तो यही माँ को बांधे रखने की मजबूत और कोमल रेशम की डोरी है।

माँ के उपदेशों पर ध्यान दो। उनके सारे उपदेश तुम्हारी भलाई के लिए ही है। देवी भागवत में ऐसे बहुत से उपदेश हैं। ''भगवती गीता'' ऐसे उपदेशों का सुन्दर संग्रह है। और न हो तो माँ के ही श्री कृष्ण रूप से उपदिष्ट ''भगवद् गीता'' को माँ के उपदेशों का खज़ाना समझो, उसी को आदर्श बनाओ, उसी के उज्जवल और निर्दोष प्रकाश

के सहारे माँ का अनन्य आश्रय लिए हुए, माँ के नामों का रटन करते हुए माँ को पुकारो, मां की सेवा करो। गीता शक्ति में भगवती की सारी शक्ति निहित है।

श्रद्धा शक्ति को बढ़ाओ, झूठे तर्क न करो, तर्कों से कभी भगवान की प्राप्ति नहीं हो सकती, माता-पिता के लिए तर्क करना उनका अपमान करना है। अतएव तर्क छोड़कर माँ के भक्तों की वाणी पर विश्वास करो और श्रद्धा पूर्वक माँ की सेवा में लगे रहो। इसका यह अर्थ नहीं है कि शुद्ध बुद्धि शक्ति का तिरस्कार करो। जो भगवान में अविश्वास उत्पन्न कराती है वह तो बुद्धि ही नहीं है बुद्धि-शुद्ध बुद्धि तो वही है जिससे परमात्मा का निश्चय होता है और उनके भजन में मन लगता है। ऐसी शुद्ध बुद्धि शक्ति को बढ़ाओ। इस बुद्धि शक्ति को अधिष्ठात्री देवता ''सरस्वती'' जी हैं, बुद्धि के साथ ही माँ की सेवा के लिए धन भी चाहिए-अतएव न्याय पूर्वक सत्य शक्ति का आश्रय लिए हुए धनोपार्जन भी करो, धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी जी हैं। और साथ ही शारीरिक शक्ति का भी विकाश करो, शरीर की अधिष्ठात्री देवी काली जी हैं। अतएव बुद्धि धन और शरीर की रक्षा और स्वस्थता के लिए महाशक्ति के त्रिरूप महासरस्वती महालक्ष्मी और महाकाली की श्रद्धापूर्वक उपासना करो।

मानसिक शक्ति को बढ़ाओ, तुम्हारी मानसिक शक्ति शुद्ध होकर बढ़ जायेगी तो तुम इच्छा मात्र से जगत का बड़ा उपकार कर सकोगे। शारीरिक शक्ति को बढ़ाओ, शरीर बलवान और स्वस्थ रहेगा तो उसके द्वारा कर्म करके तुम जगत की बड़ी सेवा कर सकोगे। इसी प्रकार बुद्धि को भी बढ़ाओ, शुद्ध प्रखर बुद्धि से संसार की सेवाएं करने में बड़ी सुविधा होगी। इच्छा, क्रिया और ज्ञान अर्थात मानसिक शक्ति, शारीरिक शक्ति और बुद्धि शक्ति तीनों की ही जगजननी माँ की सेवा के लिए आवश्यकता है। और माँ से ही यह तीनों मिल सकती हैं। परन्तु इसका उपयोग केवल माँ की सेवा के लिए ही होना चाहिए, कहीं दुरुपयोग हुआ कहीं भोग और परपीड़ा के लिए इसका प्रयोग किया गया तो सब शक्तियों के मूल श्रोत महाशक्ति की ईश्वरीय शक्ति इन सारी शक्तियों का तुरन्त हरण कर लेगी।

महाशक्ति महाकाली के समक्ष अन्य शक्तियां तिनके समान

भक्तो ! देव शक्ति, असुर, मानव और पशुबल शक्तियां ''महाशक्ति'' के समक्ष तिनके के समान हैं। महिषासुर में विशाल पशु

बल शक्ति थी, कौरवों में मानव शक्ति की प्रचुरता थी, रावणादि में असुरबल अपार था और इन्द्रादि देवता देव बल से सदा बलीमान् रहते थे। परन्तु ''ईश्वरीय शक्ति ने'' चारों को परास्त कर दिया।

महिषासुर का साक्षात् ''ईश्वरीय'' ने वध किया, कौरवों को भगवान श्री कृष्ण की ''महाशक्ति'' पर आश्रित पांडवों ने नष्ट कर दिया, रावण को भगवान श्री राम की महाशक्ति ने और भगवान श्री कृष्ण की ''महाशक्ति'' के सामने ''इन्द्र'' को हार माननी पड़ी। इन चारों में पशुबल और असुर बल तो सर्वथा त्याज्य है। मनुष्य बल और देव बल ईश्वराश्रित होने पर ग्राह्य है। ''परम बल'' तो ''परमात्मा बल'' है। वह बल समस्त जीवों में छिपा हुआ है। आत्मा परमात्मा का सनातन अंश है। उस आत्मा को जागृत करो, आत्म बल का उद्दोदन करो, अपने को जड़ शरीर मत समझो।

भक्तो ! आत्मा को चेतन विपुल ''शक्तिमान'' समझो, याद रखो, तुममें अपार शक्ति है। तुम्हारा अणु-अणु शक्ति से भरा है। पुरुषार्थ करके उस शक्ति के भंडार का द्वार खोल लो। अपने को हीन, पापी समझकर निराश मत होओ।

''महाशक्ति माता'' की अपार शक्ति तुममें निहित है। उस शक्ति को जगाओ, शक्ति की- उपासना करो, शक्ति का समादर करो, शक्ति को क्रियाशीला बनाओ। फिर शक्ति की कृपा से तुम जो चाहो कर सकते हो।

संसार के समस्त नर-नारी भगवान और भगवती के स्वरूप

उपासको ! ''तुम नर हो या नारी हो''-भगवान या भगवती के स्वरूप हो। नारी नर का अपमान न करे और नर नारी का कभी न करे। दोनों शुद्ध प्रेम भाव से एक दूसरे की यथार्थ उन्नति और सुख-साधना में लगे रहना चाहिए। इसी में दोनों का कल्याण है।

जगत् की सारी नारियों में देवी भगवती की भावना करो। समस्त स्त्रियों को माँ की साक्षात मूर्ति समझकर उनका आदर करो, उन्हें सुख पहुंचाओ, उन्हें भोग्य पदार्थ न समझकर दुर्गा समझो। किसी भी नारी को कभी मत सताओ। शास्त्रों में ''कुमारी पूजा'' का बड़ा महात्म्य लिखा है। लड़की को लड़के के समान ही आदर से पालो, उसे दुत्कारो मत, उसका अपमान मत करो।

विलास सामग्री का ''सब्ज़ बाग'' दिखलाकर नारी को विलास मयी बनाना, भोग की ओर प्रवृत्त करना और ''सतीधर्म'' से च्युत करना भी उसका अपमान ही है। नारी का अपमान माँ काली और मां दुर्गा का अपमान है। इससे सदा सावधान रहो।

विधवा नारी को तो साक्षात् दुर्गा समझकर उसका सम्मान करो, आदरपूर्वक हृदय से उसकी पूजा करो, वह त्याग की मूर्ति है। उसे विषय का प्रलोभन कभी मत दो, उसे ''ब्रह्मचर्य'' से डिगाओ मत, सताओ मत, दुखी न करो, ''माँ विधवा'' के शाप से तुम्हारा सर्वनाश और उसके आशीर्वाद से तुम्हारा परम कल्याण हो सकता है।

''नारी जाति'' को मात्र विलास का मशीन मत समझो, इससे ''नारी शक्ति'' का ह्रास होगा। नारी शक्ति का उद्‌दोधन करो।

नारियां ! तुम भी ''सजग'' रहो, विलासी पुरुषों के ''वाक् जाल''– में मत फंसो। संयम और त्याग के अपने परम पवित्र अति सुन्दर, देव पूज्य स्वरूप को कभी न छोड़ो। इन्द्र तुमसे कांपते थे, सूर्य तुम्हारी ज़ुबान पर रुक जाते थे, ब्रह्मा–विष्णु, महेश तुम्हारे सामने शिशु होकर खेलते थे, रावण जैसे दुर्वृत्ति राक्षस तुमसे थर्राते थे। तुम ''साक्षात् भगवती'' हो। संयम और त्याग को भूलकर भी न छोड़ो। पुरुषों की मिथ्या प्रलोभन में मत फंसो। उनको सावधान कर दो। आज विवाह और कल सम्बन्ध त्याग, इस पातकी आदर्श को कभी न अपनाओ, जीवन की अखण्ड पवित्रता को दृढ़तापूर्वक सुरक्षित करो। संसार के मिथ्या सुखों में कभी न भूलो। अपनी शक्ति को प्रकट करो। त्याग, प्रेम, शौर्य और वात्सल्य की सबको शिक्षा दो। जो तुम्हारी भक्ति करे, तुम्हें देवी के रूप में देखे, उसके लिए लक्ष्मी और सरस्वती बनकर उसका पालन करो। और जो दुष्ट तुम्हारी तरफ बुरी नज़र करे, उसके लिए साक्षात् रणरंगिनी काली और चण्डिका स्वरूप प्रकाश करो, जिससे तुम्हें देखते ही वह डर जाय, उसके होश ठिकाने आ जायें।

शक्ति ही जीवन है, शक्ति ही धर्म है, शक्ति ही गति है, शक्ति ही आश्रय है, शक्ति ही सर्वस्व है, यह समझर परमात्मा स्वरूपा महाशक्ति का अनन्य रूप से आश्रय ग्रहण करो। परन्तु किसी भी दूसरे की ''इष्ट शक्ति'' का अपमान कभी न करो। गरीब दुःखी प्राणियों की अपनी शक्ति भर तन, मन, धन से सेवा कर ''महाशक्ति'' की प्रसन्नता प्राप्त करो। पापाचार, अनाचार, व्यभिचार, लौकिक, पञ्चमकार आदि को सर्वथा त्याग कर माता की विशुद्ध निष्काम भक्ति करो। इसी में अपना कल्याण समझो। मेरी माँ कालिका सबका कल्याण करें।

शास्त्रानुकूल कुमारी निरूपण एवं कुमारी पूजा का फल

उपासको वैदिक शास्त्रो ग्रन्थों में ''कुमारी पूजन'' को बहुत बड़ा पुण्यदायी महत्व दिया है।

''रुद्रयामल–उत्तराखण्ड, छठे पटल''–में वर्णित है कि–''एक वर्ष की उम्र वाली बालिका ''सन्ध्या'' कहलाती है, दो वर्ष वाली ''सरस्वती,'' तीन वर्ष वाली ''त्रिधामूर्ति'' चार वर्ष वाली ''कालिका'' पांच वर्ष की होने पर ''सुभगा'', छः वर्ष की ''उमा'', सात वर्ष की ''मालिनी'', आठ वर्ष की ''कुब्जा'', नौ वर्ष की ''काल सन्दर्भा'', दशवें वर्ष में ''अपराजिता'', ग्यारहवें में ''रुद्राणी'', बारहवें में ''भैरवी'', तेरहवें वर्ष में ''महालक्ष्मी'' चौदह पूर्ण होने पर ''पीठ नायिका'', पन्द्रवें में ''क्षैत्रया'', और सोलहवें में ''अम्बिका'' मानी जाती है। इस प्रकार जब तक ''ऋतु का उद्भव'' न हो तभी तक क्रमशः संग्रह करके प्रतिपदा आदि से लेकर पूर्णिमा तक वृद्धि भेद से कुमारी पूजन करना चाहिए।

अन्यत्र ''बृहन्नील तन्त्र'' आदि ग्रन्थों में उपर्युक्त पाठ और नामों से कुछ विभिन्नता पायी जाती है। ''कुब्जिका तंत्र'' के सातवें पटल में इसी विषय का यों वर्णन है–

''पांच वर्ष से लेकर बारह वर्ष की अवस्था तक की बालिका अपने स्वरूप को प्रकाशित करने वाली ''कुमारी'' कहलाती है। छः वर्ष की अवस्था में आरम्भ कर नवें तक की कुमारी साधकों का अभीष्ट साधन करती है। आठ वर्ष से लेकर तेरह की अवस्था होने तक उसे ''कुलजा'' समझे और उस समय पूजन करे। दस वर्ष से शुरु कर जब तक वह सोलह वर्ष की हो, उसे युवती जाने और देवता की भान्ति उसका चिन्तन करें।''

''विश्व सार ग्रन्थ''–में कहा गया है–आठ वर्ष की बालिका ''गौरी'' नौ वर्ष की ''रोहिणी'' और दश वर्ष की ''कन्या'' कहलाती है। इसके बाद वही ''महामाया'' और ''रजस्वला'' भी कही गयी है। बारहवें वर्ष से लेकर बीसवें तक वह सभी तन्त्र ग्रन्थों में ''सुकुमारी'' कही गयी है।

''मन्त्र महादेवि'' के अठारहवें तरंग में इस प्रकार है–

''यजमान को चाहिए कि दश कन्याओं का पूजन करें। उनमें भी दो वर्ष की अवस्था से लेकर दश वर्ष तक की कुमारियों का ही पूजन करना चाहिए। जो दो वर्ष की उम्र वाली है वह कुमारी तीन वर्ष की

त्रिमूर्ति, चार वर्ष की कल्याणी, पांच वर्ष की रोहिणी, छः वर्ष की कालिका, सात वर्ष की चण्डिका, आठ वर्ष की शाम्भवी, नौ वर्ष की दुर्गा, और दश वर्ष की कन्या सुभद्रा कही गयी है। इनका मंत्रों द्वारा पूजन करना चाहिए एक वर्ष वाली कन्या की पूजा से प्रसन्नता नहीं होगी, अतः उसका ग्रहण नहीं है और ग्यारह वर्ष से उपर वाली कन्याओं का भी पूजा में ग्रहण वर्जित है।''

''जो कुमारी को अन्न वस्त्र तथा जल अर्पण करता है उसका वह अन्न मेरू के समान और जल समुद्र के सदृश अक्षुण्ण तथा अनन्त होता है। अर्पण किए हुए वस्त्रों द्वारा वह करोड़ों अरबों वर्षों तक शिवलोक में पूजित होता है। जो कुमारी के लिए पूजा के उपकरणों को देता है उसके उपर देवगण प्रसन्न होकर उसी के पुत्र रूप से प्रकट होते हैं।'' – (कुब्जिका तंत्र से)

''कुमारी पूजा'' का फल अवर्णनीय है, इसलिए सभी जाति की बालिकाओं का पूजन करना चाहिए, कुमारी पूजन में जाति भेद का विचार करना उचित नहीं है जाति भेद करने से मनुष्य नरक से छुटकारा नहीं पाता। संशय में पड़ा हुआ मन्त्र साधक अवश्य पातकी होता है। इसलिए भक्त को चाहिए कि देवी बुद्धि से कुमारी की पूजा करे, क्योंकि कुमारी सहस्त्र विद्या स्वरूपिणी है–इसमें कोई सन्देह नहीं है। जहां कुमारी की पूजा हो वह पृथ्वी पर परम पावन देश है उसके चारों ओर पांच कोश तक का प्रान्त अत्यन्त पवित्र हो जाता है।

(योगिनी तन्त्र, पूर्व खण्ड, सत्रहवा पटल)

''सभी बड़े–बड़े पर्वों पर अधिकतर पुण्य मुहूर्त्त में और महा नवमी तिथी को कुमारी पूजन करना चाहिए। वस्त्र, भूषण और भोजन आदि से महापूजा करके मनद भाग्य पुरुष भी विजय और मंगल प्राप्त करता है। पूजन तथा भोजन आदि से ही कुमारी एक दो और तीन बीज मंत्रों की सिद्धि का फल देने वाली है–इसमें कोई सन्देह नहीं है। उन्हें फूल, फल, अनुलेप, और बालप्रिय नैवेद्य आदि देकर उनकी सेवा भाव में ही प्रवृत्त हो जाय। कन्या ही सबसे बड़ी समृद्धि और सबसे उत्तम तपस्या है। वीर पुरुष कुमारी पूजन से कोटि गुणा फल प्राप्त करता है। यदि कुलीन पंडित कन्या को पुष्पांजलि अर्पण करे तो वह पुष्प करोड़ों सुवर्णमय मेरू के समान हो जाता है। उस मेरू के दान का जो फल है उसे वह उसी क्षण प्राप्त कर लेता है। जिसने कुमारी को भोजन कराया, उसने मानो त्रिभुवन को तृप्त कर दिया।'' (यामल)

''सम्पूर्ण कर्मों का फल प्राप्त करने के लिए कुमारी पूजन करें।'' (काली तंत्र ग्यारहवां पटल)

''कुमारी पूजा से मनुष्य सम्मान, लक्ष्मी, धन, पृथ्वी, श्री, सरस्वती, और महान तेज प्राप्त कर लेता है। उसके उपर दसों महा विद्याएं और

देवगण प्रसन्न होते हैं–इसमें कोई भी सन्देह नहीं। कुमारी पूजन मात्र से पुरुष त्रिभुवन को वश में कर सकता है और उसे परम शान्ति मिलती है, इस प्रकार कुमारी पूजन समस्त पुण्य फलों को देने वाला है।'' (रुद्रायमल, उत्तर खण्ड, सातवां पटल)

विधि पूर्वक ''कुमारी–पूजन'' करना चाहिए। पूजित हुई कुमारियां विघ्न भय और अत्यन्त विकट शत्रुओं को भी नष्ट कर डालती हैं। पूजा करने वाले के ग्रह रोग, भूत, बैताल, और सर्पादि से होने वाले भय मिट जाते हैं। (बृहन्नील तन्त्र)

''कुमारी साक्षात योगिनी और श्रेष्ठ देवता है, विधियुक्त कुमारी को अवश्य भोजन कराना चाहिए। कुमारी को पाद्य, अर्घ्य, धूप, कुंकुम और शुभ चन्दन आदि अर्पण करके भक्ति भाव से उसकी पूजा करें। जो कन्या की पूजा करता है उसके ऊपर असुर, दुष्ट, नाग, ग्रह, भूत, बेताल, गन्धर्व, डाकिनी, यक्ष, राक्षस तथा अन्य सभी देवता, भू–भूवः, स्वः, भैरवगण, पृथिवी आदि सब भूत चराचर ब्रह्माण्ड, ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, ईश्वर और सदा शिव– ये सभी प्रसन्न होते हैं।'' (रुद्र यामल)

भगवती महाकाली के विराट् रूप

एक बार ''गिरिराज हिमालय'' की प्रार्थना से श्री भगवती जी ने अपना ''विराट् रूप'' उन्हें दिखाया। उस समय विष्णु आदि सभी देवता वहां उपस्थित थे।

उस ''विराट् रूप'' का–''स्वर्ग लोक मस्तक और चन्द्रमा तथा सूर्य नेत्र थे। दिशाएं कान, वेद वाणी और पवन प्राण थे। हृदय विश्व था और जधा पृथ्वी। व्योम मण्डल उसकी नाभि तथा नक्षत्र वृन्द वक्षस्थल थे। महलोक कण्ठ और जनलोक मुख था। इन्द्रादि देवता उस महेश्वरी के बाहु थे और शब्द ही श्रवण। दोनों अश्विनी कुमार उसकी नासिका थे, गन्ध ध्रोणोन्द्रिय थी। मुख अग्नि और पलकें दिवा–रात्रि थी। ब्रह्म धाम भ्रुविलाश था और जल तालु। रस ही रसना तथा यम ही–दष्ट्रा थे। स्नेह–कला दांत थी और माया थी हंसी। सृष्टि ही कटाक्ष विक्षेप तथा लज्जा ही होठ थी।''

लोभ अधर थे और धर्म पथ था पीठ। इस जगती तल में जो सृष्टि कर्त्ता रूप से विख्यात हैं वे प्रजापति ही उस देवी के मेद्र थे। समुद्र उदर, पर्वत अस्थि, नदी नाड़ी तथा वृक्ष ही उनके केश थे। कौमार, यौवन और जरावस्था उसकी उत्तम गति थी। मेघ ही केश और दोनों

सन्धयाएं वस्त्र थीं. चन्द्रमा ही जगदम्बा के मन थे, विज्ञान शक्ति विष्णु और अन्तःकरण रूद्र थे।

अश्व आदि जातियां उस व्यापक परमेश्वरी के नितम्ब से निम्न भाग में स्थित थीं। अतल आदि ''महलोक'' उसकी कटि के अधोभाग थे। देवताओं ने देवी के ऐसे महान् रूप का दर्शन किया जो सहस्त्रोज्वाला मालावों से पूर्ण था और लपलपाती हुई जीभ से अपना ही वदन चाट रहा था। उसकी दाढ़ों से कट–कट शब्द होते थे और आंखे आग उगल रही थीं।

नाना शस्त्रों को धारण करने वाला वीर–वेष था, उसके सहस्त्रों मस्तक, नेत्र तथा चरण थे। करोड़ों सूर्य और कोटि विद्युन्मालाओं के समान उसकी देदीप्यमान कान्ति थी। वह महाघोर भीषण रूप हृदय तथा नेत्रों को आतंक पहुंचाने वाला था।

उसे देखते ही सभी देवता हाहाकार मचाने लगे, हृदय कंपित हो गया और बेसुध हो गए। उन्हें इतना भी स्मरण न रहा कि ये ''जगत जननी देवी'' हैं।

''महेश्वरी'' की चारों ओर जो वेद मूर्ति मान होकर खड़े थे उन्होंने ही देवताओं को मूर्च्छा से जगाया। होश में आने पर वे नेत्रों में प्रेमाश्रु भरकर गद्–गद् कंठ से स्तवन करने लगे।

स्तुति समाप्त होने पर उन्हें भयभीत जानकर देवी ने परम सुन्दर रूप धारण करके उन्हे सान्त्वना दी। (देवी भागवत के आधार पर)

माता महाकाली के उपासकों ! ऐसी महाशक्ति मैया काली की ''उपासना'' आरम्भ करने से पूर्व हमें किन–किन तथ्यों पर ध्यान आकर्षित करना होगा, उन तथ्यों की जानकारी आगे के भागों में उपदेशित कर रहा हूँ।

तृतीय भाग

उपासना से पूर्व आवश्यक ज्ञान खण्ड

उपासना का अर्थ

उपासको ! ''उपासना'' का शाब्दिक अर्थ है– ''समीप बैठने का प्रयास''। सन्धि विच्छेद के अनुसार–उप+उपासना = उपासना। उप = समीपे, आसन = स्थिति = इति उपासना।

अर्थात्–''अपने भगवान से तल्लीनता का प्रयास।''

''कुलार्णव तंत्र'' में ''उपासना'' की परिभाषा इस प्रकार दी गई है–

कर्मणा मनसा वाचा सर्बावस्थासु सर्वदा।
समीप सेवा विधिना उपास्तिरिति कथ्यते।।

हिन्दी अनुवाद–''सब प्रकार से समीप रहकर सेवा करना ही उपासना है।''

श्रीमद्भागवत के अनुसार–

''उपसितो यत्पुरुषः पुराणः''

अर्थात्–''पूर्ण भक्ति से प्रसन्न कर लेना ही उपासना है।''
इसी प्रकार भागवत में अन्य स्थानों पर–

त्वतापार विग्वं भर्वासन्धुषोत्तम।
उपास्ते कामलवाय-त्तेषां।।

अर्थात्–''उपासना'' शब्द को ''पूजा भक्ति में लीन रहना'' कहा गया है।

इसी प्रकार एक और उदाहरण देखें–

''उपास्ते योग रथेन धीराः''

इसमें उपासना का अर्थ ''ध्यान'' ही है।

अर्थात–इष्ट देव का ध्यान, प्रणाम, नमस्कार, पूजा, जप, होम भक्ति, दास्य सुख्य, सामीप्य, सेवा–शुश्रुषा, परिचर्चा, आराधना, चिन्तन, मनन, आदि सभी क्रियाओं को हम ''उपासना'' कहते हैं।

अब श्री ''काली उपासना'' का शाब्दिक अर्थ निकला–मातेश्वरी महाकाली के समीप बैठने का प्रयास करना, उनसे जुड़ने का प्रयास करना, उनमें तल्लीन होने का प्रयास करना। इसे इस प्रकार भी समझ सकते हैं–

''जिस अनुपम पवित्र पुस्तक में जगदम्बा महाकाली को प्रसन्न करने हेतु–पूजन, स्तुति, वन्दना, यंत्र–मंत्र की वैदिक व लौकिक विधि वर्णित की गई हो–उसे हम–''महाकाली उपासना पद्धति'' कहते हैं।''

उपासना क्यों करें?

संसार के समस्त धर्म ग्रन्थ अध्यात्म का निष्कर्ष यह है कि उन्हें ढूंढने, पाने और मनन करने का उद्येश्य यह है कि ''मानव अपनी व्यवस्था के अतिरिक्त धन प्राप्त करने की ओर भटक रहा है, परन्तु सम्पूर्ण सुख साधन प्राप्त होने के पश्चात् भी जब उसे ''शान्ति'' नहीं मिलती तो वह देवी–देवताओं से इसे प्राप्त करना चाहता है परन्तु उन्हें प्राप्त करना तो आसान नहीं, उन्हें प्रसन्न करना भी आसान नहीं।''

फिर उन्हें प्रसन्न करने हेतु मार्ग ढूंढता है, तब उसे उनकी ''उपासना'' पूजा, अर्चना की आवश्यकता पड़ती है और वही ''उपासना रहस्य'' इस छोटी सी अनुपम पुस्तक में छुपी हुई है। इसे जानकर, कार्य रूप देकर, हृदय से नमन मनन कर आप संसार के उच्चतम शिखर पर पहुंच सकते हैं।

यही है उपासना का रहस्य और यही है उनकी मनोवृति।

उपासना की आवश्यकता

''ईश्वर'' और जीव के मध्य में जगत के आ जाने से जीवात्मा का बुद्धि से परमात्मा का सम्पर्क न्यून हो गया है। इस परिवर्तन के कारण जीवात्मा की ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति दोनों संकुचित हो गई है तथा जीवात्मा ईश्वर से दूर चला गया है।

यह जीवात्मा की अल्पज्ञता है। आवरण रूप जगत की विधि रमणीय वस्तुएं जीवात्मा की इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती है, जिसके कारण जीवात्मा को बुद्धि विषय प्रव मन की अनुगामिनी हो जाती है और जीवात्मा क्लेशों का पात्र बन जाता है।

उपासना से ज्ञान का विकाश होता है। जिस क्रिया से जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत तिरोहित हो जाता है तथा ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है–उसी को उपासना कहते हैं।

जीवात्मा को उचित है कि वह सम्पूर्ण जगत के कारण रक्षक अन्तर्यामी तथा अंशी परमात्मा के प्रति प्रेम, विश्वास एवं श्रद्धा की बुद्धि रक्षा का सम्पूर्ण भार परमात्मा पर डाल देता है, जिसके कारण वह परमात्मा का कृपा पात्र बन जाता है।

उपासना से उपासक के चित्त को स्थिरता, सांसारिक विषयों से विमुखता और उसके फलस्वरूप परमात्मा का सामीप्य एवं मुक्ति की प्राप्ति होती है। इसीलिए उपासना करना मानव प्राणी के लिए परम आवश्यक कहा गया है।

उपासना में भावना का महत्व

माता महाकाली की प्रतिमा अथवा तस्वीर के समक्ष विधिवत् पूजन सामग्री स्थूल रूप से अर्पित करते हुए आराधना की जाये अथवा केवल मन्त्रोच्यार करते हुए मानसिक उपासना, महत्व उपादानों (पूजन सामग्री) का नहीं–आपकी ''भावना'' की होती है।

माता महाकाली को किसी वस्तु की कमी नहीं है जो हम उन्हें दे सकते है। पूजा–अर्चना और आराधना में जो वस्तुएं देवताओं को अर्पित की जाती है वे भी हमारी भावनाओं का ही दिग्दर्शक होती है जबकि उपासना में हम केवल भावों का ही पुष्प चढ़ाते हैं।

भक्तों के दुखहरणी माहेश्वरी महाकाली की उपासना की जाये अथवा प्रभु की आराधना, जप किया जाये या मूर्ति पूजन, अपने आराध्य की सेवा पूजा और अर्चना–आराधना का यह क्षेत्र है, जहां हमें अपनी भावना के अनुरूप ही फलों की प्राप्ति होती है। भक्तवत्सला मातेश्वरी महाकाली अत्यन्त दयालु है, परन्तु हम उन्हें विद्या के द्वारा प्राप्त की गई तर्क शक्ति, बुद्धि, धन और बल से प्राप्त नहीं कर सकते। इनके लिए तो हमें अपने हृदय की सम्पूर्ण गहराई के साथ समर्पित भाव से पुकारना, याद करना और नमन करना ही होगा।

उपासना में भावना का प्रभाव और कामना

उपासको ! जो व्यक्ति निष्कपट भाव से भगवती का स्मरण करते हुए उनके श्री चरणों में मन लगाकर संसार के प्रति अनासक्त

रहते हुए कर्म करते हैं उनके तो सभी कार्य परमेश्वरि के प्रति समर्पित होने के कारण स्वयं ही उपासना बन जाती है।

परन्तु भक्ति के प्रथम चरण में ऐसा सम्भव नहीं।

माता महाकाली की उपासना तो प्रायः अनिष्टों की शान्ति, कामना पूर्ति एवं दुष्टों के विनाश के लिए ही अधिक की जाती है अतः हम ये तो नहीं कह सकते कि आप उनसे कुछ मांगे ही नहीं, परन्तु मातेश्वरी की उपासना करते समय उनसे यही मांगिए कि आप में सद्गुणों का विकाश हो। किसी की बुराई, हानि अथवा स्वयं के लिए लौकिक वस्तुओं की मांग करके अपनी उपासना को नष्ट न कीजिए।

उपासना का क्षेत्र तो पूरी तरह से ''भावना'' पर ही आधारित है, जबकि संसार में भी व्यक्ति को उसके कर्मों का फल उसकी भावनाओं के अनुरूप ही मिलता है। एक सीधे–सादे उदाहरण द्वारा यह समझने में हमें आसानी रहेगी।

आप्रेशन करने वाला एक शल्य चिकित्सक (डॉक्टर) भी शरीर पर छुरी चलता है और एक क्रुर हत्यारा भी परन्तु डाक्टर को धन, यश, मान–सम्मान और पुण्य मिलता है तो हत्यारों को ''प्राण दण्ड''। कार्य तो दोनों ने एक ही किया, दोनों के कार्य का माध्यम भी छुरा था और समान रूप से ही व्यक्ति रक्तरंजित भी हुआ।

फिर यह अन्तर क्यों ? एक को पुरस्कार दूसरे को दण्ड एक को मान–सम्मान दूसरे को अपमान, एक का गुणगान दूसरे से घृणा क्यों ? क्योंकि दोनों की भावना में अन्तर था। शल्य चिकित्सक की भावना रोग का निदान कर रोगी को रोग मुक्त कर सुखी और संतुष्ट करना था तो हत्यारे की भावना व्यक्ति को असमय काल के गाल में पहुंचाना। यही भावना का फर्क था उन्हें मिलने वाले प्रति फलों का अन्तर।

ठीक यही अवस्था जगदम्बा की उपासना में है। यदि हमारे भाव दूषित होंगे तो भक्त वत्सला भगवती हमपर अनुकम्पा क्या करेंगी, अधिक सम्भावना यही है कि हमारी उपासना का हमें कोई फल ही न मिले। यही कारण है कि हृदय की निर्मलता उपासना की प्रथम शर्त है और उसका सबसे आसान उपाय है लोभ और मोह जैसी बुराइयों को छोड़ते हुए अधिक से अधिक धार्मिक साहित्य का सतत् अध्ययन मनन।

हम सांसारिक जीव है जो अनेक वस्तुओं के आकांक्षी हैं और प्रायः किसी कामना के वशीभूत होकर ही हम करते हैं–प्रभु की आराधना अथवा उपासना। जो व्यक्ति लोभ मोह और सांसारिक वस्तुओं की कामनाओं पर विजय प्राप्त कर चुके हैं, उनका तो प्रत्येक कर्म ही उपासना है। परन्तु हम तो उस मंजिल के राही हैं–जहां से उपासना–अराधना आरम्भ होती है अतः हम कामना रहित हो गए हों, ऐसा तो

हो ही नहीं सकता, परन्तु इतना तो कर ही सकते हैं कि दयानिधि भगवती से कोई सांसारिक वस्तु न मांगकर उनके चरणों में भक्ति की भावना की वृद्धि का ही वरदान बार–बार मांगते रहे।

कोई भी सांसारिक कामना चाहे वह साहित्य संगीत अथवा कला में विशेष योग्यता की प्राप्ति की हो अथवा मान–सम्मान और पुरस्कारों की प्राप्ति की, धन दौलत की आकांक्षा हो या पदोन्नति की कामना मन में रखकर भजन, जप, पूजा–पाठ या आराधन उपासना करना– वास्तव में भक्ति नहीं–भगवान से की जाने वाली सौदेबाजी है।

मातेश्वरी से मांगिए, अवश्य मांगिये, उनसे निरन्तर सद्‌भावों, ज्ञान और भक्ति भावना का वरदान। उनसे कहिए–हे माँ मैं कभी आपको भूलूं नहीं, आपकी भक्ति मिले और मिले आपका प्रेम। यह मांगना आपका अधिकार ही नहीं कर्तव्य भी है। यही मांगते रहने से ही सांसारिक समस्त सुखों की प्राप्ति स्वतः हो जाती है, क्योंकि परमेश्वरी स्वयं जानती हैं कि आपको कौन–कौन सी वस्तुओं की आवश्यकता है जो वे स्वतः पूर्ण कर देती हैं।

उपासना में दृढ़ निश्चय और श्रद्धा का महत्व

उपासना की शक्ति ही मानव को सर्वस्व विजय प्रदान कराती है, किन्तु बहुत कम लोग यह मानते हैं कि उपासना की नींव केवल श्रद्धा है और जहां पर श्रद्धा है वही पर सिद्धि हैं।

हर प्राणी के लिए आवश्यक है कि जिस साधन से उपासना या साधना आरम्भ करने जा रहा है, उस पर पूर्ण विश्वास रखे, उस पर पूरी आस्था होनी चाहिए जो उपासना का ''मेरू दण्ड'' है।

जिस उपासना में विश्वास नहीं, श्रद्धा नहीं, उसे मात्र परीक्षार्थ करना अपना समय नष्ट करना है। इसका कारण मात्र यही है कि ऐसे कार्यों से लाभ की आशा करना मात्र मूर्खता है। साधना मार्ग में प्रथम सोपान प्रथम पग की साधना में सम्मिलित नहीं तो फिर कैसी सफलता कैसी सिद्धि–कैसा विजय ? पराजय असफलता व असिद्धि मात्र की आवश्यमभावी है।

वास्तव में ही आप यदि उपासना में सफल होना चाहते हैं तो उसके लिए बहुत बड़ी लगन से काम लेना होगा। लगन, तपस्या साधना और उपासना का दूसरा नाम ही ''सफलता'' है।

यदि आप उपासना में सफल होना चाहते हैं, यदि आप भगवती महाकाली के कृपा पात्र बनना चाहते हैं तो तप करना होगा, त्याग

करना होगा, दृढ़ संकल्प करना होगा, तपस्या करनी होगी। इस कार्य के लिए आपको बार–बार दृढ़ निश्चय को दुहराना होगा, उनको श्रद्धा भाव से हृदय में बिठाना होगा, तभी आप भक्तवत्सला भगवती महाकाली की कृपा प्राप्त कर सकेंगे।

उपासना में सहायक

''उपासना'' के प्रारम्भिक चरण–ज्ञान और इसमें सहायक गुरु स्वाध्याय के अतिरिक्त कुछ यमनियम आदि भी इस मार्ग में सहायक होते हैं।

संक्षिप्त में शरीर की भीतरी–बाहरी स्वच्छता और सात्विक भोजन, बाणी द्वारा मधुर हितकारी और सत्य वचन बोलना, मन और इन्द्रियों द्वारा सांसारिक सुख, भोग में संयम उपासक को आत्मिक आनंद की प्राप्ति में सर्वदा सहायक होते हैं।

इसके अतिरिक्त आत्मिक स्तर पर सहयोगी तत्व है–विश्वास, संकल्प, लगन और अभ्यास। अर्थात् सर्व प्रथम सृष्टि की संचालक शक्ति और उसके स्वरूप (अपने इष्ट देव) पर दृढ़ विश्वास, फिर उपासना मार्ग पर चलने हेतु, दृढ़ निश्चय ज़रूरी है।

दृढ़ निश्चय या संकल्प से प्रेरित होती है–''लगन'', अर्थात् ''अथक प्रयास'' और सतत् अभ्यास से प्राप्त होती है सिद्धि जो मनुष्य और समाज के चरम आनन्द से ओत–प्रोत हो जाने की अवस्था है।

वैदिक साहित्य और इस्लामी, यहूदी, पारसी, ईसाई आदि सम्प्रदायों में उपलब्ध स्वर्ग की परिकल्पना अथवा उपनिषदों और उनसे प्रेरित जैन–बौद्ध आदि सम्प्रदायों में प्रतिपादित मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण, आदि सभी का लक्ष्य एक है। वही चरम शास्वत, निर्विकल्प आत्मिक आनन्द जो सृष्टि के प्रारम्भ से मनुष्य की आदम खोज है, और जिसका सहज मार्ग है–''उपासना''।

"उपासना" जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य की कड़ी तथा उपासना से लाभ

आनन्द की लालसा और सम्पत्ति अर्जण की अन्धी दौड़ ने आज मानव को पशुवत बनाकर रख दिया है। मानसिक शान्ति, परस्पर मधुर सम्बन्ध और भाई चारा आज बीते युग की बात बनकर रह गयी

है, और इसका एकमात्र कारण है–''भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति की अन्धी असीमआकांक्षा''।

तन–मन में सभी क्लेशों और संतापों, समाज में हिंसा एवं अनाचार तथा व्यक्तिगत विद्वेश एवं असंतोष का मूल कारण–''धन के प्रति यह अन्धी दौड़ ही है। मानव जितना भी दौड़ लगा रहा है, विनाश की ओर जा रहा है, बुद्धि हीन हो गया है।''

अतः इससे बचने के लिए इन सभी समस्याओं का समाधान है परब्रह्म–परमेश्वरि के किसी भी रूप–स्वरूप, अवतार अथवा देवि–देवता की ''उपासना''।

''उपासना'' से–ज्ञान का विकाश होता है। उपासना से जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत की माया तिरोहित हो जाती है। तथा ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है।

उपासना से–भगवत् सानिध्य की प्राप्ति होती है और इस कलिकाल में उपासना को ही सर्वमुख भंजक एवं आराधना का सर्वश्रेष्ठ और आसान माध्यम कहा कहा गया है।

उपासना के द्वारा–जीवात्मा के अन्तः करण की शुद्धि एवं उपास्यदेव के प्रति प्रेम, विश्वास एवं श्रद्धा की वृद्धि होती है।

उपासना के द्वारा–उपासक अपनी रक्षा का सम्पूर्ण भार अपने आराध्यदेव और उसके माध्यम से परमात्मा पर डाल देता है, जिससे वह परमात्मा का कृपापात्र तो बन ही जाता है। जीवन के अधिकांश तनावों और चिन्ताओ से भी छुटकारा मिल जाता है और इस प्रकार एक अलौकिक शान्ति और मानसिक संतुष्टि की प्राप्ति होती है–उपासक को।

उपासना से–मानव को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है और सम्पूर्ण ऐश्वर्यों का भोग करता है।

एकाग्र मन का उपासना पर प्रभाव

खेल–तमाशों सांसारिक कर्मों में मानव का मन तुरन्त लग जाता है, परन्तु उपासना, भजन, पूजन, कीर्तन आदि में प्रारम्भ में कुछ दिनों तक मन नहीं जमता, चित्त चंचल बना रहता है। कई बार तो उकताहट और घबराहट जैसी होती है, परन्तु यह स्थिति चन्द दिन ही रहती है। शुरू–शुरू में तो बालक को स्कूल में तथा नववधू को ससुराल में घबराहट होती है, परन्तु कुछ समय बाद ही बालक का स्कूल में और वधू का पति गृह में न केवल मन लगने लगता है बल्कि उन्हें वहां पूर्ण आनन्द भी आने लगता है।

ठीक यही स्थिति आराधना, उपासना और भगवत् भक्ति की है। प्रारम्भ में कुछ दिनों तक ही आराधना उपासना में मन नहीं लगता, परन्तु कुछ समय बाद ही उपासना में भी समान ही सच्चा आनन्द आने लगता है।

यदि प्रारम्भ में मन नहीं लगता तो भक्त और भगवान के रक्षक महाशक्ति मैया कालिका की आकृति के समक्ष सच्चे हृदय से रोइये गिड़गिड़ाइये और प्रार्थना कीजिए कि–"हे माँ ! मैं तुम्हारी मूर्ख सन्तान हूँ, निपट अनाड़ी हूँ–परन्तु मैं क्या करूं ? हे दयालु मैया ! हम पर कृपा करें, अपने चरणों में मेरा मन लगावें, हमें अपनी भक्ति दें।"

दया की सागर माहेश्वरी महाकाली को भक्त की पुकार को सुनना ही पड़ेगा, क्योंकि हमारे ही नहीं वे सम्पूर्ण जीवों की माता है। हम उनसे विमुख हो सकते हैं, परन्तु वे हमसे विमुख नहीं हो सकती। माता के समक्ष पुत्र कुछ भी मांग सकता है, फिर हम तो माता से उनके प्रेम की भिक्षा ही मांग रहे हैं, अतः शर्म या झिझक कैसी ? जितना अधिक मांग सकते हैं मांगिए, मां से प्रेम भाव, दया और भक्ति की भिक्षा।

उपासना का प्रदर्शन सफलता में बाधक

भक्तों पर सब कुछ लुटाने वाली, समस्त कामना प्रदान करने वाली दयामयी अम्बिका काली की कृपा प्राप्ति के लिए आप एकान्त स्थान में, शान्त मन से आराधना–उपासना करें।

आराधना–उपासना, पूजा, पाठ, जप–तप, अथवा भक्ति का कोई भी मार्ग अपनाया जाय यदि उसका प्रदर्शन हो जाता है तो पुण्य फलों में न केवल न्यूनता आ जाती है बल्कि बड़ी सीमा तक उसका लोप भी हो जाता है।

आराधना–उपासना न तो बिक्री की वस्तु है और न ही प्रदर्शन की। उपासना का थोथा प्रदर्शन आपको समाज में सम्मान और आत्म प्रदर्शन का थोथा सुख और स्वयं को विशिष्ठ समझने का झूठे गर्व तो दिला सकता है परन्तु मातेश्वरी का सच्चा प्यार और कृपाएं नहीं। "माँ" हमारी हैं और "हम" उनके पुत्र, फिर माता–पुत्र के मध्य में अन्यों का क्या काम ? इसलिए जहां तक हो सके एकान्त में ही श्री महाकाली की पूजा, ध्यान, भजन और उपासना कीजिए।

"भक्ति का प्रदर्शन" किस प्रकार भक्तों को कष्ट में डाल देता है, इसके हजारों जीवन्त उदाहरण हमारे धार्मिक ग्रन्थों में मिलते हैं–

"भक्त राज "प्रह्लाद" और "भक्त ध्रुव" को बचपन से ही वर्षों तक कठोर तपस्याएं करनी पड़ी, तब जाकर उन्हें कहीं भगवान के दर्शन हुए, क्योंकि उनकी भक्ति का सम्पूर्ण समाज को ही पता लग

गया था। इसके विपरीत महाराज रावण का भाई विभीषण प्रातः काल उठते समय ही चन्द क्षणों के लिए ईश्वर का सुमिरन करता था परन्तु रावण तो क्या उसकी पत्नी तक से छुपी हुई थी– "उसकी भक्ति"। यह विभीषण की छिपी हुई भक्ति का ही कमाल था कि ध्रुव और प्रहलाद की अपेक्षा सौवें अंश से भी कम समय तक आराधना करने पर ही न केवल उसे भगवान राम का सान्निध्य प्राप्त हुआ बल्कि इस लोक में लंका का राज्य और परलोक में विष्णु के लोक में वास भी मिला।

इसलिए माता काली की दया पाने के लिए, कामनाओं की प्राप्ति के लिए, धन, जन, सुख, सम्पत्ति, प्रसन्नता व शान्ति एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए उपासना नियमित रूप से अवश्य कीजिए, परन्तु उपासना का प्रदर्शन मत कीजिए, तो आप जो भी चाहेंगे प्राप्त कर लेगें।"

उपासना की योग्यता

उपासकों के लिए लक्षण निर्देश करते हुए शास्त्रों में कहा है कि– "उपासक को शीलवान, विनम्र निश्छल, श्रद्धालु, धैर्यवान, शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, कार्य सक्षम, सच्चरित्र, इन्द्रिय संयमी और कुल प्रतीष्ठा का पोषक होना चाहिए।"

यह तो स्वयं सिद्ध है कि यदि कोई उपासक गुणों से रहित है तो वह श्रद्धा विधान पूर्वक स्थिर चित्त होकर न तो उपासना कर सकता है और न ही उसे कोई लाभ ही मिल सकता। उपासना में सफलता का पात्र वही होता है, जो विधि–विधान और पूर्ण मनोयोग के साथ उपासना पूरी कर सके।

उपासना का स्थान

उपासको !

उपासना से पूर्व–"उपासना का स्थान" कैसा हो, उसे भली–भान्ति समझ लेना चाहिए। जहां भी पायें, बैठकर उपासना करने लगे, ऐसा ठीक नहीं, क्योंकि उपासना करते समय बाह्य रूप से कोई कर्म नहीं कर रहा होता, वह निश्चल बैठा रहता है, इसलिए कि उपासना पूर्ण रूपेण "मानसिक क्रिया" है। कोई भी मानसिक क्रिया–ऐसा कार्य जिससे आप हृदय की सम्पूर्ण गहराई से जुड़कर अपने–तन–मन सुध तक भूल जाएं–भीड़–भाड़ में हो ही नहीं सकती। चाहे वह गम्भीर विषयों का अध्ययन हो या आध्यात्मिक चिन्तन–मनन। अतः उपासना विशिष्ठ स्थान पर ही किया जाए, तभी लाभप्रद होता है।

प्राचीन शास्त्रों में उपासना ग्रन्थ का निर्देश है कि–काशी, प्रयाग जैसे तीर्थों, अथवा गंगा तट पर, या कोई वाटिका, पार्क और खेत एवं खलिहानों में बताया गया है। अतः इसके लिए अपने निवास का शुद्ध साफ कमरा भी माना गया है, जहां मानव एकान्त में बैठकर उपासना कर सकता है।

उपासना के दस कर्म

भगवान विष्णु के अंशावतार महर्षि वेद व्यास जी ने उपासना के अन्तर्गत दस कर्म बतलाए हैं, इनमें से किसी भी एक कर्म के द्वारा आप उपासना कर सकते हैं, इन दस कर्मों में से समस्त कर्म करने की कोई आवश्यकता नहीं, एक कर्म करने से भी आप अपनी उपासना सफल बना सकते हैं।

ये दस कर्म है–

मूर्ति पूजा, इष्ट देव नाम का जप, स्त्रोतों का पाठ, शतनाम पाठ, सहस्त्र नाम पाठ, भजनों का गायन, इष्ट देव के विविध चरित्रों व कार्य कलापों का पठन–पाठन और श्रवण–मनन, आराध्य देवी या देवता के प्रति आत्म समर्पण, आराध्य देव से सम्बन्धित यंत्रों–मंत्रों की विधि विधान से साधना व धारण, आराध्य देव या देवता के प्रति आत्म समर्पण, आराध्य को प्रणाम एवं वन्दना, प्रदक्षिणा अर्थात् परिक्रमा करना, तथा विशेष अवसरों पर उत्सव भिषेक करना।

नित्य नियम उपासना का फल

उपासको ! कोई भी कर्म हो, नियम पूर्वक निरन्तर करने से ही उसमें सफलता प्राप्त होती है। वर्ष भर नियम बिना क्रम तोड़े पढ़ने वाला विद्यार्थी ही प्रथम श्रेणी प्राप्त करता है।

ठीक यही दशा पूजा, आराधना और उपासना की है। निश्चित समय पर नित्य उपासना करने से ही वांछित फलों की प्राप्ति होती है। जबकि प्रमाद और आलस्य पुण्य फलों में तो कमी कर ही देता है, बार–बार का यह प्रमाद उपासना को खंडित भी कर देता है और फिर हमारा ध्यान उपासना तो क्या सामान्य पूजा–पाठ में भी नहीं लगता है।

जहां तक उपासना में लगाए जाने वाले समय का प्रश्न है, जितना नियम है उतनी आराधना उपासना तो प्रतिदिन कम से कम निश्चित समय पर अवश्य कीजिए ही जितना अधिक हो जाय उतना ही अच्छा है। नियम कम से कम के लिए होता है, अधिकतम की कोई सीमा नहीं।

क्या धन से किसी का मन भरा है ? पांच वाला पचास के लिए, लाख वाला करोड़ के लिए सतत् चेष्टा करता रहता है, कभी उसे संतोष नहीं होता। जब संसार के इस नाशवान धन से हम नहीं उकताते, सदैव अधिक की कामना करते रहते हैं, तब प्रभु के उस असीम धन को ही सीमा में कैसे बांध सकते हैं। जितने अधिक समय तक परमात्मा का चिन्तन मनन, ध्यान, आराधना और उपासना हो जाये, उतना ही कम है। परन्तु इसमें एक दिन का भी व्यवधान नहीं पड़ना चाहिए।

यह सत्य है कि परम कृपालु परमेश्वरी महाकाली हमारे दोषों को क्षमा कर देती हैं, वे उपासना में की गई लापरवाही और प्रमाद के लिए हमें दंडित नहीं करते, परन्तु उससे भी बड़ा सत्य यह है कि परमेश्वरी कभी भी अपने भक्तों का बुरा सोचती ही नहीं।

चतुर्थ भाग

उपासना हेतु विभिन्न आसन व मालाएँ प्रयोग

उपासना हेतु विभिन्न आसन

किसी भी उपासना में निम्न प्रकार के आसनों का प्रयोग होता है–
1. कुशासन 2. मृगचर्म 3. व्याघ्र चर्म 4. उनी वस्त्र 5. रेशमी वस्त्र 6. काष्टासन।

कुशाआसन

साधारण कोई भी उपासना हो, यदि कुशाआसन पर बैठकर जप एवं पूजा–पाठ किया जाये तो सफलता अवश्य मिलती है।

इसके विपरीत कुछ आसनों को त्याज्य बताकर उनके उपयोग को निषिद्ध कहा गया है–बांस, पत्थर, धुनी लकड़ी, तिनके अथवा पत्तों से बने आसन पर बैठकर–जप करना या उपासना करना वर्जित है। इन आसनों का प्रभाव उपासक के लिए क्लेश कारी होता है।

अर्थात्–

(क) बांस के बनाए आसन पर बैठकर जप करने से दरिद्रता आती है।

(ख) पत्थर का आसन उपासक को व्याधिग्रस्त करता है।

(ग) धरती पर बैठकर (बिना कोई आसन बिछाए) अर्थात् खुली भूमि पर उपासना करने वाले व्यक्ति दुःख से आक्रान्त होता है, तथा उनकी उपासना का फल आधा धरती प्राप्त कर लेती है।

(घ) छेद वाली लकड़ी (घुन वाले काष्ट आसन) का प्रयोग दुर्भाग्य कारी होता है।

(ङ) तिनकों के बने आसन का प्रभाव साधक को धन हानि और यश क्षीण का संताप देता है।

(च) पल्लवों (पत्तों) से निर्मित आसन मानसिक विभ्रम उत्पन्न करता है।

और–

सामान्य वस्त्र कपड़ा और कुर्सी का प्रयोग भी उपासना में निन्दित कहा गया है।

कुशाआसन पर उपासना से लाभ

कुशाआसन पर बैठकर उपासना करने से निम्नलिखित लाभ होता है–

(क) अन्तः करण पवित्र होता है।

(ख) उपासक को फल की प्राप्ति में सुविधा हो जाती है।

(ग) उपासक की दृढ़ इच्छा शक्ति और स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर बुद्धि होती है।

(घ) दुषित प्रभावों अर्थात् भूत बाधावों का शमन होता है।

(ङ) उपासक की उपासनात्मक उपलब्धि प्रबल होती है।

मृगचर्म आसन पर उपासना का लाभ

''मोक्ष प्राप्ति'' अथवा धन के उद्देश्य से की जाने वाली उपासना में ''कृष्ण मृग चर्म'' विशेष रूप से अनुकूल प्रभाव देता है।

व्याघ्र चर्म आसन पर उपासना का लाभ

यह रजोगुणी आसन है। राजसिक वृत्ति वाले साधकों द्वारा राजसी उददेश्य की पूर्ति की जाने वाली उपासना में इसका प्रयोग विशेष प्रभावशाली होता है। सिंह के स्वभाव वाले लगभग सभी गुण इनमें आंशिक रूप से विद्यमान रहते हैं।

परिक्षणों से सिद्ध हुआ है कि व्याघ्र चर्म के पास कोई जीव–जन्तु नहीं जाते। इस पर बैठे हुए उपासक को सांप–बिच्छू का भय नहीं रहता, क्योंकि ये जन्तु व्याघ्र चर्म पर चढ़कर उन पर आसीन उपासक

को छूने का साहस नहीं कर पाते। निर्विघ्न उपासना के लिए व्याघ्र चर्म विशेष उपयोगी है।

वैसे इसका भी वैज्ञानिक महत्व है और पवित्रता में भी यह किसी से कम नहीं। आर्य संस्कृति के सबसे बड़े देवता और सृष्टि के सबसे महान् योगी तथा मन्त्र साधक भगवान शिव को यह इतना प्रिय है कि वे उसे ओढ़ने–बिछाने और पहनने तक के काम में लाते हैं।

कम्बल के आसन की उपयोगिता

कर्म सिद्धि की लालसा से किए जाने वाली उपासना में कम्बल का आसन लाभदायक होता है।

रेशमी आसन की उपयोगिता

ऊनी आसन तथा रेशमी आसन भी उपासना में प्रयुक्त होते हैं। इस पर बैठकर जप या उपासना करने वाले उपासक की शारीरिक विद्युत शक्ति पृथ्वी में प्रवेश न करके सुरक्षित रहती हैं। वस्तुतः ये दोनों आसन भी कुचलाक (असंक्रामक नाम कण्डक्टर) पदार्थों की कोटि में आते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से ऊनी आसन को विशेष महत्व पूर्ण माना गया है। कामना पूर्ति हेतु ''लाल कम्बल'' का प्रयोग विशेष प्रभावी होता है। अनेक रंगों वाला कम्बल और भी श्रेष्ठ माना जाता है।

काष्ठासन (लकड़ी के आसन) पर बैठकर उपासना करना हानिकारक होता है।

माला की उपयोगिता और फेरने का नियम

आचार्यों ने जप–तप पूजा–पाठ के लिए माला विशेष का नियम बनाया है। व्यवहारिक रूप में हम रूद्राक्ष, तुलसी, कमलगट्ठा, वैजयन्ती, शंख, चन्दन, राजमणि, पुत्रजीवा और स्फटिक आदि की मालाएं जप कार्य में उपयोग करते हैं।

मंत्र जप के लिए माला का पूर्ण और शुद्ध होना आवश्यक है। प्रायः माला 108 दानों की होता है। अतः दश माला फेरने का अर्थ हुआ कि साधक ने अपने मंत्र का 1080 बार जप किया। जपते

समय माला का एक फेरा पूर्ण हो जाने पर ''सुमेरू'' तक पहुचंकर वहीं से फिर विपरीत दिशा में जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।

''सुमेरू'' को लांघकर आगे बढ़ना वर्जित है।

विभिन्न जप कार्यों में विभिन्न मालाओं का प्रयोग

1. शत्रु नाश के लिए–कमलगट्टे की माला।
2. सन्तान प्राप्ति हेतु–पुत्रजीवा की माला।
3. कामना सिद्धि हेतु–चांदी की माला।
4. धन प्राप्ति हेतु–मूंगा की माला।
5. पाप नाश हेतु–कुशा जड़ की माला।
6. भैरव सिद्धि हेतु–मूंगा, शंख, मणि अथवा स्फटिक की माला।
7. देवी देव साधना हेतु–चन्दन एवं रुद्राक्ष की माला।
8. वैष्णवी मत साधना हेतु–तुलसी की माला।
9. गणेश पूजन हेतु–हाथी दांत की माला।

फूल तोड़ने की विधि और मंत्र

पूरब की ओर मुंह कर हाथ जोड़कर मंत्र बोलें–
मा नु शोकं कुरुष्व त्वं स्थान त्यागं च मा कुरू।
देवता पूजनार्थाय प्रार्थयामि वनस्पते।।
पहला फूल तोड़ते समय–''ॐ वरुणाय नमः''

दूसरा फूल तोड़ते समय–''ॐ व्योमाय नमः'' और तीसरा फूल तोड़ते समय–''ॐ पृथिव्यै नमः'' बोलें।

तत्पश्चात् इच्छानुसार फूल तोड़ लें।
(नित्यमय पूजा प्रकाश से)

बिल्वपत्र तोड़ने का मंत्र और बिल्वपत्र तोड़ने का निषिद्ध काल

बिल्वपत्र तोड़ने का मंत्र–

अमृतोद्धव श्री वृक्ष महादेव प्रियः सदा।
गृहणामि तव पत्राणि महाकाली पूजनार्थ मादरात्।।

नोट–उपासको ! उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए पांच बिल्वपत्र तोड़े, अर्थात् 5 बार मंत्र पढ़कर 5 बिल्वपत्र तोड़े। तत्पश्चात् इच्छानुसार तोड़ लें। बिल्वपत्र तोड़ने का निषिद्ध काल–

चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावस्या तिथि को, संक्रान्ति के समय और सोमवार को बिल्वपत्र न तोड़ें, किन्तु बिल्वपत्र शंकर जी व माता काली को बहुत प्रिय है, अतः निषिद्ध समय में पहले दिन का तोड़ा बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिए। शास्त्रों ने तो यहां तक कहा है कि यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाए हुए बिल्वपत्र को ही धोकर बार–बार चढ़ाते रहे। (नित्य पूजा प्रकाश से)

बासी जल, फूल का निषेध

उपासको ! जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गए हों, उन्हें देवताओं पर न चढ़ाएं। किन्तु तुलसी दल और गंगा जल बासी नहीं होते। तीर्थों का जल भी बासी नहीं होता। वस्त्र, यज्ञोपवीत और आभूषण में भी निर्माल्य का दोष नहीं आता। माली के घर में रखे हुए फूलों में बासी दोष नहीं होता। मणि, रत्न, सुवर्ण, वस्त्र आदि से बनाए गए फूल बासी नहीं होते। इन्हें प्रोक्षण कर चढ़ाना चाहिए। (पूजा प्रकाश)

सामान्यतया निषिद्ध फूल

पाठको ! यहां उन निषेधों को दिया जा रहा है जो सामान्यतया सब पूजा में सब फूलों पर लागू होते हैं–

भगवान पर चढ़ाया हुआ फूल ''निर्माल्य'' कहलाता है, सूंधा हुआ या अंग में लगाया हुआ फूल इसी कोटि में आता है। इन्हें न चढ़ाये। भौर के सूंघने से फूल दूषित नहीं होता। जो फूल अपवित्र बर्तन में रख दिया गया हो, अपवित्र स्थान में उत्पन्न हो, आग से झुलस गया हो, कीड़ों से विद्ध हो, सुन्दर न हो, जिसकी पंखुड़ियां बिखर गयी हों, जो पृथ्वी पर गिर पड़ा हो, जो पूर्णतः खिला न हो, जिसमें खट्टी गंध या सड़ांध आती हो, निर्गन्ध हो या उग्र गन्ध वाला हो,– ऐसे पुष्पों को नहीं चढ़ाना चाहिए। जो फूल बाएं हाथ, पहनने वाले अधोवस्त्र आक और रेंड़ के पत्ते में रखकर लाए गये हों वे फूल त्याज्य है। कलियों को चढ़ाना मना है, किन्तु यह निषेध ''कमल'' पर लागू नहीं है। फूल को जल में डुबा कर धोना मना है। केवल जल से इसका प्रोक्षण कर देना चाहिए।

देव-देवता पूजन के लिए विहित पत्र-पुष्प

उपासको ! देवि–देवताओं के ऊपर फूल चढ़ाने का बहुत अधिक महत्व है। शास्त्रों में कहा गया है कि "किसी वेद पाठी ब्राह्मण को सौ–स्वर्ण मुद्राएं दान करने का जितना फल मिलता है, वह भगवान शंकर या माता महाकाली पर सौ फूल चढ़ा देने से प्राप्त हो जाता है।"

कौन–कौन पत्र–पुष्प भगवान व भगवती के लिए विहित है और कौन–कौन निषिद्ध है, इनकी जानकारी अपेक्षित है। अतः उनका उल्लेख यहां किया जाता है–

पहली बात यह है कि भगवान विष्णु के लिए जो–जो पत्र और पुष्प विहित हैं, वे सब भगवान शंकर पर भी चढ़ाए जाते हैं। भगवान शिव की पूजा में–केतकी और केवड़े का फूल निषेध है।

शास्त्रों ने कुछ फूलों के चढ़ाने से मिलने वाले फल का–"तारतम्य" बतलाया है।

जैसे–दश सुवर्ण माप के बराबर सुवर्ण दान का फल एक आक के फूल को चढ़ाने से मिल जाता है। हज़ार आक के फूलों की अपेक्षा एक कनेर का फूल, हज़ार कनेर के फूलों के चढ़ाने की अपेक्षा एक गूमा फूल (द्रोण पुष्प) होता है इस तरह हज़ार गूमा से बढ़कर एक चिचिड़ा हज़ार चिचिड़ों (अपामार्गो–चिरचिरी) से बढ़कर एक कुश का फूल, हज़ार कुश पुष्पों से बढ़कर एक शमी का पत्ता, हज़ार शमी के पत्तों से बढ़कर एक नील कमल होता है। अन्त में शास्त्रों का कहना है कि समस्त फूलों की जातियों में सबसे बढ़कर "नील कमल" होता है।

पुष्पादि चढ़ाने की विधि

उपासको ! फूल, फल और पत्ते जैसे उगते हैं, वैसे ही इसे चढ़ाना चाहिए। उत्पन्न होते समय इसका मुख उपर की ओर होता है, अतः चढ़ाते समय इसका मुख उपर की ओर ही रखना चाहिए। इनका मुख नीचे की ओर न करें। दूर्वा, एवं तुलसी दल को अपनी ओर बिल्वपत्र नीचे मुखकर चढ़ाना चाहिए।

दाहिने हाथ के करतल को उतानकर मध्यमा, अनामिका और अंगूठे की सहायता से फूल चढ़ाना चाहिए।

चढ़ाए हुए फूल को उतारने की विधि

चढ़े हुए फूल को अंगूठे और तर्जनी की सहायता से उतारें।

उपासना से पूर्व मुख्य निर्देश

मन्त्रानुष्ठान अथवा उपासना हेतु नियमों का पालन करना तो अपरिहार्य है ही, कुछ अन्य नियम भी हैं, जिनका पालन करना आवश्यक होता है। अनेक विद्वानों, मर्मज्ञों ने परीक्षण करके इनकी व्यावहारिक उपयोगिता और प्रभाव को स्वीकार किया है।

यदि आप अनुष्ठान रूपी उपासना करना चाहते हैं, मंत्र-यंत्र साधना करना चाहते हैं तो निम्न मुख्य निर्देश का पालन अवश्य करें-

1. स्नान करके शुद्ध, स्वच्छ वस्त्र पहन कर उपासना स्थल में जाना चाहिए।

2. वस्त्र दो ही हों और सिले हुए न हों।

3. साधना स्थल पूर्णतया शान्त, सुरक्षित और एकान्त हो।

4. दिन भर के पहने हुए वस्त्र, अनुष्ठान के समय नहीं पहनने चाहिए।

5. आसन पर एक बार बैठ जाने पर बार-बार उठना उचित नहीं होता।

6. बैठने में शरीर सदैव सीधा रहे, मेरू दण्ड को झुकाना नहीं चाहिए।

7. अनुष्ठान या उपासना में पूजन, जप और आहुतियों की पूर्ति आवश्यक होनी चाहिए।

8. अनुष्ठान आरम्भ करते समय शुभ दिन, तिथि, नक्षत्र, मुर्हूत आदि का विचार अवश्य कर लेना चाहिए। लघु अनुष्ठान के लिए दोनों ''नवरात्रि'' (चैत्र-आश्विन) का समय उत्तम होता है।

9. जप काल में नित्य देवता का आवाहन-विसर्जन करते रहना आवश्यक होता है, परन्तु स्थाई रूप से स्थित प्रतिमा का आवाहन करने की आवश्यकता नहीं होती।

10. अनुष्ठान की समाप्ति पर हवन, तर्पण और मार्जन क्रिया भी बहुत आवश्यक है। इसके पश्चात् दान और ब्राह्मणों एवं कुमारियों की भोजन की भी वरीयता दी गई है।

11. पूरी साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया जाय।

12. श्रृंगार, सज्जा, स्वादेच्छा, पर स्पर्श न करके अपना कार्य स्वयं करें। कार्य और विचार दोनों ही पवित्र एवं स्वच्छ हों।

13. अनुष्ठान प्रारम्भ करने के पूर्व जैसा कुछ ''संकल्प'' (निश्चय) किया जाये, उसका अन्त तक पालन करना चाहिए।

14. अनुष्ठान से बचे समय में भी धार्मिक विषयों का चिन्तन, धर्म चर्चा, आध्यात्मिक विचार वाले लोगों का सामीप्य और इष्ट देवता का स्मरण कल्याण पूर्णतः शुद्ध हो।

15. मंत्र का उच्चारण पूर्णतः शुद्ध हो।

16. अनुष्ठान में मंत्र जप पूर्ण होने के बाद निर्धारित मंत्र का ''दशांस'' मंत्र जप करते हुए हवन में आहुतियां देनी चाहिए।

17. धूप, दीप, अक्षत, चन्दन, गंगाजल, बिल्वपत्र और पुष्प का नियमानुसार प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

उपासना में निषेध

1. प्रतिकूल भोजन सर्वथा त्याज्य है। गरिष्ठ तामसिक भोजन से साधकों की मनोशान्ति और शुचिता नष्ट होती है।

2. कुसंग, अश्लील दृश्य, अनैतिक विषयों की चर्चा, काम चिन्तन, श्रृंगार उत्तेजक वस्तु, दृश्य अथवा वार्तालाप सर्वथा वर्जित है।

3. साधक के लिए अनुष्ठान काल में गांजा, भांग चरस का, एवं शराब, ताड़ी, सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू, आदि को सर्वथा त्यागकर संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिए। साधना में मन लगाने के लिए नशे का नहीं आस्था का अवलम्ब लेना चाहिए।

4. बिना स्नान किए, अपवित्र अवस्था में साधना करना वर्जित है। नग्न होकर उपासना नहीं करनी चाहिए।

5. शिखा खोलकर जप नहीं करना चाहिए।

6. बिना आसन बिछाए नंगी भूमि पर जप वर्जित है।

7. उपासना के समय किसी से वार्तालाप नहीं करना चाहिए।

8. भीड़–भाड़ वाले जनसंख्या स्थान में जप करना निषेध है।

9. माला जपते समय हाथ और सिर खुला नहीं रहना चाहिए। किसी वस्त्र से ढक ले।

10. राह चलते या राह में कहीं बैठकर जप नहीं किया जाता।

11. भोजन करते समय अथवा शयन काल में जप करना वर्जित है।

12. आसन विरूद्ध किसी भी स्थिति में बैठकर, लेटकर या पैर पसार कर जप नहीं किया जाता।

13. छींक, खखार, खांसी, थूकना जैसी व्याधि के समय जप न करें।

14. जप करते समय निर्धारित मणियों द्वारा बनी हुई माला ही होनी चाहिए काम चलाऊ या सजावट के रूप में रेडियम, प्लास्टिक या कांच की माला प्रयोग निषिद्ध है।

15. जप में माला का उपयोग बांये हाथ से न करें।

16. माला के मणियों को नाखून का स्पर्श वर्जित है।

17. जप के समय माला पूरी हो जाने पर "सुमेरू" का उल्लंघन नहीं किया जाता। वहां से फिर उल्टी दिशा में लौट जाना चाहिए।

18. माला जपते समय उंगलियों और मणियों के बीच कोई व्यवधान अन्तर नहीं आना चाहिए।

पंचम भाग

माता महाकाली पूजन आरम्भ खण्ड

नित्य पूजन विधि
(हिन्दी भाषी उपासकों के लिए)

उपासको ! निष्काम भाव से नित्य ही माता काली की उपासना करने वाले उपासक को चाहिए कि वे ब्रह्म मुहूर्त्त में निद्रा को त्यागे। शौचादि से निवृत्त हो स्नान करके पवित्र हो जाएं, फिर पूरब की तरफ़ मुख करके माता काली की प्रतिमा या तस्वीर के सामने समस्त पूजन सामग्री एकत्रित कर लें। लाल या काले कम्बल के आसन पर बैठ जावें। धूप–दीप जगावें। माता काली की प्रतिमा या तस्वीर आम लकड़ी से बने सिंहासन पर काले रंग का वस्त्र बिछाकर स्थापित करें। स्वयं भी काला वस्त्र धारण करें। काले रंग की तौलिया या रूमाल सिर पे अवश्य रखें, इसके पश्चात् ही पूजन आरम्भ करें।

नित्य पूजन सामग्री

माता काली की प्रतिमा या तस्वीर, आम लकड़ी से बना सिंहासन, सिंहासन पर बिछाने हेतु वस्त्र, उपासक के पहनने हेतु काले वस्त्र, दीपक, रूई, देसी घी, धूप या अगरबत्ती, गंगा जल, अक्षत (चावल) पान, सूपारी, लाल चन्दन, नैवेद्य, बिल्वपत्र, पुष्प, यज्ञोपवीत, पुष्प की माला, कपूर, माचिस इत्यादि।

पूजन आरम्भ

नोट—सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुली में गंगा जल लेकर नीचे

लिखित मंत्र को पढ़े। मंत्र समाप्त होते ही अंजुली का जल शरीर पे छिड़क लें।

पवित्र होने का मंत्र

हे अंजुली जल हो गंगा जल, तन-मन करो पवित्र।
हो जाए मेरे देव, नाग, गन्धर्व, व मानव मित्र।।
मेरी विनती हे गंगा माँ, चरण करे स्वीकार।
तन मन हृदय पवित्र करें, माँग रहा हूँ प्यार।।
मन दे ऐसी भावना, हे गंगा के नीर।
रोम-रोम हो कालीमय, कंचन होवे शरीर।।

नोट—मंत्रोच्चारण समाप्त होते ही अंजुली का जल अपने शरीर पर छिड़क लें तत्पश्चात कर जोड़कर गणनायक श्री गणेश की वन्दना करें। क्योंकि किसी भी पूजन के आरम्भ में सर्वप्रथम श्री गणेश पूजन न करें तो उपासना सफल नहीं होती। अतः आत्म शुद्धि के बाद गणेश जी की स्तुति करें—

श्री गणेश आराधना मंत्र

कृपा करें गणनायक जी, शुभता करदें साथ।
ऋद्धि-सिद्धि शुभ-लाभ जी, सब हैं तेरो हाथ।।
सर्वसिद्धि मेरे साथ करें, हे गणपति भगवान।
पूर्ण करें प्रभु कामना, बारंबार प्रणाम्।।

नोट—इसके बाद दाहिनी हथेली पर जल, अक्षत, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र, दूर्वा, नैवेद्य (लड्डू) लेकर नीचे लिखित मंत्र को उच्चारण करें, मंत्र समाप्त होते ही हाथ की वस्तुएं माता काली सिंहासन पर समर्पित कर दें।

श्री गणेश सामग्री समर्पण मंत्र

जल अक्षत चन्दन पुष्प से, गणपति तुझे रिझाता हूँ।
नैवेद्य दुर्वादल सिन्दूर से, अपनी विनय सुनाता हूँ।।
कैसे पूजन मैं करूं? न पूजन का सामान।
हृदय समर्पित करता हूँ, हे गणपति भगवान।।

नोट—अब पुनः गंगा जल अंजुली में लेकर नीचे लिखित मंत्र पढ़े तथा मंत्र समाप्ति के पश्चात् अंजुली जल माता काली जी के सिंहासन पर छिड़क दें।

महाकाली आसन शुद्धि मंत्र

अंजुली जल त्रिवेणी जल बन, आसन करो पवित्र।
होंगे विराजित माता काली, संग में सारे इष्ट।।
आसन करूं पवित्र हे अम्बे, होवें विराजमान।
पास मेरी इक भावना, पूजन का सामान।।
दीन-हीन पर दया करो, कृपालु काली मात्।
सर्वसुखों का साधन दो, रहे न विपदा साथ।।

नोट—इसके पश्चात् करबद्ध होकर प्राथना करें—

प्रार्थना मंत्र

पूजा की विधि मैं न जानूं, हे काली करतार।
एकमात्र मैं माँ-माँ करके, तुझको रहा पुकार।।
आद्या काली अम्बिके, है बारंबार प्रणाम।
इस निर्धन की कुटिया में, ले अपना स्थान।।
खप्पड़ वाली अम्बिके, दे दो मैया प्यार।
भक्ति का वरदान दो, स्तुति बारं-बार।।
पाप हमारी क्षमा करो, मैं बालक अज्ञान।
दया करो जगदम्बिके, शिव-शव-शक्ति महान।।

नोट—इसके पश्चात् गंगा जल से माता काली जी को स्नान करावें। इस क्रम में अंजुली में गंगाजल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें, फिर मंत्र समाप्ति के बाद अंजुली का जल माता काली के मस्तक पर समर्पित करें।

माता काली को स्नान कराने का मंत्र

गंगा की ये पावन जल, अमृत रूप समान।
उस जल से हे जगदम्बे, करा रहा स्नान।।
अपना तन वो मन मेरा, मैया करो पवित्र।
भक्ति हमको दान दें, एक तुम्हीं हो इष्ट।।

नोट—इसके बाद माता जी के चरणों में अक्षत (चावल) निम्न मंत्र उच्चारण करने के बाद चढ़ावें।

अक्षत समर्पण मंत्र

शक्ति और सामर्थ्य नहीं, तण्डुल अर्पित करता हूँ।
हे काली माँ केवल तुझको, स्नेह समर्पित करता हूँ।।
भोलेनाथ के साथ में, सदा बिराजें द्वार।
निर्बल की सुन याचना, हे शिव के आधार।।
दस विद्या महाकाली माँ, कर मेरा उद्धार।
हृदय कलश पे बैठो अम्बे, विनय करो स्वीकार।।

चन्दन लेपन मंत्र

नोट—माता की प्रतिमा के मस्तक पर अब चन्दन लेप करें और निम्न मंत्र को पढ़ें—

मेरे हृदय में सदा बिराजें, चन्दन तुझे चढ़ाऊ मैं।
नेह लगाकर तेरे चरणों में, पुलकित हो लिपटाऊं मैं।।
कराइये माँ अधम से, मस्तक चन्दन लेप।
क्यों बालक से रूष्ट हो, नैन खोलकर देख।।
भवसागर में डूब रहा, मैया सुनो पुकार।
जीवन नैया पार करो, बनके खेवन हार।।

नोट—अब माता काली के मस्तक पे बिल्वपत्र चढ़ावें—

बिल्वपत्र समर्पण मंत्र

शिव का प्यारा बिल्वपत्र, करो "शिवा" स्वीकार।
भक्ति भर दे रोम-रोम, मांग रहा हूँ प्यार।।
ग्रह अनिष्ट को नाश करें, हे सृष्टि के करतार।
धन-जन-सुख सम्पत्ति से, भर मैया भंडार।।

नोट—अब पुष्प समर्पित करें—

पुष्प समर्पण मंत्र

पुष्पों की पंखुड़ियों से माँ, अपना स्नेह जताता हूँ।
सफल करो सब कामना, नित्य ही विनय सुनाता हूँ।।
मेरा मस्तक शव समझके, अपने चरण विराजो जी।
रौशन कर दो सारे जग में, विद्या बुद्धि पाऊँ जी।।

नोट—इसके बाद माता जी को सिन्दूर चढ़ावें।

सिन्दूर समर्पण मंत्र

सिन्दूर से माँ आपका, करता हूँ सम्मान।
भक्ति की शक्ति मिले, मांग रहा वरदान।।
धन-जन दें माँ कामना, हे जग के करता।
मैं बालक अज्ञान हूँ, चमका दे संसार।।

नोट—अब नीचे लिखित मंत्र वन्दना करते हुए अम्बिका को पुष्प माला समर्पित करें।

पुष्प माला समर्पण मंत्र

इन पुष्पों की पंखुड़ियों में, छिपा है हृदय पराग मेरा।
श्रद्धा सुमन समर्पित करते, जगादे अम्बे भाग्य मेरा।।
भक्ति ऐसी दो हमें, युग-युग नहीं भुलाऊं मैं।
जब भी देखूं जहां भी देखूं, एक तुम्हीं को पाऊ मैं।।
हर कष्टों को दूर करो, करो हमारा-त्राण।
धन जन से परिपूर्ण करो माँ, बारंबार-प्रणाम।।

नोट—अब मातेश्वरी को सुगन्धित धूप दिखावें।

सुगन्धित धूप समर्पण मंत्र

मन को माँ हर्षित करने, धूप करे स्वीकार।
सबको तूने तारी मैया, हमको भी अब तार।।
शक्ति सकल मनोरथ दे, पूरण कर सब काम।
तुझे महाकाली माता बारंबार-प्रणाम।।

नोट—अब माता काली को प्रज्जवलित दीप दिखावें।

प्रज्जवलित दीप समर्पण मंत्र

दीपक की लौ से हे माता, भेज रहा संदेश।
विनय करूं हे जगदम्बे, पूरा करो उदेश।।
तुम बिनु मेरा जीवन है, कीट पतंग समान।
हर्षित होकर बालक का, पूर्ण करें अरमान।।

नोट—अब माता को फल, मिठाई इत्यादि नैवेद्य समर्पित करें।

नैवेद समर्पण मंत्र

भक्ष्य पदारथ मधुर भोज्य, कर अम्बे स्वीकार।
और नहीं कुछ पास में, कर मैया उद्धार।।
कृपा करो अनाथ पे, करदो हमें सनाथ।
हृदय विराजो माता जी, सदा रहो तुम साथ।।

नोट—अब दोनों हाथों की अंजुली में पुष्प भरकर ठेहुने के बल बैठकर या खड़े होकर नीचे लिखित प्रार्थना करें। प्रार्थना समाप्त होने के बाद अंजुली का पुष्प माता जी के चरणों में समर्पित कर दें।

पुष्पांजलि प्रार्थना

विनय करूं हे काली मैया, जीवन मेरा संवार।
मैया तार–तार–तार, हे मैया तार–तार–तार।।१।।
बाधा से कह दो हे माता, सीने न लिपटाए।
कहो निराशा से वो हमसे, प्रिती नहीं बढ़ाए।।
दिल से कहदो दरिद्रता से, करे न हमसे प्यार।
मैया तार–तार–तार, हे मैया तार–तार–तार।।२।।
दारूण दुख ने ''खप्पड़वाली'' जियरा मेरा जलाए।
डूबा गम के सागर दिल की, ज्योती बुझती जाए।।
चिन्ता ने नित ही लटकाए, गर्दन पे तलवार।
मैया तार–तार–तार, हे मैया तार–तार–तार।।३।।
लक्ष्मी और सरस्वती माता, मेरे घर बस जाएं।
चरणों में ये दास पड़ा है, इतनी दया दिखाएं।।
खड़ग वाली उलझन से कह दो, करे नहीं लाचार।
मैया तार–तार–तार, हे मैया तार–तार–तार।।४।।
तुम बिनु जग में मुण्डमालिनी, और नहीं कोई मेरा।
अन्धकार में जीवन मेरा, मांगू नया सवेरा।।
अपने इस नांदा बालक का, कर अम्बे उद्धार।
मैया तार–तार–तार, हे मैया तार–तार–तार।।५।।

नोट—पुष्पांजलि प्रार्थना समाप्त होते ही हाथों का पुष्प माता के सिंहासन पर चढ़ावें। तत्पश्चात् ''सिद्ध काली चालीसा'' का पाठ करें। पाठ समाप्त होने के बाद पुस्तक के अन्तिम पृष्ट पर लिखी हुई आरती गावें, साथ ही थाल में पान पत्ते पर कर्पूर की बाती जलाकर मैया को आरती दिखावें। इसके बाद माता को प्रणाम करें। फिर चाय–नाश्ता आदि ग्रहण कर अपने कार्यों में संलग्न हो जावें।

(दोहा)

जय जय जय महादेव के, मध्य वासिनी अम्ब।
देहु दरश जगदम्ब अब, करो न मातु विलम्ब।।
प्रातः काल उठ जो पढ़े, दुपहरिया या शाम।
दुःख दरिद्रता दूर हो, सिद्ध होय सब काम।।

(चौपाई)

जय काली कंकाल मालिनी, जय मंगला महा कपालिनी।
रक्तबीज वध कारिणी माता, सदा से हो भक्तन सुखदाता।।
शिरोभालिका भूषित अंगे, जय काली मधु मध्ये मतंगे।
हर हृदयारविदं सुबिलासिनी, जय जगदम्ब सकल दुख नाशिनी।।
ह्रीं काली श्री महाकाली, क्रीं कल्याणी दक्षिणा काली।
जय कलावती जय विद्यावती, जय तारा सुन्दरी महामती।।
देहु सुबुद्धि हरहु सब संकट, होहु भक्त के आगे परगट।
जय ओंकारे जय हूं कारे, महाशक्ति जय अपरम्पारे।।
कमला कलियुग दर्प विनाशिनी, सदा भक्तजन के भय नाशिनी।
अब जगदम्ब न देर लगावहु, दुःख दरिद्रता मोर हटावहु।।
जयति कराल काल की माता, कालानल समान द्युति गाता।
जय शंकरी सुरेशि सनातनी, कोटि सिद्धि कविमातु पुरातन।।
कर्पिदनी कलि कल्मष मोचन, जय विकसित नवनलिन विलोचनि।
आनन्दा आनन्द निधाना, देहु मातु मोहि निर्मल ज्ञाना।।
करूणामृत सागर कृपामयी, होहु दुष्टजन पर अब निर्दयी।
सकल जीव तोहिं समान प्यारा, सकल विश्व तोरे सहारा।।
प्रलय काल में नर्तन कारिणी, जग–जननी सब जग की पालिनी।
महोदरी माहेश्वरी माया, हिमगिरी सुता विश्व की छाया।।
जय स्वच्छन्द मराद धुनिमाहीं, गर्जत तूहिं और कोऊ नाहीं।
स्फूरति मणि गणकार प्रताने, तारागण तू व्योम–विताने।।
श्री राधा संतन हितकारी, अग्नि समान अतिदुष्ट विदारिनी।
धूम्र विलोचन प्राण विमोचनि, शुम्भ–निशुम्भ मद निबर लोचनि।।
सहस्त्रभुजी सरोरूह मालिनी, चामुण्डे मरघट की वासिनी।
खप्पर मध्य सुशोणित साजी, मारेऊ माँ महिषासुर पाजी।।
अम्ब अम्बिका चण्ड चण्डिका, सब एके तुम आदि–कालिका।

अजा एक रूपा बहु रूपा, अकथ चरित्र अरू शक्ति अनूपा।।
कलकत्ते के दक्षिण द्वारे, मूरति तोर महेश–अगारे।
कादम्बरी पानरत श्यामा, जय मातंगी काम के धामा।।
कमलासन वासिनी कमलायनि, जय श्याम जय जय श्यामायनि।
रासरते नवरसे प्रकृतिहे, जयति भक्त ऊर कुमति सुमतिहे।।
कोटि ब्रह्म शिव विष्णु कर्मदा, जयति अहिंसा धर्म जन्मदा।
जल–थल–नभ मंडल में व्यापिनी, सौदामिनी मध्य अलापिनी।।
झननन तच्छुमरनि रिननादिन, जय सरस्वती वीणा वादिनी।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै, कलित गले कोमल रूण्डायै।।
जय ब्रह्मण्ड सिद्ध कवि माता, कामाक्या औ काली–माता।
हिंगलाज विन्ध्याचल वासिनी, अट्टहासिनी अध नाशिनी।।
कितनी स्तुति करो अखण्डे, तू ब्रह्माण्ड शक्ति जितखण्डे।
यह चालीसा जो भी गावे, मातु भक्त वांछित फल पावे।।
केला अरू फल फूल चढ़ावे, ''मांस खून कछु नहीं छुवावे।''
सबकी तू समान महतारी, काहे कोई ''बकरी'' मारी।।

(दोहा)

सब जीवों के जीव में, व्यापक तू ही अम्ब।
कहत भक्त सब जगत में, तोरे सुत जगदम्ब।।
शरणों में चरणों में पड़ा, कर मातु कल्याण।
करता है ''तूफान'' अम्बिके, बारंबार प्रणाम।।

आद्या शक्ति माता काली जी ''वैदिक'' वृहद ''षोडषोपचार पूजन''

सर्वकामना प्राप्ति हेतु सोलह उपचारों द्वारा पूजन

उपासको ! वेदों व शास्त्रों में देवि–देवताओं को प्रसन्न करने हेतु उपासना विधि में सर्वोत्तम उपासना विधि–''षोडशोपचार पूजन'' को माना गया है। षोड़षोपचार पूजन का अर्थ होता है–''सोलह उपचारों द्वारा पूजन विधि सम्पन्न करना। ये सोलह उपचार निम्न प्रकार है–''

1. आवाहन, 2. आसन, 3. पाद्य, 4. अर्घ्य, 5. आचमन, 6. स्नान, 7. वस्त्र, 8. यज्ञोपवीत, 9. चन्दन, 10. अक्षत, 11. पुष्प, 12. सिन्दुर, 13. पान–सुपारी, 14. धूप–दीप, 15. नैवेद्य, 16. प्रदक्षिणा–दक्षिणा।

उपासको ! षोडशोपचार पूजन में निम्नलिखित सामग्रियों की आवश्यकता होती है–

पूजन सामग्री

आम की लकड़ी से बना काले रंग से रंगा सिंहासन (यदि प्रतिमा स्थाई रूप से मन्दिर में प्रतिष्ठित हो तो सिंहासन की आवश्यकता नहीं) सिंहासन पर बिछाने हेतु काला वस्त्र, माता हेतु साड़ी सहित समस्त वस्त्र, श्रृंगार की वस्तुएं, पुरोहित के लिए धोती एक जोड़ा, गमछा, बनियान, चादर, यजमान के लिए नवीन वस्त्र, जनेऊ, 5 लाल अबीर (गुलाल) गेहूं का आटा, पान–सूपारी, काले तिल, सिन्दूर, लाल चन्दन, गाय का घी, धूप, अगरबत्ती, रूई, कपूर, पंचरत्न, सर्वोसधि, मिट्टी का घड़ा–1, पानी वाला नारियल–1, सूखा नारियल हवन के लिए–1, केले, लड्डू, फूल माला, पुष्प, बिल्वपत्र, आम का पल्लव, केले के पत्ते, गंगाजल, अरघी, पंचपात्र, आसन हेतु दो काले कम्बल, चौमुखी दीपक, आम की लकड़ी, माचिश, दुर्वादल, गाय का गोबर, शहद, गाय का दही, गाय का दूध, काली माता की तस्वीर, आरती स्टेण्ड, जौ अभिषेक पात्र, भगोने, गिलास, पूजन की पुस्तकें, विग्रह को पोंछने हेतु वस्त्र, थाली, कटोरी, शंख, केशर,पंचमेवा, मोली, सात रंगों में रंगाया चावल, भेंट में देने के लिए द्रव्य आदि।

पूजन प्रारम्भ

माता महाकाली के श्रद्धालु भक्तो ! माता की षोड़षोपचार पूजन–दिवाली की रात्री बारह बजे आरम्भ करें, अथवा किसी भी शनिवार के दिन में पूजन कर सकते हैं।

उपरोक्त समय में प्रातः काल (दिवाली में रात बारह बजे) स्नानादि से पवित्र हो जायें। फिर पूजा स्थल पर आम लकड़ी से बना सिंहासन स्थापित करें, समस्त पूजन सामग्री अपने पास इकट्ठे कर लें। सिंहासन पर काला वस्त्र बिछाकर माता काली की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें। तत्पश्चात् पूजन स्थल पर गंगा जल छिड़कें, धूप जगावें, फिर पवित्र तन–मन से गाय घी और रूई की बाती का चौमुखी दीप प्रज्जवलित करें। दीपक जलाकर माता जी सिंहासन के सामने–पास में दाहिनी ओर अक्षत पुंज पर (चावल छिड़क कर) प्रज्जवलित दीपक रखें। यह पूजन योग्य वैदिक पंडित द्वारा ही सम्पन्न करावें तो अति लाभकारी सिद्ध होगा, क्योंकि योग्य पंडित के रहते पूजन में असुद्धि नहीं आती। सम्भव न हो तो स्वयं ही शुद्ध विधि से कम्बल के आसन पर पूरब मुख सिंहासन के सामने बैठकर पूजन आरम्भ करें।

पूजन आरम्भ से पहले सिर पे काले रूमाल या काला तौलिया अवश्य रख लें, स्वयं भी काले रंग का ही वस्त्र धारण करें।

सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुली में गंगाजल लेकर निम्न मंत्र पढ़े और मंत्र समाप्ति के बाद अंजुली का जल शरीर पर छिड़क लें।

शरीर पवित्र करने का मंत्र

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरी काक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः।।
ॐ पुण्डरी काक्ष पुनातु।।

हिन्दी अनुवाद–कोई पवित्र हो, अपवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हो, जो ''पुण्डरीकाक्ष'' का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से भी परम पवित्र हो जाता है, अतः हे ''ऊँ रूप पुण्डरी काक्ष'' हमें पवित्र करें।

नोट–अब दीपक की पूजा करें–

दीप पूजन मंत्र

''ॐ ज्योतिषे नमः''

यह मंत्र मुख से बोलकर–जल, अक्षत, पुष्प, चन्दन, बिल्वपत्र, नैवेद्य दीपक के पास चढ़ावें। फिर उस दीप में माता काली रूप की भावना करते हुए हाथ जोड़कर यह श्लोक बोले–

''भो दीप देवी रूपस्त्वं कर्म साक्षी ह्यविघ्न कृत।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।''

हिन्दी अनुवाद–''हे दीप ! आप माता काली के रूप हैं, कर्म के साक्षी तथा विघ्न के निवारक हैं, जब तक पूजन कर्म पूरा न हो जाय, तब तक आप सुस्थिर भाव से सन्निकट रहें।''

नोट–इसके पश्चात् निम्न मंत्रों को पढ़कर तीन बार आचमन करें–

आचमन मंत्र

ॐ केशवाय नमः। ॐ नाराणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

तत्पश्चात्–

ॐ हृषिकेशवाय नम–मंत्र पढ़कर हाथ धो लें। फिर दाहिने हाथ के अंगूठे से चौथी उंगली में कुशा से बना पवित्री (अंगूठी) या सोने अथवा तांबे की अंगूठी निम्न मंत्र पढ़कर धारण करें।

पवित्री धारण मंत्र

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुणा-म्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्यते पवित्रपते पूतस्स्य यत्कामः पुणे तच्छकेचम्।।

नोट—अब पंडित यजमान के हाथ में रक्षा सूत्र मौली बांध दें। तत्पश्चात् हाथ जोड़कर विनियोग मंत्र पढ़े—

विनियोग मंत्र

अस्य श्री दक्षिण कालिका मन्त्रस्य भैरव ऋषि, उष्णिक छन्दः, दक्षिण कालिका देवता, ह्रीं बीजं, हुं शक्ति, क्रीं कीलकं, मम अभीष्ट सिद्धियर्थे जपेविनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि, उष्णिक छन्दसे नमः मुखे, दक्षिण कालिका देवतायै नमः हृदि, ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, हुं शक्तये नमः पादयोः, क्रीं कीलकाय नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वांगे,

करन्यास मंत्र

ॐ क्रां अगुंष्टाभ्यां नमः। ॐ क्रीं तर्जनीभ्याः नमः। ॐ क्रुं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्रौं कनिष्काभ्यां नमः। ॐ क्रः करतल पृष्टाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास मंत्र

ॐ क्रां हृदयाय नमः। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ क्रूं शिखायै वषट्। ॐ क्रैं कवचाय हुम्।
ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट। ॐ क्रः अस्त्राय फट्।

नोट—हृद्रयादि न्यास करने के पश्चात् मस्तक पर निम्न मंत्र पढ़ते हुए चन्दन लगावें—

चन्दन लेपन मंत्र

ॐ चन्दनस्य महत्वपुण्यं पवित्र पापनाशनम।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी स्तिस्थि सर्वदा।।

नोट—अब निम्न मंत्र पढ़कर शिखा बांधें—

शिखा बन्धन मंत्र

ॐ मानस्तोके तनये मानङ्ग आयुषि मानौ गोषु मानोऊ अश्वेषु रीरिषः।
मानो वीरान रूद्र भामिनो वधीर्ह है विष्मन्तः- सदमित्वा हवामहे।।

नोट--इसके पश्चात् भगवान गणेश का ध्यान करें। किसी भी पूजन में सर्व प्रथम शुभता के दाता श्री गणेश जी की पूजा की जाती है, तभी कोई भी उपासना में सफलता मिलती है।

श्री गणेश आराधना मंत्र

विश्वेश माधवं दुन्दि दण्डपाणि।
बंदे काशी गुह्या गंगा भवानी मणिक कीर्णकाम्।।
वक्रतुण्डं-महाकाव्य कोटि सूर्य सम प्रभ।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
सुमखश्यैक दन्तस्य कपिलो गज कर्णकः।
लम्बोदरस्य विकटो विघ्ननासो विनायकः।।
धूम्रकेतु र्गणाध्यक्ष तो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशै तानि नमामि च पटेच्छणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लां वर धरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायते सर्वविघ्नोप शान्तये।।
अभित्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो य सुरासैरः।
सर्व विघ्नच्छेद तस्मै गणधिपते नमः।।

हिन्दी अनुवाद—हे विश्वनाथ, माधव दुण्ढिराज गणेश, दण्डपाणि, भैरव, काशी, गुह्या, गंगा तथा भवानी कर्णिका का मैं वन्दना करता हूँ। टेढ़ी सूंड वाले गणपति देव ! आप सर्वदा सदैव समस्त कार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें।

सुमुख. एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भाल चन्द्र और गजावन—ये विवाह, गृह प्रवेश, यात्रा, संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का पाठ और श्रवण करता है, उसके कार्य में विघ्न उत्पन्न नहीं होता है।

शक्ल धारण करने वाले चन्द्रमा के समान और गौर, चार भुजाधारी और प्रसन्न मुख वाले गणपति देव मैं आपका ध्यान करता हूँ। हमारे सम्पूर्ण विघ्नों को शान्त करें।

देवताओं और असुरों ने भी अभिष्ट मनोरथ सिद्धि के लिए जिनकी पूजा की है, विघ्न बाधाओं को हरने वाले हैं, उन गणपति जी को नमस्कार है।

नोट—इसके पश्चात् पृथ्वी की पूजा करें। इस सन्दर्भ में दाहिने हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्त होते ही जल पृथ्वी पर छोड़ दें।

पृथ्वी शुद्धि मंत्र

ॐ अपर्षन्तु ये भूता ये भूता भूवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्ता रश्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

नोट—अब पूजन का ''संकल्प'' करें—

इस संदर्भ में दाहिने हाथ की अंजुली पर पान, सूपारी द्रव्य, गंगाजल, अक्षत, पुष्प, तिल लेकर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें। संकल्प मंत्र के मध्य जहां—जहां भी ''अमुक'' शब्द का उच्चारण किया गया है, वहां क्रमशः मास, तिथि, नक्षत्र, करण, राशि, निवास स्थान आदि उच्चारण करें।

काली पूजन ''संकल्प'' मंत्र

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णु श्री मद् भगवतो महा पुरूषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्राह्मणोह्निं द्वितीय प्रहरार्द्धे, श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत-मनवन्तरे अष्टांविशा तितमे युगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोक जम्बू द्विपे भारत वर्षे भरत खण्डे आर्यावर्त देशे ''अमुक'' नगरे, अमुक ग्रामे, अमुक स्थाने वा वोद्धावतारे अमुक नाम संवत्सरे श्री सूर्य अमुकायने अमुक तौ महामांगल्य प्रद मासोत्तमे मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे अमुक वासरे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशि स्थिते देव गुरौ शेषेसु ग्रहेषु च यथा अमुक शर्मा महात्मनः मनोकामना पूर्ति, धन, जन, सुख सम्पदा प्रसन्नता परिवार सुख शान्ति, ग्राम सुख शान्ति हेतु,

सफलता हेतु श्री महाकाली पूजन-कलश स्थापन-हवन-कर्म-आरती कर्म अहम् करिष्येत।

नोट—हथेली की वस्तुएं माता जी के सिंहासन पर समर्पित कर दें। अब आप ''स्वस्ति वाचन'' के ग्यारह मंत्र पढ़ें। इस मंत्र का उच्चारण करते समय उपासक हाथ में चावल लेकर—दो चार दाने कर पूजा स्थल के सिंहासन पर छिड़कते जाएं, यह चावल तब तक छिड़कते रहें जब तक सम्पूर्ण (ग्यारह) मंत्र पढ़कर पूर्ण न कर लें।

''स्वस्ति वाचनम'' के पांच मंत्र

(पहला मंत्र)

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो पद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिन स्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

हिन्दी अनुवाद—अत्यन्त यशस्वी इन्द्र हमारा कल्याण करने वाले हों। जिनके संकट नाशक चक्र को कोई रोक नहीं सकता वह परमात्मा गरुड़ और बृहस्पति हमारा कल्याण करें।

(यं० वे० २५/१९/ से प्राप्त)

(दूसरा मंत्र)

पचः पृथिव्यां पचः ओषधिषु पयो दिव्यन्त।
रिक्षे पयोधाः पश्यवति प्रदिशाः सन्तु मह्यम।।

हिन्दी अनुवाद—हे अग्ने तुम पृथ्वी में रस को धारण करो, औषधि में रस की स्थापना करो, स्वर्ग में और अन्तरिक्ष में भी रस को स्थापित करें। मेरे लिए दिशा—प्रदिशा सभी रस देने वाले हो।

(य० वे० १८/३९)

(तीसरा मंत्र)

ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्षग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिः रापः शान्तिः रोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिः विश्व देवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः स्वर्ग्वं शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामा शान्तिः शान्ति रेधि।। सुशान्ति-र्भवतु।।

हिन्दी अनुवाद—स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथ्वी शान्त रूप हो। जल

औषधि, वनस्पति, विश्व देवता, ब्रह्म रूप ईश्वर, सब संसार शान्ति रूप हो, जो साक्षात शान्ति है, वह भी मेरे लिए शान्ति देने वाली हो।
(य० बे० ३६/१७)

(चौथा मंत्र)

इमा रूद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्विराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमशादि द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन नातुरम।।

हिन्दी अनुवाद–पुत्रादि मनुष्यों और गादि मनुष्यों में जैसे कल्याण की प्राप्ति हो और इस ग्राम के मनुष्य उपद्रव से रहित हों, उसी प्रकार मैं अपनी श्रेष्ठ मतियों को जटाधारी रूद्र के निमित्त अर्पित करता हूं।
(य० बे० १६/४८)

(पांचवां मंत्र)

ॐ गणानात्वा गणपति ग्वं हवामहे प्रिया नांत्वा प्रियपति ग्वंहवामहे निधिनांत्वा निधिपति ग्वं हवामहे वसो नम। आहम जानि गर्भध मात्व मजासि गर्भधम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे गणपति ! तुम सब गणों के स्वामी हो, हम तुम्हें आहुत करते हैं। प्रियों के मध्य निवास करने वाले प्रियों के स्वामी हम तुम्हें आहुत करते हैं। हे निधियों के मध्य निवास करने वाले निधिपते ! हम तुम्हें आहुत करते हैं। तुम श्रेष्ठ निवास करने वाले रक्षक होओ। मैं गर्भधारण जल को सब प्रकार से आकर्षित करते हैं, तुम गर्भधारण करने वाले को अभिमुख करते हो। तुम सब पदार्थों के रचयिता होते हुए सब प्रकार से अभिमुख होते हो। (य० ब० २३/१९)

नोट–उपासको ! इसके पश्चात् भगवान विष्णु का पूजन करें। किसी भी पूजन में गणपति पूजन के बाद भगवान विष्णु एवं पंच देवता की पूजा की जाती है। इस संदर्भ में केले के पत्ते पर सिंहासन के दाहिने तरफ पांच पान के पत्ते, पांच सुपारी और नैवेद्य रखें और उसी पर भगवान विष्णु एवं पंचदेवता की पूजा करें। इस क्रम में सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्ति के बाद जल पान पत्ते पर रख दें। इसी प्रकार क्रमशः अक्षत, तिल, चन्दन, बिल्वपत्र, पुष्प, तुलसी दल, नैवेद्य और पुनः जल से पूजन करें।

भगवान विष्णु एवं पंचदेवता का पूजन

गंगा जल से–

ॐ गंगाजले स्नानियम् भगवते श्री विष्णवे नमः।

अक्षत से-

अक्षत से–

इदम् अक्षदम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

तिल से–

एते तिला समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

चन्दन से–

इदम् चन्दनम लेपनम समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः

बिल्वपत्र से–

इदम बिल्व पत्राणियम समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः

पुष्प से–

इदम् पुष्पम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

नैवेद्य से–

इदम नैवेद्यं समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

पुनः गंगाजल से–

एतानि गंध पुष्प धूप दीप ताम्बूल यथा भाग नैवेद्यानि भगवते श्री विष्णेव नमः।

नोट–उपरोक्त विधि और मंत्र से ही ''पंचदेवता'' का पूजन उसी स्थान पर करें। पूजन के अन्तर्गत जहां ''विष्णवे नमः'' शब्द कहा गया है उस स्थान पर ''पंचदेवता नमः'' शब्द उच्चारण करें।

पंचदेवता पूजन समाप्त होने के पश्चात् माता काली जी के ''कलश'' की स्थापना करें।

माता काली कलश स्थापना विधि और कलश पूजन

नोट—सर्वप्रथम सतंरगे गुलाल से अष्टदल कमल पूजा स्थल पर माता काली सिंहासन के आगे बनावें। पश्चात् शुद्ध मिट्टी या जौ का थड़ा बनावें। उस थड़ा के मध्य सिन्दूर से पांच तिलक किया हुआ जल से भरा घड़ा रखें। तत्पश्चात् कलश के पेंदे के पास हाथ रखकर यह मंत्र पढ़ें—

कलश भूमि स्पर्श मंत्र

ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वछाया विश्वस्य भुवनश्य धत्रीं पृथिवीं दुखहिं पृथिवीं मां हिसी।

नोट—इसके पश्चात् कलश के मुख को दाहिनी हथेली से बन्द करके निम्नलिखित मंत्र पढ़े—

ॐ वरूणस्योत्तम्भ वरूणस्य स्कम्भ सर्जनी स्थां वरूणस्य ऋतसदन्यसि वरूणस्य ऋतसदनमीस वरूणस्य ऋतसदनमासीद्।

नोट—अब कलश में सर्वोसधि डालें।

कलश सर्वोसधि समर्पण मंत्र

ॐ या औषधि पूर्वाजाता देवेभ्य स्त्रियुगम्पुरा।
मनैनुवभ्रणामहग्वं शतन्धामणि सप्त च।।

नोट—कलश में दुर्वा डालें।

कलश दुर्वादल समर्पण मंत्र

ॐ काण्डात-काण्डात प्ररोहन्ति पुरुषः परूषस्परि।
एवानो दुर्वेप्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

नोट—कलश में पुंगीफल (सुपारी) डालें—

कलश पुंगीफल समर्पण मंत्र

ॐ या फलिनीयां अफलां अपुष्पा यास्य पुविषणीः।
बृहस्पतिः प्रसूतास्तानो मुञ्चनत्वग्वं हसः।।

नोट—अब कलश में पंचतत्व डालें—

कलश पंचरत्न समर्पण मंत्र

ॐ परिवाज पतिः कविरग्नि हॅव्यान्य क्रमी दधद्रत्नानि दाशुषे।

अब कलश में सुवर्ण या द्रव्य डालें—

कलश द्रव्य समर्पण मंत्र

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीद्या मुतोमाङ्ग कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

अब कलश में आम का पल्लव डालें—

आम्र पल्लव समर्पण मंत्र

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयंति कस्यद्।

किंजिद वासिनं कलशं दद्यात।।

नोट—अब कलश पे पानी वाला नारियल रखें—

कलश श्री फल समर्पण मंत्र

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्य पत्न्या बहोरात्रो पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनो व्याप्तम। इष्पान्नि षाणां मुम्म इषाण सर्व लोकम्प ईषाण।।

नोट—कलश में लाल वस्त्र एवं मौली लपेटें।

कलश वस्त्र समर्पण मंत्र

ॐ वस्त्रो पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्र मसि सहस्त्र धारम।

देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्वा काम धुक्षः।।

नोट—अब कलश के साथ गाय का गोबर स्पर्श करावें।

कलश में गाय का गोबर स्पर्श मंत्र

ॐ मानस्तोषे तनयेमान आयुष्मान व्यर्दिवृविषः सदमित्वा हवामहे इति गोमयेन कलश स्पर्शयेत।

नोट—अब हाथ जोड़कर वरुण देव का आवाहन करें—

श्री वरूण देव आवाहन मंत्र

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त यजमानो हविर्भिः। अहेऊ मानो वरूणेह बोध्युषग्वं आयुः प्रमोषि।।

ॐ भुर्भूवः स्वः भो वरूण इहतिष्ठ। स्थापयामि पूजयामि।

नोट—इसके पश्चात् सम्पूर्ण तीर्थ एवं नदियों का कलश पे आवाहन करें—

सम्पूर्ण तीथों एवं नदियों का आवाहन

ॐ सर्वे समुद्रा सरितसंतिर्थानी जलदाः नदाः आयान्तु देविः पूजार्थ दुरितक्ष्कारकाः। कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः।।

कलश प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

नोट—निम्न मंत्र पढ़ते हुए कलश पर अक्षत छिड़कें—

ॐ मनोजूतिर्जुषताभाज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञामिवं तनोत्व रिष्टं यज्ञ सीममं दधातु। विश्व देवास इह महाकाली महाकाल सर्व देव सवेदेवि मादयन्तामे इह प्रतिष्ट।

नोट—अब कलश पर वरूण देव, नवग्रह, इष्टदेव लक्ष्मी, सरस्वती, नवदुर्गा, राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, राधा—कृष्ण, ग्राम देवता, कुदेवता, भगवान शिव, गौरी, आदि समस्त देवि—देवताओं की पूजा इस प्रकार करें जैसे पीछे भगवान विष्णु का पूजन किए हैं। तत्पश्चात् माता काली का आवाहन करें।

माता काली आवाहन मंत्र

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्प निषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्त शंकर प्रिये।।

नोट—सिंहासन पर बिछे वस्त्र का स्पर्श करते हुए यह मंत्रोच्चारण करें—

महाकाली आसन समर्पण मंत्र

ॐ विचित्र रत्न खचितं दिव्यास्तरण संयुक्तम्।
स्वर्ण सिंहासन चारू गृहीष्व महाकाली पूजितः।।

हिन्दी अनुवाद—हे मातेश्वरी काली माता ! यह सुन्दर स्वर्णमय सिंहासन ग्रहण कीजिए, इसमें विचित्र रत्न जड़े गये हैं, तथा इस पर दिव्य बिस्तर बिछा हुआ है।

नोट—अब हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़े, मंत्र समाप्त होते ही जल सिंहासन पर छोड़ दें।

पाद्य जल समर्पण मंत्र

ॐ सर्वतीर्थ समूद भूतं पाद्यं गन्धदिभिर्युतम।
अनिष्ट हर्त्ता गृहाणेदं भगवति भक्त वत्सला।।
ॐ श्री दक्षिणा काली नमः। पाद्योः पाद्यं समर्पयामि।।

हिन्दी अनुवाद—हे भक्त वत्सला माता काली ! यह सारे तीर्थों के जल से तैयार किया गया तथा गंध (चन्दन) आदि से मिश्रित पाद्य जल, पैर पखारने हेतु ग्रहण करे।

नोट—पुनः अरघी से चन्दन युक्त जल सिंहासन पर निम्न मंत्र उच्चारण कर समर्पित करें।

माता काली को अर्घ्य समर्पण मंत्र

ॐ श्री मातेश्वरी दक्षिणा कालिकाय नमस्तेस्तु गृहाण करूणाकारी।
अर्घ्यं च फलं संयुक्तं गंधमाल्याक्षतै-युतम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे माता दक्षिणा काली ! आपको नमस्कार है। आप गन्ध, पुष्प अक्षत और फल आदि रसों से युक्त यह अर्घ्य जल स्वीकार करें।

नोट—अब निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए अरघी से तीन बार जल सिंहासन पर छोड़ें।

माता काली को आचमन कराने का मंत्र

मातेश्वरी दक्षिणा कालिका नमस्तुभ्यं त्रिदेशेरेभिवन्ति।
गंगोदकेन देवेशि कुरुष्वा चमनं भगवतिः।।
श्री माता काली नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

हिन्दी अनुवाद—हे शिव महाशक्ति भगवती काली मां ! आपको नमस्कार है। आप गंगाजल से आचमन करें।

नोट—इसके पश्चात् अरघी में दूध भरकर माता काली की प्रतिमा को स्नान करावें।

माता काली को दूध से स्नान कराने का मंत्र

भगवति कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवन परम्।
पावनं यज्ञाहेतुश्य पयः स्नानार्थं समर्पितम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे भगवती ! काम धेनु के थन से निकला, सबके लिए पवित्र, जीवन दायी तथा यज्ञ के हेतु यह दुग्ध आपके स्नान हेतु समर्पित है।

नोट—अब अरघी में दही लेकर माता काली को स्नान करावें।

दधि स्नान मंत्र

शिवा भवानी पयस्तु समुद्भुतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे शिवा भवानी महेश्वरी काली जी ! यह दूध से निर्मित खट्टा—मीठा चन्द्र के समान उजला दही ले आया हूँ। आप इससे स्नान कीजिए।

नोट—इसके पश्चात् अरघी में गाय का घी लेकर माता काली को स्नान कराईये।

माता काली को घृत से स्नान कराने का मंत्र

भो भगवती नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोष कारकम्।
धृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे खड़ग वाली माँ ! मक्खन से उत्पन्न तथा सबको संतुष्ट करने वाला यह गाय का घृत आपको अर्पित करता हूँ। आप इससे स्नान कीजिए।

नोट—अब अरघी में शहद भरकर माता काली को स्नान करावें।

माता काली को शहद से स्नान कराने का मंत्र

भो खप्पड़वाली मातुः पुष्प रेणु समुद भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेज पुष्टि करं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम।।

हिन्दी अनुवाद—हे खप्पड़वाली माता जी ! पुष्प के पराग से उत्पन्न, तेज की पुष्टि करने वाला दिव्य स्वादिष्ट मधु आपके समक्ष प्रस्तुत है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

नोट—इसके पश्चात् शक्कर घोले रस से माता काली को स्नान करावें।

शर्करा रस से स्नान कराने का मंत्र

मुण्डमालिनी मातेश्वरी इक्षुसार समुद भुतं शर्करा पुष्टिवा शुभा।
मलाप हारिका दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे मुण्डमालिनी मातेश्वरी काली माँ ! ईख के सार तत्व से यह शर्करा रस निर्मित है, जो पुष्टि कारक, शुभ तथा मैल को दूर करने वाली है, यह दिव्य शर्करा रस आपकी सेवा में प्रस्तुत है।

नोट—अब माता काली की प्रतिमा को पुनः गंगा जल से स्नान करावें।

शुद्धोदक स्नान मंत्र

गंगा च यमुनाचैव गोदावरी सरस्वती।
नर्वदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे दयामयी अम्बे ! यह शुद्ध जल के रूप में गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्वदा, सिन्धु और कावेरी यहां विद्यमान हैं। शुद्धोदक स्नान के लिए यह जल ग्रहण करें।

नोट—अब माता जी के उपर सुगन्धित इत्र छिड़कें।

सुवासित स्नान मंत्र

चम्पा काशोक सकुल मालती मोगरादिर्भिः।
वासित स्निग्धता हेतु तैल चारू प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे भक्त रक्षिका काली माता जी ! चम्पा, अशोक, मौलसरी, मालती और मोगरा आदि से वासित तथा चिकनाहट के हेतु यह तेल और इत्र आप ग्रहण करें।

माता काली को वस्त्र समर्पण मंत्र

भो भक्तप्रिया मातुः शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम देव लंकारणं वस्त्रभतः शान्ति प्रयच्छ मे।।

हिन्दी अनुवाद—हे भक्तप्रिया मातेश्वरी यह वस्त्र आपकी सेवा में समर्पित है। यह सर्दी गर्मी, हवा से बचाने वाला, लज्जा का उत्तम रक्षक तथा शरीर का अलंकार है, इसे ग्रहण कर हमें शान्ति प्रदान करें।

नोट—अब प्रतिमा के मस्तक में चन्दन लगावें।

चन्दन समर्पण मंत्र

श्री खण्ड चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपन दक्षिणा कालीः चन्दनं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे करुणामयी दक्षिणा काली माँ ! यह दिव्य श्री खण्ड रक्त चन्दन सुगंध से पूर्ण तथा मनोहर है। विलेपन के लिए यह चन्दन स्वीकार करें।

नोट—अब माता काली जी के ऊपर अक्षत छिड़कें।

माता काली जी को अक्षत समर्पण मंत्र

अक्षतास्य भगवतिः कंकु भाक्त सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।

हिन्दी अनुवाद–हे परमेश्वरी ! ये कुंकुम (लाल गुलाल) में रंगे हुए सुन्दर अक्षत हैं, आपकी सेवा में समर्पित करता हूँ, इन्हें ग्रहण कीजिए।

नोट–अब माता काली को बिल्वपत्र एवं पुष्प चढ़ाइये।

बिल्वपत्र एवं पुष्प समर्पण मंत्र

बन्दारूज नाम्बदार मन्दार प्रिये धीमहि।
मन्दार जानि रक्त पुष्पाणि स्वेताकार्दीन्मुपेहि भो।।

हिन्दी अनुवाद–वन्दना करने वाले भक्तों के लिए मन्दार कल्प वृक्ष के समान कामना पूरक है। हे मन्दार प्रिये माहेश्वरी काली जी, मन्दार तथा लाल पुष्प आप कृपया ग्रहण करें।

माता काली जी को पुष्प माला अर्पण मंत्र

भगवतिः माल्यादीनि सुगन्धिनि माल्यादीनि वै देविः।
मयाहृतानि पुष्पाणि गृहायन्ता पूजनाय भो।।

हिन्दी अनुवाद–हे भगवती ! लाल पुष्प मालती इत्यादि पुष्पों की मालाएं और पुष्प आपके लिए लाया हूँ, आप इन्हें पूजा के लिए ग्रहण करें।

माता काली जी को सिन्दूर समर्पण मंत्र

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुख वर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रति गृह यन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे मातेश्वरी चण्डिेक ! सुन्दर लाल, सौभाग्य सूचक, सुखवर्द्धन, शुभद, तथा काम पूरक सिन्दूर आपकी सेवा में अर्पित है। इसे स्वीकार करें।

नोट–इसके पश्चात् माता जी के चरणों में लाल गुलाल समर्पित करें।

लाल गुलाल अर्पण मंत्र

नाना परिमले र्द्व्यौ निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
गुलाल नामकं चूर्ण गन्धाढ्यं चारू प्रति गृह यन्ताम।।

हिन्दी अनुवाद–हे मंगला काली माँ ! तरह–तरह के सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित यह गन्ध युक्त गुलाल नामक उत्तम चूर्ण ग्रहण कीजिए।

नोट–अब माता काली को सुगन्धित धूप या अगरबत्ती दिखावें।

सुगन्धित धूप अर्पण मंत्र

वनस्पति, रसोद, भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोढ्यं प्रतिगृह यन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे भक्तवत्सला भगवती ! वनस्पतियों के रस से निर्मित सुगन्दित उत्तम गन्ध रूप और समस्त देवि-देवताओं के सूंघने योग्य यह धूप आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

नोट—अब माता जी को प्रज्जवलित दीप दिखावें।

माता काली जी का दीप दर्शन मंत्र

साज्यं य वर्तिसंयुक्त वहिनां योजितं मया।
दीप गृहाण त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवि महेश्वरी।
त्राहि मां निरयाद् घोरा हो पज्योतिर्न भोस्तुतते।।

हिन्दी अनुवाद—हे मातेश्वरी ! घी में डुबोई रूई की बत्ती को अग्नि से प्रज्जवलित करके दीपक आपकी सेवा में अर्पित कर रहा हूँ। इसे ग्रहण कीजिए। यह दीप त्रिभुवन के अन्धकार को मिटाने वाला है। मैं अपनी माता श्री दक्षिणा काली को यह दीप अर्पित करता हूँ। हे देवि! आप हमें घोर नरक से बचाइये।

नोट—इसके पश्चात् विभिन्न प्रकार की मिठाईयां व नाना प्रकार के फल नैवेद्य समर्पित करें।

नैवेद्य सम्पर्ण करने का मंत्र

नैवेद्य गृह यन्ताम देविः भक्ति में ह्यचलं कुरू।
ईप्सित में वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।
शर्करा खण्ड खाद्यानि दीव्यक्षीर घृताणि च।
आहारं भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रति गृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे भक्तवत्सला माहेश्वरि ! आप यह नैवेद्य ग्रहण करें तथा मेरी भक्ति को अविचल करें। मुझे वांछित वर दीजिए और परलोक में परम गति प्रदान कीजिए। शक्कर व चीनी से तैयार किए गये खाद्य पदार्थ दही, दूध, घी, एवं भक्ष्य भोज्य विभिन्न फल आहार नैवेद्य के रूप में अर्पित है, इसे स्वीकार कीजिए।

नोट—अब सिंहासन पर पान बीड़ा चढ़ावें।

पान बीड़ा समर्पण मंत्र

ॐ पूंगीफल महाद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे दया सिन्धु मातेश्वरी काली ! महान दिव्य पूंगीफल, इलायची, और चूना आदि से युक्त पान का बीड़ा आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

नोट–इसके पश्चात् माता जी को नारियल फल सिंहासन पर भेंट करें।

नारियल फल अर्पण मंत्र

इदं फलं मया भगवति स्थापित पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाति र्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

हिन्दी अनुवाद–हे सर्व सुख दात्री माता काली जी ! यह नारियल फल मैंने आपके समक्ष समर्पित किया है, जिससे हमें जन्म–जन्मांतर तक आप हमें सफलता प्रदान करें।

नोट–इसके बाद द्रव्य आदि दक्षिणा सिंहासन पर समर्पित करें।

माता काली को दक्षिणा अर्पण मंत्र

हिरण्यगर्भ गर्भस्यं हेम बीजं विभावसोः।
अनंत पुण्यं फल दमतः शान्ति प्रयच्छमे।।

हिन्दी अनुवाद–हे दयालु माता ! सुवर्ण हिरण्य गर्भ ब्रह्मा के गर्भ से स्थित अग्नि का बीज है। यह अनन्त पुण्य फलदायक है। परमेश्वरि! यह आपकी सेवा में अर्पित है। इसे ग्रहण कर हमें शान्ति प्रदान करें।

नोट–इसके पश्चात् दोनों हथेलियों में पुष्प भरकर, मंत्र पढ़ने के पश्चात् माता की पुष्पांजलि समर्पित खड़े होकर करें।

पुष्पांजलि समर्पण मंत्र

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कलोद् भवा च।
पुष्पांजलि मया दत्तौ गृहाण परमेश्वरिः।।

हिन्दी अनुवाद–हे परमेश्वरि ! यथा समय पर उत्पन्न होने वाले तरह–तरह के सुगन्धित पुष्प मैं पुष्पांजलि के रूप में अर्पित कर रहा हूँ, इन्हें स्वीकार कीजिए।

नोट–अब हाथ जोड़कर खड़े होकर माता काली जी के सिंहासन या प्रतिमा के चारों ओर घूम–घूम कर पांच बार "प्रदक्षिणा" करें और निम्नलिखित मंत्र उच्चारण करते रहें।

प्रदक्षिणा मंत्र

यानि कानि च पापानि च ज्ञाताज्ञात कृताणि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे।।

हिन्दी अनुवाद–हे कृपालु माता जी ! मनुष्यों से जाने–अनजाने में जो पाप हो जाते हैं, वे पाप आपकी परिक्रमा करते समय पद–पद पर नष्ट हो जाते हैं।

नोट–इसके पश्चात् गड़वी में जल भरकर बूंद–बूंद सिंहासन के पास गिरावें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

माता काली को विशेष अर्घ्य अर्पण मंत्र

रक्ष रक्ष भक्तवत्सला रक्ष त्रिलोक्य रक्षिकाः।
भक्तानां भयं कर्त्ता त्राता भाव भवार्णवात्।।

हिन्दी अनुवाद–हे त्रिलोक की रक्षा करने वाली माँ काली जी ! रक्षा कीजिए रक्षा कीजिए रक्षा कीजिए। आप भक्तों को अभय देने वाली और भव सागर से उनकी रक्षा करने वाली हैं।

नोट–इसके पश्चात् माता काली के 108 नामों का पाठ करें।

माता काली के 108 नामों की जप माला

(धन, वैभव, समृद्धि, सम्मान एवं यश प्राप्ति हेतु)

(भैरव उवाच)

शतनाम प्रवक्ष्यामि कालिकाया वरानने।
यस्य प्रपठनाद् वाग्मी सर्वत्र विजयी भवेत।।
काली कपालिनी कान्ता कामदा काम सुन्दरी।
कालरात्रिः कालिका च काल भैरव पूजिता।।
कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीय स्वभाविनी।
कुलीनाकुलकत्री च कुलवर्त्म प्रकाशिनी।।
कस्तुरी रस नीला च काम्या कामस्वरूपिणी।
ककार वर्णा निलया कामधेनुः करालिका।।
कुलकान्ता करालास्या कामार्त्ता च कलावती।
कुशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी।।

कुलजा कुलकन्या च कलहा कुलपूजिता।
कामेश्वरी काम कान्ता कुञ्जरेश्वर गामिनी।।
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा च कपर्दिनी।
कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुलपूजिता।।
काश्यपी कृष्ण माता च कुलिशांगी कला तथा।
क्रीं रूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता।।
कृशांगी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी।
कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा काम जीविनी।।
कुलस्त्री कीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुल पालिका।
कामदेव कला कल्पलता कामांग वर्द्धिनी।।
कुन्ती च कुमुदप्रीता कदम्ब कुसुमोत्सुका।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णा नन्द प्रदायिनी।।
कुमारी पूजनरता कुमारी गण शोभिता।
कुमारीरञ्चनरता कुमारी व्रत धारिणी।।
कंकाली कमनीया च काम शास्त्र विशारदा।
कपाल खटवाङ्गधरा कलि भैरव रूपिणी।।
कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलाश वासिनी।
कात्यायिनी कार्यकरी काब्य शास्त्र प्रमोदिनी।।
कामाकर्षण रूपा च कामपीठ निवासिनी।
कंगिनी काकिनी कुत्सिता कलह प्रिया।।
कुण्ड गोलोद्द भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी।
कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनद प्रिया।।
कान्तार वासिनी कान्तिः कठिना कृष्ण वल्लभा।
इति ते कथितं देवि ? गुह्याद गुह्यतरं परम्।।
प्रपठेद य इदं नित्यं कालीनाम शताष्टकम्।
त्रिषु लोकेषु देवेशि ? तस्याऽसाध्यं न विद्यते।।
प्रातः काले च मध्याह्ने सायह्ने च सदा निशि।

यः पठेत परया भक्त्या कालीनाम शताष्टकम्।।
कालिका तस्य गेहे च संस्थानं कुरुते सदा।
शून्या गारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः।।
वह्नि मध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये।
शताष्टकं जपन् मन्त्र लभते क्षेममुत्तमम।।

हिन्दी अनुवाद—1. काली 2. कपालिनी 3. कान्ता 4. कामदा 5. काम सुन्दरी 6. कालरात्रि 7. कालिका 8. काल भैरव पूजिता 9. कुरूकुल्ला 10. कामिनी 11. कमनीय स्वभाविनी 12. कुलीना 13. कुलकर्त्री 14. कुलवर्त्म प्रकाशिनी 15. कस्तुरी रस के समान नीले रंग वाली, 16. काम्या 17. काम स्वरूपिणी 18. ककार वर्णा, 19. कामधेनु 20. करालिका 21. कुल कान्ता 22. करालास्या 23. कामार्त्ता 24. कलावती 25. कृशोदरी 26. कामाख्या 27. कौमारी 28. कुलपालिनी 29. कुलजा 30. कुल कन्या 31. कलहा 32. कुल पूजिता 33. कामेश्वरी 34. काम कान्ता 35. कुब्ज रेश्वर गामिनी 36. काम दात्री 37. कामहर्ती 38. कृष्णा 39. कपर्दिनी 40. कुद 41. कृष्ण देहा 42. कालिन्दी 43. कुलपूजिता 44. काश्यपी 45. कृष्ण माता 46. कुलिशांगी 47. कला 48. क्रीं रूपा 49. कुलराम्या 50. कमला 51. कृष्ण पूजिता 52. कृशांगी 53. किन्नरी 54. कर्त्री 55. कलकण्ठी 56. कार्तिकी 57. कम्बूकण्ठी 58. क्रौलिनी 59. कुमुदा 60. कामेजीविनी 61. कुलस्त्री 62. कार्तिकी 63. कृत्या 64. कीर्ति 65. कुल पालिका 66. कामदेव कला 67. कल्पलता 68. कामांग वर्द्धिनी 69. कुन्ती 70. कुमुद प्रीता 71. कदम्ब कुसुमोत्सुका 72. कादम्बिनी 73. कमलिनी 74. कृष्णनंद प्रदायिनी 75. कुमारी पूजन रता 76. कुमारी गण शोभिता 77. कुमारी रञ्जन रता 78. कुमारी व्रता धारिणी 79. कंकाली 80. कमनीया 81. कोटरी 82. काम शास्त्र विशारदा 83. कपाल खटवाङ्गधरा 84. काल भैरव रूपिणी 85. कोटराक्षी 86. काशी 87. कैलाश वासिनी 88. कात्यायिनी 89. कार्यकरी 90. काव्य शास्त्र प्रमोदिनी 91. काम कर्षण रूपा 92. कामपीठ निवासिनी 93. कंगिनी 94. काकिनी 95. क्रीड़ा 96. कीर्ति वर्द्धिनी 97. कलह प्रिया 98. कुण्डगोलोद भवप्राण 99. कौशिकी 100. कीर्ति 101. कुम्भस्तनी 102. कटाक्षा 103. काव्या 104. कोकन प्रिया 105. कान्तार वासिनी 106. कान्ति 107. कठिना 108. कृष्ण वल्लबा। अष्टोत्तरशत् महाकाली नमस्कार—नमस्कार, बारंबार नमस्कार !

नोट—उपासको ! अब ''हवन'' करें। हवन में आम की लकड़ी पर आग जलाकर, गाय के घी में जव, (जौ) तिल, अक्षत, चन्दन, एवं बाजार से प्राप्त हवन सामग्री (पैकेट) मिलाकर आहुति डालें। आहुति देने के बाद स्त्रुव से बचे घी को ''प्रोक्षणी पात्र'' में डालें।

हवन मंत्र

ॐ प्रजापत्ये स्वाहा, इदं प्रजापतये।
ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदम इन्द्राय इत्यायाधारो।
ॐ अगन्ये स्वाहा, इदमग्न्ये।
ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम इत्याज्य भागौ।
ॐ भूः स्वाहा, इदं वायवे।
ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय।
ॐ मंगलाय नमः, इदम् मंगलाय स्वाहा।
ॐ बुधाय नमः स्वाहा, इदं बुधाय।
ॐ बृहस्पतये नमः स्वाहा, इदं बृहस्पतये।
ॐ शुक्राय नमः स्वाहा, इदं शुक्राय।
ॐ शनये नमः स्वाहा, इदं शनये।
ॐ राहवे नमः स्वाहा, इदं राहवे।
ॐ केतवे नमः स्वाहा, इदं केतवे।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारूक मिव बन्धनान्मृत्यो मुंक्षीय मामृतात्। स्वाहा।।

ॐ तत्सवितर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् स्वाहा।

ॐ सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थे साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायण नमोऽस्तुते स्वाहा।

ॐ मंगलम् भगवान विष्णु मंगलम गरूड़ध्वज् मंगलम् पुण्डरी काक्ष मंगलाय तनो हरिः स्वाहा।

ॐ ''क्रीं'' नमः स्वाहा।
ॐ ''ह्रीं'' नमः स्वाहा।
ॐ ह्रौं कालि महाकालि किलि किलि फट्‌ स्वाहा।

"ॐ क्रीं नमः स्वाहा"-मंत्र का कमसे कम (1100) ग्यारह सौ आहुतियां डालें।

नोट—उपासको ! हवन के बाद "मूर्द्धान" करें।

मूर्द्धान मंत्र

नोट—इस क्रम में पान, सूपारी, सूखे खड़कते नारियल और बची हुई हवन सामग्री, गुड़द्रव्य सहित दोनों हथेलियों पर रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र उच्चारण कर हवन कुंड में डालें।

मंत्र

ॐ मूद्धान दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानर मृत मजात् मग्नि कविग्वं सम्भ्राजम तिथि जनानाम सन्ना पात्रं जयन्तु देवाः स्वाहा।।

अग्नि प्रार्थना मंत्र

हाथ जोड़कर—

ॐ श्रद्धां मेघां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टि श्रियं बलम। तेजः आयुष्य मारोग्यं देहि मेहब्य वाहन।। ततः उपविश्य श्रवेण भस्म मानीय दक्षिणा नामिकया गृहीत भस्मना।

हवन भस्म शरीर के विभिन्न अंगों में लगाने का मंत्र

ॐ ऋयायुषं जमदग्ने, इति ललाटे, (मस्तक में लगावे)
ॐ कश्य पश्य त्र्यायुषं ग्रीवायाम्। (कंठ में लगावे)
ॐ यदेवेषुत्रया युषं हृदिः (हृदय में लगावे)
ॐ तते अस्तु त्र्यायुषं, दक्षिणा वाहमले (दोनों वाहु में लगावें)

नोट—अब खड़े होकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए माता काली हवन कुंड सहित स्थानों के चारों तरफ पांच बार "परिक्रमा" करें।

प्रदक्षिणा मंत्र

यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृताणि च।
तानि-तानि प्रणशयन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे।।

नोट—उपासको ! प्रदक्षिणा समाप्ति के बाद कांशे की थाली पर पान का पत्ता रखकर कर्पूर जलाकर माँ को "आरती" दिखावें और

इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ट पर लिखी हुयी ''आरती वन्दना'' गावें। आरती वन्दना समाप्त होने के पश्चात् ''पूजन विसर्जन'' करें।

पूजन विसर्जन मंत्र

नोट—दोनों हाथ से गंगाजल की गड़वी पकड़कर खड़े होकर माता काली को अन्तिम पूजन अर्घ्य प्रदान करें, साथ—साथ निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजमादाय मामकीम।
यजमान हितार्थाय पनराग भनाय च।।

नोट—इसके पश्चात् माता महाकाली को प्रणाम करें, फिर प्रसाद वितरण करें, ब्राह्मण एवं कुमारी 11 कन्याओं को भोजन करावें। कन्याओं को एवं खासकर वैदिक पंडित को पूर्ण सन्तुष्ट कर विदा करें। तत्पश्चात् स्वयं भोजन ग्रहण करें।

माता काली की पूजा में ''बकरे की बलि या भैसे की बलि'' भूल से भी न चढ़ावें। बलि चढ़ाने से माता क्रोधित हो जाती हैं, इसलिए यह भूल न करें।

(वृहद षोड़शोपचार पूजन सम्पन्न)

षष्टम् भाग

माता महाकाली स्तोत्र कवच वन्दना खण्ड

शत्रुओं का सर्वनाश व संहार करने हेतु "घोर महाकाली कवच"

उपासको ! इस "कवच" का पाठ "एक हजार एक" की संख्या में विधि पूर्वक करने से उपासक के शत्रु अवश्य ही नष्ट हो जाते हैं।

(कवच)

ॐ कालिका घोर रूपा सर्व काम प्रदा शुभा।
सर्वदेव स्तुता देवी शत्रु नाशं करोतु मे।।
ॐ ह्रीं ह्रीं रूपिणीं चैव ह्रां ह्रीं ह्रां रूपिणी तथा।
ह्रां ह्रीं क्षों क्षौं स्वरूपा सा सदा शत्रून् विदारयेत।।

हिन्दी अनुवाद–हे महाविकराल भयावना रूप वाली, ऐश्वर्य प्रदान करने वाली, देवताओं द्वारा पूजे जाने वाली, हे भगवती ! आप मेरे शत्रुओं का सर्वनाश कर दें। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रां ह्रीं ह्रां रूपिणी व ह्रां ह्रीं क्षों क्षौं स्वरूप वाली माहेश्वरी काली ! आप मेरे अशुभ चिंतकों का मूल नष्ट कर दें।

(कवच)

ॐ श्री ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भव बन्ध विमोचिनी।
हुं रूपिणी महाकाली रक्षा स्मान् देवि सर्वदा।।
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भस्य महासुरः।
वैरि नाशाय बन्दे तां कालिकां शंकर प्रियाम्।।
ब्राह्मनी शैवी वैष्णवी च वाराही नार सिंहिका।
कौमार्यैन्द्री च चामुण्डा खदन्तु मम विद्विषः।।

सुरेश्वरी घोर रूपा चण्ड मुण्ड विनाशिनी।
मुण्डमाला वृतांगी च सर्वतः पातु मां सदा।।
ह्रीं ह्रीं ह्रीं कालिके घोर दंष्ट्रेव रुधिर प्रिये।
रुधिरापूर्ण वक्त्रे च रुधिरेणा वृतस्तनि।।

हिन्दी अनुवाद–श्रीं ह्रीं ऐं बीजस्वरूपा, सांसारिक बन्धनों को काटने वाली "हुं" बीजरूपा मातेश्वरी काली ! आप हमारी सदैव रक्षा करें। हे भगवती ! जैसे आपने शुम्भ निशुम्भ दैत्यों का सर्वनाश किया, वैसे ही मेरे शत्रुओं का भी नाश करें। ब्राह्मनी, वैष्णवी, शैवी, नारसिंही, वाराही, ऐन्द्री, कौमारी व चामुण्डा रूप आप ही एक हैं। आप मेरे शत्रुवों का भक्षण करें। हे सुरेश्वरी, घोर रूपा, चंड–मुण्ड का नाश करने वाली मुण्ड माला धारिणी भगवती, आप विपदाओं से मेरी रक्षा करें। ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वरूपा हे काली ! भयंकर दाढ़ों व मुखवाली, रक्तपान करने वाली हे भगवती ! आप मेरे शत्रुओं का विनाश करें।

इति श्री भैरव कृत महाकाली स्तोत्र सम्पूर्णम

ब्रह्मा जी द्वारा की गयी महाकाली स्तुति

(संग्राम में विजय प्राप्त हेतु, धन प्राप्ति एवं राजदरबार में सफलता हेतु, एवं समस्त कामनावों की पूर्ति हेतु)

(स्तुति)

ब्रह्मो उवाच–

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
स्वधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रत्मिका स्थिता।।
अर्द्धमात्रा स्थिता नित्या चानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।।
त्वयै तद्धार्यते विश्वं त्वयै त्वसृज्यते जगत्।
त्वयै तत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।।
विसृष्टौ सृष्टि रूपा त्वं स्थिति रूपा च पालने।
तथा संहृति रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भगवती महादेवी महेश्वरी।।

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्यं गुणत्रय विभाविनी।
कालरात्रि र्महारात्रि र्मोहरात्रिश्य दारूणा।।
त्वं श्रीस्त्व मीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्वोध लक्षण।
लज्जा पुष्टि थातुष्टि स्त्वं शान्तिः क्षन्ति रेव च।।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शंखिनी चापिनी बाण भुशूण्डी परिधा युधा।।
सौम्या सौम्य तराशेषा सौम्येभ्यः स्त्वति सुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।
यच्च किंचित्वकचिद्वस्तु सदसद्वा खिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।
यया त्वया जगत्स्त्रष्टा जगतपाल्यति यो जगत।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतु मिहेश्वरः।।
विष्णुः शरीर ग्रहणः महमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतु शक्तिमान भवेत।।
सा त्व मिष्टं प्राभावैः सर्वेरूदारै र्देवि संस्तुता।
मोह यै तौ दुराधर्षावसुरौ मधु-कैटभो।।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयता मच्युतो लघु।
बोधश्य क्रिमता मस्त हन्तु मेतो महासुरौ।।

हिन्दी अनुवाद—ब्रह्मा जी बोले—हे देवि ! स्वधा और वषटकार तुम्हीं हो। तुम ही स्वरात्मिका एवं जीवन देने वाली सुधा हो। नित्य अक्षर रूप प्रणव में विद्यमान अकार, उकार, मकार, तीनों मात्राओं के रूप में भी तुम ही स्थित हो। तीन मात्राओं के अतिरिक्त उच्चारण में न आने वाली अर्द्ध नित्या मात्रा बिन्दु भी तुम ही हो। हे देवि ! सन्ध सावित्री एवं परम जननी तथा विश्व को धारण करने वाली भी तुम ही हो।

यह संसार तुमसे ही उत्पन्न होता है तथा तुमही जगत का पालन करती हो, तुम ही कल्पान्त में सभी को अपने में लीन कर लेती हो।

हे जगत्माता ! इस संसारकी उत्पत्ति के समय तुम ही सर्गस्वरूपा होती हो। स्थिति रूपा और कल्प के अन्त में संहार रूपा होती है। महाविद्या, महामाय, महामेधा, महास्मृति, महामोह रूपा, महादेवी तथा महेश्वरी भी तुम ही हो। तीनों गुण भी तुमसे ही उत्पन्न होते हैं। तुम ही भयंकर कालरात्रि, महारात्रि तथा मोहरात्रि भी हो। तुम ही श्री ईश्वर,

ह्रीं एवं बोध स्वरूपा बुद्धि हो। लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शान्ति और क्षमा भी तुम ही हो।

हे देवि ! तुम ही खड़ग और शूल धारण करने वाली घोर रूपा हो। तुम गदा, चक्र और धनुष धारिणी तथा बाण, भुशुण्डी और परिध नामक अस्त्रों से युक्त हो। तुम सौम्य ही नहीं सौम्यतर हो तथा संसार में जितने भी सौम्य एवं सुन्दर पदार्थ हैं उन सबसे अधिक सौम्य एवं सुन्दरी हो। तुम पर तथा अपर से भी परे रहने वाली परमेश्वरी हो।

जहां कहीं, जो भी सत्–असत् रूप पदार्थ तथा उन पदार्थों की शक्ति है, वह तब भी तुम हो। इस स्थिति में तुम्हारी स्तुति भी क्या की जाय ? जो भगवान विष्णु इस विश्व का सर्ग, पालन और संहार करते हैं, उनको भी तुम निद्रा के वशीभूत कर देती हो, तुम्हारी स्तुति करने में कौन समर्थ है ? हे देवि ! तुमने मुझे, शिव को और विष्णु को भी देह धारण कराया है, तब तुम्हारी स्तुति कौन कर सकते हैं ? क्योंकि तुम्हारा तो प्रभाव ही तुम्हें प्रकाशित किए हुए हैं।

हे भगवति ! इन दोनों अति दुघर्ष मधु कैटभ नामक असुरों को मोह में डालकर जगदीश्वर विष्णु को शीघ्र जागृत करो और उन्हें इन दोनों महान असुरों को मारने की बुद्धि प्रदान करो। हे भगवती अपने भक्त की रक्षा करो, हमारी कामना पूर्ण करो।

भगवान शिव द्वारा की गयी काली स्तुति

(मोक्ष, विद्या, नौकरी प्राप्ति, विपत्ति निवारण, एवं सभी रोगों से मुक्ति हेतु)

(भगवान शिव उवाच)

महाकौतूहल स्तोत्रं हृदयाख्यं महोत्तमम।
श्रृणु देवि ? महागोप्यं दक्षिणायाः सुगोपितम्।।
अवाच्यमपि वक्ष्यामि तव प्रीत्या प्रकाशितम्।
अन्येभ्यः कुरू गोप्यं च सत्यं सत्यं च शैलजे।।

हिन्दी अनुवाद–भगवान शिव बोले–हे देवि पार्वती ! अति गोपनीय से महा गोपनीय, चमत्कारी महाकाली स्तोत्र आज तुम श्रवण करो। दक्षिणा देवी आद्या महाशक्ति स्वरूपा काली ने अब तक इसे गुप्त रखा था। तुम्हारे स्नेह के कारण यह स्तोत्र केवल तुम्हारे लिए ही सुना रहा हूँ। हे पार्वती ! तुम यह स्तोत्र किसी के पास उजागर न करना।

(श्लोक)

भगवान शिव ऊवाच–

पुरा प्रजापतेः शीर्षश्छेदनं कृत वाहनम्।
ब्रह्म हत्या कृतैः पापै भैंरवत्वं ममागतम्।।
ब्रह्म हत्या विनाशाय कृतं स्तोत्रं मया प्रिये।
कृत्या विनाशकं स्तोत्रं ब्रह्म हत्या पहारकम्।।

हिन्दी अनुवाद–भगवान शिव बोले–हे देवि ! सृष्टि से पूर्व जब मैंने ब्रह्मा का शिर विच्छेद किया तो हमें ब्रह्म हत्या का पाप लग गया और मैं भैरव रूप में परिणत हो गया। अतः ब्रह्म हत्या दोष से मुक्त होने हेतु सर्वप्रथम मैंने ही इस स्तोत्र का पाठ किया था। (यह स्तोत्र आरम्भ करने से पूर्व साधक सर्व प्रथम निम्न मंत्र द्वारा आद्या शक्ति महाकाली का ध्यान करे, फिर स्तोत्र का पाठ करे तो वह समस्त ऐश्वर्यों का मालिक हो जायेगा और इस लोक में समस्त सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त करेगा।)

महाकाली ध्यान मंत्र

ध्यायेत काली महामाया त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां ललज्जिहवां पूर्ण चन्द्र निभाननाम्।।
नीलोत्पल दल श्यामां शत्रु संध-विदारिणीम्।
निर्भयां रक्तबदनां दष्ट्राली-घोर रूपिणिम्।।
साट्टहासा ननां देवी सर्वदां च दिगम्बरीम्।
शवासन स्थितां काली मुण्डमाला विभूषिताम।।
नर मुण्डं तथा खड़गं कमलं च वर तथा।
इति ध्यात्वा महाकाली ततस्तु कवचं पठेत।।

हिन्दी अनुवाद–''तीन नेत्रों वाली, बहुरूप धारिणी, चतुर्भुजी, चन्द्रमुखी, लपलपाती जिह्वा वाली महामाया काली का ध्यान करता हूँ। नील कमल दल के समान कृष्ण वर्ण वाली, शत्रु समुदाय की विनाशिनी, नर मुण्ड धारिणी तथा खड़ग, कमल एवं मुद्रा धारिणी, निडर, रक्त से सने मुखवाली, बड़े–बड़े दांतों वाली, निरन्तर अट्टहास करने वाली, दिगम्बर स्वरूपिणी, शव के आसनपर विराजमान, मुण्ड–मालावों से सुशोभित ऐसी महाकाली का मैं ध्यान करता हूँ।''

(स्तोत्र)

ॐ कालिका घोररूपाद्या सर्वकाम फलप्रदा।
सर्वदेव स्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे।।
ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी श्रेष्टा त्रिषु लोकेषु दुर्लभा।
तव स्नेहान् मयाख्यातं न देयं यस्य कस्यचित्।।
अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि निशामय परात्मिके।
यस्य विज्ञान मात्रेण जीवन्मुक्तो भविष्यति।।
नाग यज्ञोपवीतां च चन्द्रार्द्ध कृत शेखराम्।
जटाजूटां च सञ्चिन्त्य महाकाल समीपगाम्।।
एवं न्यासादयः सर्वे ये प्रकुर्वन्ति मानवाः।
प्राप्नुवन्ति च ते मोक्षं सत्यं सत्यं वरानने।।
काली दक्षिणा काली च कृष्ण रूपा परात्मिका।
मुण्डमाली विशालाक्षी सृष्टि संहार कारिका।।
स्थिति रूपा महामाया योगनिद्रा भगात्मिका।
भागसर्पिः पानरता भगोद्योता भगांगजा।।
आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका।
प्रेतवाहा सिद्धि लक्ष्मी रनिरुद्धा सरस्वती।।
एतानि नाम माल्यानि ये पठन्ति दिने दिने।
तेषां दासस्य दासोऽय दासोऽहं सत्यं सत्यं महेश्वरी।।
काली कालहरां देवी कंकाल बीज रूपिणीम्।
काक रूपां कलातीतां कालिकां दक्षिणां भजे।।
कुण्डगोल प्रियां देवीं स्वयं भूकुसुमेरताम्।
रतिप्रियां महारौद्रीं कालिकां प्रणमाम्यहम्।।

स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद—शिवजी बोले— हे उमा ! शत्रुओं का नाश करने वाली, प्रचण्ड रूप धारिणी मनोकामना पूर्ण करने वाली वह महाकाली ह्रीं ह्रीं स्वरूपा, सर्वोत्तमा तथा कठिन प्रयास से ही शुलभ होने वाली हैं। हे पार्वती ! उनका यह सर्वोत्तम स्तोत्र तुम्हारे प्रति होने के कारण ही सुना रहा हूँ। हे प्रिये ! उस महाकाली का ध्यान करने से प्राणी भव बन्धन से मुक्त होकर समस्त कामना प्राप्त कर लेता है। उनका ध्यान इस प्रकार करना चाहिए—

"आद्या महाकाली सर्पों का जनेऊ धारण कर रखी है, शीश पर पूजा का चन्द्रमा है तथा जटाओं से युक्त "महाकाल" के निकट वह स्थित है। जो इस प्रकार ध्यान करता है वह निश्चित ही मोक्ष और समस्त कामनाओं की प्राप्ति कर लेता है।"

जो उन देवी के निम्न नामों का जपन नित्य ही करता है, मैं भी उसके वशीभूत हो जाता हूँ, वो नाम हैं–काली, दक्षिण काली, कृष्ण रूपा, परात्मिका, विशालाक्षी, सृष्टि संहारिका, स्थिति रूपा, महामाया, योगनिन्द्रा, भगात्मिका, भागसर्पी, पानरता, भगांगजा, भगोद्योता, आद्या, सदानवा, घोरा, महातेजा, कुरालिका, प्रेतवाहा, सिद्ध लक्ष्मी, अनिरुद्धा, सरस्वती। हे देवि ! मैं स्वयं भी इन्हीं नामों का जप करता हूँ, अतः जो प्राणी पवित्र होकर यह जप नित्य ही करेगा, वह सब कुछ प्राप्त कर लेगा, यह बातें सत्य–सत्य और कठोर सत्य है।

महा चण्डी स्तोत्र

(भक्ति, मुक्ति, धन-धान्य, सुबुद्धि प्राप्ति हेतु एवं शत्रु संहार करने हेतु)

श्री भाल लसत विशाल शशि, मृग मीन खंजन लोचिनी।
बाल वदन विशाल कोमल, वचन विघ्न विमोचिनी।।
सिंह वाहन धनुष धारण, कनक से तन सोहनी।
मुण्डमाला सरोज राजत, मुनिन के मन मोहनी।।
तू एक रूप अनेक तेरे, गुणन की गिनती नहीं।
कुछ ज्ञान था सुजान भक्तन, भाव से विनती कही।।
वर विष्णु नवधा खड़ग खप्पर, अभय अंकुश धारिणी।
कर काज लाज जहाज जननी, जनन के हित-कारिणी।।
मन्द हास प्रकार चण्डी को, सो विन्ध्यवासिनी गाइये।
क्रोध तजि अभिमान हर, पर दुष्ट बुद्ध नसाइये।।
उठत बैठत चलत सोहत, बारंबार-मनाईये।
चण्ड-मुण्ड विनाशिनी के, चरण चित्त लगाइये।।
चरण मुनि और बिन्दुहूते, अधिक आनन्द रूप हैं।

सर्व सुख धाता विधाता, सर्व दर्श अनूप हैं।।
तू ही योग भोग विलासिनी, शिव पास हिमगिरी नन्दिनी।
तुरत दुख निवारिणी, जगतारिणी अभिनन्दिनी।।
आदि माया ललित काया, प्रथम मधु-कैटभ छले।
त्रिभुवन भार उतारने का, मान महिषासुर मले।।
इन्द्र चन्द्र कुबेर बन्धन, सुरन के आनन्द भये।
भुवन चौदह दशो दिशन के, सुनत ही सब दुख गये।।
धूम्र लोचन भस्म कीन्हौं, क्रोध की हुंकार से।
हनी है सेना सकल बांकी, सिंह की फुफकार से।।
चण्ड-मुण्ड प्रचण्ड दोनों, प्रबल थे अति भ्रष्ट थे।
मुण्ड उनके किए खण्डन, असुर मुण्डन दुष्ट थे।।
रक्तबीज असुर अधर्मी, कुकर्मी घनघोर के।
शोर कर लड़ने को धाए, अपना रणदल जोड़ के।।
श्री भवानी युद्ध ठानी, शकल शक्ति बुलाय के।
योगनिन को रक्त पिलाए, अन्तरिक्ष उठाय के।।
महामूढ़ निशुम्भ योद्धा, हने खड़ग बजाय के।
सुनत राजा शुम्भ धायो, सैन शकल सजाय के।।
परस्पर जब युद्ध मचो, दिवस से रजनी भई।
हास कारण असुर मारे, पुष्प धन बरसा भई।।
चितलाय यह चण्डी चरित्र, पढ़े जो प्रेम से सदा।
पुत्र मित्र कुलत्र सुख हो, दुख न आए ढिंग कदा।।
भक्ति मुक्ति सुबुद्धि बहू, धन धान्य सुख सम्पत्ति मिले।
शत्रु नाश प्रकाश चण्डी, आनन्द मंगल नित करे।

श्री "दक्षिणा काली" स्तोत्र

("राष्ट कवि" वाई० एन० झा तूफान द्वारा रचित)

(पुत्र, विद्या, बुद्धि, ज्ञान प्राप्ति हेतु विजय प्राप्ति एवं भयानक उपद्रव शान्ति हेतु समस्त कामना पूर्ति हेतु।)

(श्लोक)

ॐ अचिन्त्या मिताकार शक्ति स्वरूपा,
प्रतिव्यक्त्य धिष्ठान सत्वैक मूर्तिः।
गुणातीत निर्द्वन्द्व बोधैक गम्या,
त्वमेका पर ब्रह्मा रूपेण सिद्धाः ।।१।।

हिन्दी अनुवाद—हे माँ मंगला काली आपके प्रभाव व स्वरूप की महिमा गाने की सामर्थ्य किसी में भी नहीं है। आप सांसारिक जीवों में सत्व गुण रूप से विराजती हैं व ब्रह्म रूप से ही आपकी सिद्धि की जा सकती है।

(श्लोक)

अगोत्रा कृतित्वा दनैकान्ति कत्वा-
दलक्ष्या गमत्वा दशेषा करत्वाम्।
प्रपंचाल सत्वा दना रम्भ कत्वात्-
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धाः ।।२।।
असाधारण त्वाद सम्बन्ध कत्वाद्,
भिन्ना श्रयत्वा दनाकार कृत्वात।
अविद्यात्मक त्वा दनाद्यन्त कत्वात्,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धाः ।।३।।

हिन्दी अनुवाद—हे मातेश्वरी मंगला काली ! आप निराकार और चंचल हैं। परब्रह्म रूप होते हुए भी आप सृष्टि में व्यक्त–अव्यक्त रूप से विद्यमान रहती हैं। आप को सीमाबद्ध करके कोई सिद्धि करना चाहे तो यह असम्भव है। हे माँ ! आप सृष्टि के सभी पदार्थों में व्याप्त होकर भी उनमें लिप्त नहीं होती। आप आकार रहित, नाश रहित, आदि कारण अविद्या तथा ब्रह्म रूपिणी है।

(श्लोक)

यदा नैव धाता न विष्र्णु न रूद्रो-
न कालो न वा पंचभूतानि नाशा।
तदाकारिणी भूत सत्वैक मूर्ति-
स्वत्वमेका परब्रह्म रूपेण सिद्धाः।।४।।
न मीमांसका नैव कालादि तर्का-
न साख्यां न योगा न वेदान्त वेदाः।
न देवा विदुस्ते रिनाकार भवं,
त्वमेका परब्रह्म रूपेण सिद्धाः।।५।।

हिन्दी अनुवाद—हे भगवती मंगला ! आप तब भी विद्यमान थीं, जब ब्रह्मा, विष्णु, शिव नहीं थे। और न कोई सृष्टि के लक्षण थे। आपकी सिद्धि ब्रह्म रूप से ही संभव है। हे सबका मंगल ही करने वाली काली माँ ! ब्रह्म रूपा होने के कारण आपकी महिमा का बखान मीमांसक, वेद—शास्त्र आदि कोई भी करने में असमर्थ है।

(श्लोक)

न ते नाम गोत्रे न ते जन्म मृत्यु,
न ते धाम चेष्टे न ते दुख सौख्ये।
न ते मित्र शत्रु न ते बंध मोक्षो,
त्वमेका पर ब्रह्मा रूपेण सिद्धाः।।६।।
न बाला न च त्वं वयस्कां न वृद्धा,
न च स्त्री न षष्टः पुवान्नैव च त्वम्।
न च त्वं सुरो नासुरो नो नरो,
वा त्वमेका परब्रह्म रूपेण सिद्धाः।।७।।

हिन्दी अनुवाद—हे मंगला भवानी काली ! आप नाम, गोत्र, जन्म, गृह, मृत्यु, दुख, सुख, मित्र, शत्रु, भुक्ति, मुक्ति, से रहित ब्रह्म स्वरूप हैं। हे जगदम्बा ! आप ब्रह्म रूपा ही हैं। आपकी न तो आयु है, न ही आप देव—अदेव मानव देहधारी हैं।

(श्लोक)

जले शीतल त्वं शुचौ दाह कत्वं,
विद्यौ निर्मलत्वं रवौ ताप कत्वम्।
तबै ताम्बिके यस्य कश्यापि शक्ति,

त्वमेका परब्रह्म रूपेण सिद्धाः ।।८।।
पपौक्ष्वैऽमुग्रं पुरा यन्मेशाः,
पुनः सहरत्न यन्त काले जगच्य।
तदैव प्रसादान्न च तस्य शक्त्यां,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धाः ।।९।।

हिन्दी अनुवाद—हे जगतारिणी अम्बिका जी ! आप जल, अग्नि, चन्द्र सूर्य व अन्य जगत के पदार्थों की शक्ति स्वरूपा जननी हैं। आप ही साक्षात पर ब्रह्म हैं। हे आद्या काली ! पूर्व समय में भगवान रूद्र ने विष पान व सृष्टि का संहार आपकी प्रसन्नता के लिए ही किया था। हे ब्रह्म स्वरूपा भगवती, वह सब भी आपकी ही महिमा का प्रताप था।

(श्लोक)

कराला कृतीन्या नयानि श्री जयन्ती,
भजंति करास्त्रावि बाहुल्य मित्थम्।
जगत पालनाया सुरायां वधायः,
त्वमेका पर ब्रह्मः रूपेण सिद्धाः ।।१०।।
रवन्ति शिवा भिर्वहन्ती कपालं,
जयन्ती सुरारीन् वधन्तीं प्रसन्नता।
नरन्ति पतन्ती चलन्ती हसन्ती,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धाः ।।११।।

हिन्दी अनुवाद—हे अम्बिके ! आप सृष्टि के पालन व दैत्यों के संहार हेतु ही कर—कमलों में आयुध आदि धारण करती हैं। हे भयानक विकरालिका महादेवी ! आप ही ब्रह्म स्वरूपिणी हैं। हे अर्द्धनारीश्वर महांकाली चण्डिका माँ ! आप दानवों का संहार करते समय हाथ में कपाल धारण किए रहती हैं और उस काल में हंसती, गिरती, मुस्कराती रहती हैं—अर्थात् सर्वनाश स्वरूपिणी हो जाती हैं— हे भवानी ! आपकी सिद्धि ब्रह्म रूप से ही की जा सकती है।

(श्लोक)

अपादापि वाताधिकं धावसि त्वं,
श्रुतिभ्यां विहीनापि शब्दं श्रृणोषि।
अनासापि जिघ्रस्य नेत्रापि पश्य
स्वजिह्वापि नाना रसा स्वाद विज्ञा।।१२।।

यथा बिम्ब मेकं रवे रम्ब मस्थ,
प्रतिच्छाया यावदे कोद केषु।
समुद भासते नेक रूपं यथावत,
त्वमेका परब्रह्म रूपेण सिद्धाः॥१३॥

हिन्दी अनुवाद—हे रणचण्डी माँ ! पाद विहीन होने पर भी आपकी चालगति तेज है, कान न होने पर भी श्रवण शक्ति तीव्र है, नाक न होने पर भी घ्रान शक्ति तेज हैं, नेत्रहीन होने पर भी सर्वदृष्टा हैं तथा जिहवा न होने पर भी आप सभी रसों का रसास्वादन करती हैं। हे भगवती ! आप जैसे अनेक रूपों में वैसे ही दृष्टि गोचर होती हैं, जैसे सूर्य किरणें जलाशयों में प्रतिबिंबित होती हैं।

(श्लोक)

यथा भ्राम यित्वा मृद चक्र मध्ये,
कुलाली विधत्ते शराव घटं च।
महामोह यन्त्रेषु भूतान्य शेषान्,
तथा मानुषा स्त्वं सृज्यादि सर्गे॥१४॥
यथा रंग रज्वे कर्दृष्टी स्वकष्मान्नृणां
रूप दर्वी कराम्बु भ्रमः स्यात्।
जगत यत्र तत्तन्मये तद्वदेव त्वमेकैव
तत्तन्नि तत्तो समस्तम्॥१५॥

हिन्दी अनुवाद—हे भगवती भद्र काली माँ ! आप सृष्टि की रचना के समय पंच तन्मात्राओं रूपी मिट्टी को मोह यंत्र रूपी चाक में घुमाकर मानव देह का निर्माण करती हैं। आपकी यह क्रिया कुम्हार की क्रिया के समान है। हे दक्षिणा काली माँ ! सभी भासित पदार्थों का क्षय होने पर केवल आप ही शेष बचती हैं। जिस प्रकार रांगे में चांदी का, रज्जू में नाग का, सूर्य किरणों में जल का भ्रम होता है, उसी प्रकार सृष्टि के प्रत्येक वस्तु में आपका ही भ्रम समाया है।

(श्लोक)

महाज्योति एकार सिंहासन वत्-
त्वकीयान् सुरान वाह यस्युग्र मूर्ति।
अवष्टम्य पद्भ्यां शिवं भैरव च,
स्थिता तेन मध्ये तेन मध्ये भवत्येन मुख्या-॥१६॥

कुयोगासेन योग मुद्रा भिनीतिः,
कुयोस्त्रा सापो तस्या वालाननं च।
जगन्मात राद्गक तवा पूर्व लीला,
कभंकार मस्मद्धि धैर्देवि गम्या।।१७।।

हिन्दी अनुवाद–हे माहेश्वरी ! देवताओं को ज्योर्तिमय सिंहासन आप ही प्रदान करती हैं तथा आप ही उग्र रूप धारण कर "भैरव रूप शिव को" अपने पैरों के नीचे दबाकर शोभायमान होती हैं। हे माँ ! आप कटे हुए मुण्ड धारण किए रहती हैं तथा कुयोगासन पर (शव पर, मुर्दे पर) आननारूढ़ रहती हैं। आपकी यह सब लीला अपरम्पार है।

(श्लोक)

महाघोर कालान ज्वाल ज्वाला,
हित्यत्यन्त वासा महाटटहासा।
जटा भार काला महा मुण्ड माला,
विशाला त्वमीहा महाध्याय शम्बा।।
तपो नैव कुर्वन वपुः साधयामिम,
ब्रजन्नापि तीर्थं पदे खज्जयामि।
पठनापि वेदान च न याप यामि
त्वदं धिद्धयं मंगलं साधयामि।।

हिन्दी अनुवाद–हे कलकत्ते में निवास करने वाली, "जहांगीर पुर बैसी में निवास करने वाली दक्षिणा काली माँ ! आप विकराल कालानल की शिखा के बीच भयंकर हास करती, जटाधारी, कृष्ण वर्ण वाली व मुंडमाला धारण किए "शिव पर" आरूढ़ हैं। मैं आपकी इसी स्वरूप का स्मरण करता हूँ। हे दक्षिणा काली माँ ! तपस्या, तीर्थ, वेद पाठ, आदि क्रियाओं में मेरी रुचि नहीं है। मेरी इच्छा तो आपके चरण कमलों की सेवा करने की है।"

(पंडित वाई० एन० झा रचित दक्षिणा काली स्तोत्र सम्पूर्णम्)

महाकाल द्वारा की गयी काली स्तुति

(रोग, शोक, अकाल मृत्यु नाशक, एवं यंत्र-मंत्रों में सिद्धि प्राप्ति हेतु)

(श्लोक)

ॐ महाकाल रूद्रोवदित स्तोत्र मेतत् सदा,
भाक्त भावे नयोऽध्येति भक्तः।
न चापन्न शोको न रोगो न मृत्यु,
र्भवेत सिद्धि रन्ते च कैवल्य लाभः।।

हिन्दी अनुवाद–"ॐ कार स्वरूप भगवान महाकाल" ने कहा कि मेरे द्वारा कहे गये निम्न स्तोत्र का पाठ करने पर रोग–शोक, अकाल मृत्यु से निवृत्त होकर मनुष्य मोक्ष पाता है।

स्तोत्र इस प्रकार है–

(स्तुति आरम्भ)

सौम्ये नीलरनोद घटा प्रोद्याम देहच्छटा।
लास्योन्माद निनाद मंगल चयैः श्री देव्यन्त दोलज्जटा।।
साकाली करवाल काल कलना हन्त्वश्रियं चण्डिका।
काली क्रोध कराल काल भयदोन्माद प्रमोदालया।।
नेत्रोपान्त कृतान्त दैत्य निवहा प्रोद्याम देहामया।
पत्याद्वो जय कालिका प्रचलिका हूंकार घोरा ननः।।
भक्ता नाम भय प्रदा विजयदा विश्वेश सिद्धासन।
करालोन्मुखी कालिका भीम-कान्ता।।
कटि व्याघ्र चर्मा वृत्ताः दानवान्ता।
हूं हूं कडमड़ी नादिनी कालिका तु।।
।। प्रसन्ना सदा न प्रसन्नान पुनातु।।

हिन्दी अनुवाद–श्री महाकाल ने कहा–हे महाकाली ! आपकी कांति नील कमल व मेघ के समान है। आपके नितम्ब पर केश राशि झूल रही है। हे विकराल स्वरूपा अपने खड़ग को घुमाती हुयी मेरे

अनिष्ट एवं बाधादि विपत्तियों को दूर करे। अपने नेत्रों से ही असुरों का संहार करने वाली कराल वदना देवी ! आप भक्तों को भयहीन करें। हुंकार से आपका मुख मण्डल विकराल जान पड़ता है। हे महाकाली! आप मेरी रक्षा करें। हूं हूं कड़मड़ ध्वनि करने वाली रण चण्डी काली! आप हम पर प्रसन्न होईये।

।। श्री महाकाल रचित काली स्तोत्र सम्पूर्णम्।।

जगत गुरु शंकराचार्य द्वारा की गयी "भद्र काली स्तुति"

(ऋद्धि-सिद्धि, शुभ-लाभ की प्राप्ति हेतु, धन-धान्य की वृद्धि हेतु एवं अन्त समय में मोक्ष प्राप्ति हेतु)

स्तुति आरम्भ

(श्लोक)

गलद् रक्त मुण्डावली कण्ठ माला,
महा घोर रवा सुंदष्ट्रा कराला।
विवश्वा श्मशाना लया मुक्तकेशी,
महाकाल कामाकुला कालिकेयम्।।
भुजे वाम युग्मे शिरोऽसि दधाना,
वरं दक्ष युग्मे अभयं वै तथैव।
सुमध्यापि तुगं स्तना भार नम्रा,
लसद्रक्त सृक्दया सुस्मिता स्या।।
शवद्वन्द्व कर्ण वतंसा सुकेशी,
लसत प्रेतपाणि प्रयुक्तैक काञ्ची।
शवाकार मंचाधि रूढ़ा शिवाभिश्च,
तुर्दिक्षु शब्दा यमानाऽभिरेजे।।
विरञ्चयादि देवा स्त्रयस्ते गुणांस्त्रीन,
समाराध्य कालि प्रधाना बभूवुः।
अनादि सुरादिं मखादिं भवादिं,
स्वरूपं त्वदीयं न विदन्ति देवाः।।

जगन मोहनीयं तु वाग्वादि नीयं,
सुहृत पोषिर्णो शत्रु संहारणीयम्।
वचः स्तम्भनीयं किमुच्चाट नीयं,
स्वरूपं त्वदीयं न विदन्ति देवाः।।

हिन्दी अनुवाद—हे मातेश्वरी महाकाली माँ ! आपकी गले में पड़ी मुंडमाला से निरन्तर रक्त प्रवाहित हो रही है। हे भवानी ! आप विकराल स्वरूपा हैं, और श्मशान में ही आप निवास करती हैं। हे चण्डी ! आप अपने हाथों में मुंड, खड्ग, वर मुद्रा धारण किए हैं। आपका कटि प्रदेश मनोहारी है तथा पुष्ट स्तनों के भार से झुका है। कानों में बाल्य शव रूप कुंडल झूल रहे हैं, केशिकाएं, सुन्दर है। हे भगवती ! आप शिव पे आरूढ़ हैं। मैं आपका ध्यान करता हूँ।

हे माहेश्वरी ! ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी आपकी साधना से ही महिमामयी हुए। आपकी महिमा का अन्त नहीं है। हे भवानी काली ! आप जगत को मोहित करने वाली, पालक और संहारक हैं।

(श्लोक)

इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्प वल्ली,
मनोजां स्तु कामान् यथार्थ, प्रकुर्यात।
कथा ते कृतार्थां भवन्तीति नित्यं,
स्वरूपं तदीयं न विदन्ति देवाः।।
सुरापान मत्ते ? सुभक्ता नु रक्ते,
लसत पूत चित्ते ? सदा विर्भवस्ते।
जप ध्यान पूजा सुधाधौ तपंका,
स्वरूपं त्वदीयं न विदन्ति देवाः।।
चिदानन्द कन्दं हसन्मन्द मन्दं,
शरच्चन्द्र कोटि प्रभा पुञ्ज बिम्बम्।
मुनीनां कविनां हृदि द्योतमानं,
स्वरूपं त्वदीयं न विदन्ति देवाः।।
महामेघ काली सुरक्तापि शुभ्रा,
कदाचिद् विचित्रा कृति योंग माया।
न बाला न बृद्धा न कामा तुरापि,
स्वरूप त्वदीयं न विदन्ति देवाः।।

क्षमस्वा पराधं महा गुप्त भावं,
मया लोक मध्ये प्रकाशी कृतं यत्।
तव ध्यान पूतेन चापल्य भावात्,
स्वरूपं त्वदीयं न विदन्ति देवाः।।

हिन्दी अनुवाद—हे अम्बिका ! आपकी स्तुति कल्प वृक्ष के समान है। जो आपकी स्तुति करता है उसकी समस्त कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं, आप अपने भक्तों पर सदैव कृपा बरसाती रहती हैं। हे अम्बा ! आपके मूल स्वरूप को देवगण भी नहीं जानते। आप पवित्र हृदय में निवास करती हैं।

हे मातेश्वरी ! महाकाली, महालक्ष्मी, महा सरस्वती आदि आपके ही रूप हैं। योगमाया बाला रूप भी आपकी ही है। हे जगननी ! आप न वृद्धा हैं न युवा, अर्थात आपका वास्तविक रूप अलग ही है। आपके स्वरूप का चंचलता वश मैंने जो वर्णन किया है, इस अपराध को क्षमा करेंगे। आपका इस स्तोत्र का जो पाठ करता है वह महानता, प्रसिद्धि, एवं समस्त ऋद्धि–सिद्धि व समृद्धि प्राप्त करता है। उसके गृह में सिद्धियां विराजमान रहती हैं तथा मृत्यु के बाद ऐसा मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है, इसमें कोई शंसय नहीं है।

(जगत गुरू शंकराचार्य द्वारा कृत महाकाली स्तोत्र सम्पूर्णम)

सप्तम भाग

श्री महाकाली यंत्र-मंत्र सिद्धि खण्ड

यंत्र-मंत्र का परिचय शक्ति और महत्व

उपासको ! आज का युग अत्यधिक तीव्र गति से ''यांत्रिक विकाश''—की ओर अग्रसर होता जा रहा है। इस यांत्रिक शक्तियों का निर्माण ''देवासुर संग्राम'' से पूर्व हो चुका था। उस समय देवि-देवताओं ने ऐसे स्वचालित यंत्रों का निर्माण किया जो शत्रुओं पर प्रहार करके पुनः अपने पूर्व स्थान पर लौट आता था। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण सुदर्शन चक्र, अग्नि बाण, ब्रह्म शक्ति आदि हैं।

पूर्व काल के मूल यांत्रिक परिभाषाओं को लेकर ही आज के वैज्ञानिकों ने परमाणु बम, हाइड्रोजन बम ने पाम बम आदि विश्व संहारक यंत्र तैयार किया है, जो छोटा आकार का होते हुए भी संसार को संहारने की शक्ति रखता है।

इस यंत्रों को हम ''भौतिक यंत्रों'' के नाम से जानते हैं, परन्तु आज इस परम पवित्र पुस्तक में जिन यंत्रो का वर्णन करने जा रहा हूँ— उसका नाम—''सिद्ध यंत्र'' जो आड़ी, तिरछी रेखाओं, बिन्दुओं, अंकों और त्रिकोणों आदि से स्वचालित है। इस सिद्ध यंत्र को यही कल—पुर्ज़े चलाते हैं। भौतिक यंत्र दिखाई पड़ता है, और इससे हमारा भौतिक जगत प्रभावित होता है, किन्तु इसकी अपेक्षा—''सिद्ध यंत्र'' मनुष्य का जीवन बदलने की शक्ति रखता है।

सिद्ध यंत्रों में इतनी शक्ति छिपी हुई है, जिसे प्राप्त करने के बाद मानव किसी भी असम्भव कार्य को सम्भव में बदल सकता है। ये यंत्र जो इतनी विस्फोटक ऊर्जा अपने गर्भ में छुपाए हुए हैं, आखिर क्या रहस्य है इसका ?

यंत्रों को समझने के पहले हमें मंत्र संसार में पदार्पण करना होगा, तभी हम इस ''रहस्यमयी गुत्थी'' को सुलझा सकेगें।

यह सम्पूर्ण विश्व भगवान का स्वरूप है। उसी प्रकार "शब्द" मात्र भी भगवान है। जगत का मूल कारण शब्द है, यह बात "स्फोट बाद" प्रतिपादित करता है।

पाठको ! प्रत्येक शब्द एक कंपन उत्पन्न करता है, और प्रत्येक कंपन एक रूप व्यक्त करता है। ग्रामोफोन के रेकार्ड पर कुछ रेखाएं मात्र होती है, जो आंखों से नहीं दिखती। इन्हीं रेखाओं पर सूई घूमती है, जिससे शब्द उत्पन्न होता है। ये रेखाएं गाने वाले के शब्द के कम्पन से रिकार्ड पर बनी हैं। वर्षों पहले फ्रांस में किसी ने एक ऐसा यंत्र बनाया था कि उसके सम्मुख कोई गति या स्तुति गाने से यंत्र में लगे पर्दे पर रखे रेत के कण उछल–उछल कर एक आकृति बना देता था। एक भारतीय सज्जन ने उस यंत्र के सम्मुख "काल भैरव" की स्तुति गायी तो यंत्र के पर्दे पर "काल भैरव का रूप" बन गया।

पाठको ! "मंत्र" शब्दों का समूह है। मन्त्र ईश्वरीय शक्ति है। यह निर्वाण का मार्ग है। यह शिव और शक्ति का प्रतीक है और साक्षात्– "देवता" है। मंत्र बिन्दु से विराट की ओर ले जाता है, जिससे हम आत्मा और परमात्मा का साक्षात कार करते हैं।

शब्दों के समूह "मंत्रों" की अपनी ही भाषा है, अपना ही स्वर है, सुर है और अपना ही ताल है। जो मानव इस सुर–ताल को समझ लेता है, जान लेता है, वह अपने परमेश्वर के समीप हो जाता है, क्योंकि श्रद्धा पूर्वक सुर व ताल में लय बद्ध होकर बोला जाता है तो मंत्र के देवता उन पर प्रसन्न हो जाते हैं और उन्हें वरदान देते हैं, जिससे साधक के मनोकामनाओं की पूर्ति होती है।

शब्दों से कम्पन होती है। सृष्टि के सब पदार्थ कम्पन से बनते–बिगड़ते हैं, यह विज्ञान भी मानता है, इसलिए यंत्र–मंत्रों की शक्ति को समझना कठिन नहीं होना चाहिए। किन्तु शब्दों में क्या शक्ति है, यह सर्वज्ञ ऋषि–मुनि जानते थे। उन्होंने ऐसे शब्दों की रचना की तथा उनके प्रयोग की ऐसी विधि निश्चित की जिससे उन मंत्रों को निर्दिष्ट विधि से काम में लेकर अभीष्ट फल प्राप्त किया जा सके।

इस विचार धारा को लेकर वेदों–पुराणों और अनेक "तांत्रिक ग्रन्थों" की रचना ऋषि महर्षियों ने की। युग का परिवर्तन होता गया और परिवर्तन के प्रभाव से मंत्रों का प्रभाव घटा। क्योंकि इन शक्तियों को प्राप्त कर प्राणी गलत कार्य करने लगे। अतः ऋषि–महर्षियों ने मंत्र को गुप्त रखने की विधि अपनायी। इस विद्या को जीवित रखने के लिए उन्होंने मंत्र की ऐसी गुप्त विधि का निर्माण किया–जिसे "यंत्र" कहा गया।

यंत्र के सूक्ष्म शब्द, अंक, त्रिकोण एवं भुपूर का महत्व

यंत्र के सूक्ष्म शब्द एवं समस्त अंक–"देवी और देवता" हैं। जैसा वैज्ञानिक छात्र ही समझ सकते हैं। कि–"H.Q" का क्या तात्पर्य है। उसी प्रकार एक तांत्रिक ही समझ सकता है कि–"क्रीं–श्रीं, ह्रीं–एं–गं–क्लीं" क्या है। पाठकों ! ये सभी सूक्ष्म शब्द देवी–देवता के स्वरूप हैं। क्रीं का मतलब काली, श्रीं का लक्ष्मी ह्रीं का भयावना रूपा महाकाली, ऐं का सरस्वती गं का गणेश और क्लीं का तात्पर्य दुर्गा माँ होती है। इसी प्रकार यंत्रों के प्रत्येक अंक भी देवता हैं, जो यंत्र में लिखने पर अपना प्रभाव दिखाता है।

इतना ही नहीं यंत्र के लाईन, त्रिकोण, भुवपुर का भी बहुत विशाल और अद्‌भुत अर्थ है। जैसे–"बिन्दु" का मतलब ब्रह्मा, "त्रिकोण" का मतलब शिव, और "भुपुर" की तुलना "भगवती" से की गई है। उस यंत्रों का रेखा चित्र अनुभूतियों के सूक्ष्म लोक के और शक्ति के विविध स्वरूपों के रेखा चित्र हैं और सूक्ष्म शसक्त रूप से कार्य करते हैं।

इनके ज्ञाता नहीं रहे, समझने वाले नहीं रहे, प्रयोग करने वाले नहीं रहे, इसलिए यह तकनीक इतनी सीमित हो गयी है कि आज इसका अर्थ समझना दुश्वार हो गया।

पाठको ! "यंत्र–मंत्र" की शक्तियां "तुरन्त लाभ प्रदान करती हैं, इसमें कोई शंसय नहीं करना चाहिए, अपने द्वारा वर्षों के "रिसर्च" के अनुसार यंत्र–मंत्रों एवं ज्योतिष पर आधारित कई पुस्तकें मैं लिख चुका हूँ, जो "अमित पाकेट बुक्स"– जालन्धर सिटी से प्रकाशित हो चुकी हैं और इनसे भारत ही नहीं बल्कि दुनियां के कोने–कोने के पाठक गण पूर्ण लाभ उठा रहे हैं, क्योंकि पुस्तक में मैंने केवल उसी यंत्रों–मंत्रों का वर्णन किया हूँ–जिसकी "सिद्धि" स्वयं प्राप्त किया हूँ। वर्तमान समय में भी हजारों दुखी मिलकर, यंत्र–मंत्र प्राप्त कर गारंटी के साथ लाभान्वित हो रहे हैं, और आप भी किसी भी समस्याओं से उबरने हेतु, सम्पर्क स्थापित कर यंत्र प्राप्त कर, दुखद जीवन को सुखी बना सकते हैं, पाठको ! यह परम पवित्र उपासना ग्रन्थ माता महाकाली के विषयों पर आधारित है। अतः इसमें मात्र मातेश्वरी काली जी के अमोघ यंत्र–मंत्र का विस्तृत चर्चा करेगें।

यंत्र लिखने का विधान

पाठको ! ''श्रद्धा'' यंत्रों का ''प्राण'' है। श्रद्धा सहित रहकर यंत्र का निर्माण करना जीवन है। यंत्रों में रेखाओं, बीजों को, बीजाक्षरों या मंत्रों को विधि विशेष द्वारा संयोजित किया जाता है।

यंत्र के प्रति ''सन्देह'' करने से यंत्र ''मृत'' हो जाता है। और मृत वस्तु कोई भी कार्य नहीं कर सकती। यंत्र के बारे–में यह भी कहा गया है कि–''कर गये तो कसरत, चूक गये तो मौत''। क्योंकि यंत्र लिखते समय मंत्र की सिद्धि करते समय जरा सी भी असावधानी मौत के मुख में झोंक देता है। इसलिए यंत्र–मंत्र की साधना प्राप्ति हेतु किसी सिद्ध गुरु से दीक्षा लेकर ही, गुरु यंत्र (कवच यंत्र) धारण करके ही यंत्र निर्माण करना चाहिए। यंत्र साधना व प्रयोग विधि पुस्तकों में जो वर्णित है, इसे मात्र पथ प्रदर्शक ही समझें, सिद्धि दाता नहीं। सिद्धि तो गुरु ही प्रदान करा सकते हैं, यदि आप आवश्यकता समझें तो यंत्र–मंत्र की सिद्धि में हमसे परामर्श और सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। मैं यंत्र–मंत्र के प्रसार–प्रचार व बिस्तार हेतु दृढ़ संकल्पित हूँ।

यंत्र मनुष्य की गुप्त सूक्ष्म शक्तियों को उदय करता है। यंत्र की रचना करते समय रेखाएं शुद्ध भाव से खींचनी चाहिए, क्योंकि रेखाएं ही मनुष्य के अन्त–करण की गुप्त शक्तियों को आन्दोलित करती हैं। उस समय मन तथा चित्र के सहयोग से ''आसक्ति'' उत्पन्न होती है और अंहकार तथा बुद्धि के सहयोग से ''भाव तत्व'' का उदय होता है, (पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने हेतु पढ़े, वाई० एन० झा तूफान द्वारा रचित–1. ''यंत्र मंत्र द्वारा भाग्य बदलिये'' 2. बिपत्ति नाशक टोटके) तथा अन्तः करण निर्मल हो जाता है और साधक की मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

यंत्र विद्या वेद और ईश्वरीय शक्ति का समिश्रण

यंत्र का मूल ''वेद'' है और वेदों का मूल तन्त्र जो शब्दों अंकों रेखाओं आदि के रूप में ''ईश्वरीय अवतार'' के रूप में हम मानव को प्राप्त है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने ''राम चरित मानस'' में कहा है कि–''कलियुग में कष्टों को देखकर उसे दूर करने के लिए जग हित की करुण कामना से प्रेरित होकर ''श्री उमा महेश्वर'' (शंकर–पार्वती) ने मंत्रों और यंत्रों की सृष्टि की। यद्यपि इन यंत्रों और मंत्रों के अंक, अक्षर, मतलब आदि अनमिल होते हैं, तथा इसका कोई अर्थ भी

नहीं होता तथापि ''महेश'' के प्रताप से ये मंत्र और यंत्र तत्काल अपना चमत्कारिक फल प्रकट करते हैं।''

यंत्र–मंत्र की शक्तियों का ''वेद्'' स्वतः प्रमाण है, इनको किसी से प्रमाणित होने की आवश्यकता नहीं। अतः यंत्र–मंत्र की प्रमाणिकता भगवान शंकर के मुख से निकले होने के कारण सिद्ध है। आइये ! अब आपको कुछ महान अद्भुत, स्वयं रिसर्च किया प्रमाणिक महान चमत्कारिक ''महाकाली यंत्रों'' के निर्माण एवं उनकी साधना विधि की जानकारी प्राप्त कराता हूँ, जिसकी सिद्धि प्राप्त कराता हूँ, जिसकी सिद्धि प्राप्त कर आप जीवन सफल व सार्थक बना सकते हैं।

माता महाकाली के किसी भी यंत्र-मंत्र की सिद्धि करने हेतु सूक्ष्म रूप से परिक्षित एवं सफलता प्रदायक विधि

उपासको ! भगवती महाकाली के किसी भी यंत्र–मंत्र की सिद्धि करने हेतु–आश्विन मास के नवरात्री की अष्टमी की रात्रि में शुभारम्भ करना ही सफलता प्रदायक होता है। यह साधना विधि जो लिख रहा हूँ, वह पुस्तकों से पढ़कर नहीं बल्कि स्वयं का ''साधना अनुभव'' लोक रक्षा हेतु प्रस्तुत कर रहा हूँ।

साधक जब महाकाली के यंत्र–मंत्रों की सिद्धि की धारणा बना ले तो सबसे पहले–''महाकाली सिद्ध गुरू'' से इनकी पूर्ण दीक्षा लेनी चाहिए, अन्यथा मृत्यु प्राप्त करे की सम्भावनाएं होती हैं, अतः सावधान! यह साधना विधि मात्र पढ़कर साधना आरम्भ न करें, क्योंकि ऐसी भूल करने से अनेकों साधक अपना प्राण गवां बैठे हैं।

साधको ! इस परम पवित्र पुस्तक में वर्णित जितने भी यंत्र–मंत्र हैं, उन सबकी साधना विधि (पूजन आदि) एक ही है। फर्क केवल मंत्र, मंत्र जप की संख्या, विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास और माता के विविध रूप का है। परन्तु पूजन सभी रूपों का, यंत्र–मंत्रों का–''षोड़शोपचार विधि'' द्वारा ही सम्पन्न करना होगा।

जब साधना आरम्भ करें तो वैदिक पंडित को बुलाकर घर में एकान्त कमरे में महाकाली की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित कर, अथवा श्मशान भूमि, महाकाली मन्दिर में सर्वप्रथम भगवती का–''षोड़शोपचार पूजन'' विधि पूर्वक सम्पन्न करें, फिर निर्धारित मंत्र (जप संख्या) पूर्ण करें। जिस रात्रि में मंत्र जप पूर्ण हो उस रात्रि में मंत्र जप संख्या का दशवां हिस्सा मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें। नित्य ही मंत्र जप समाप्त होने के बाद माता की आरती अवश्य करें।

महाकाली के यंत्र मंत्र की साधना नवरात्री अष्टमी की रात्रि से अथवा दिवाली की रात्रि से या किसी भी शनिवार की रात्रि में आरम्भ कर सकते हैं। पूजन का शुभारम्भ 12 बजे रात्रि में करें और तीन बजे प्रातः तक जप करें।

साधको ! माता महाकाली के जिस रूप की साधना करनी हो, उस रूप से सम्बन्धित "सिद्ध गुरू यंत्र" महाकाली सिद्ध गुरू से प्राप्त कर धारण कर ही साधना आरम्भ करें।

यंत्र–मंत्र साधना आरम्भ की रात्रि में स्नान से पवित्र हो जावें। एकान्त कमरे में पश्चिम दिशा में पूरब मुहं करके बैठें। सामने आम की लकड़ी से बना सिंहासन रखें, उस पर लाल वस्त्र का आसन बिछावें और माता काली की तस्वीर की स्थापना करें। तत्पश्चात् पंडित के द्वारा "षोड़शोपचार" पूजन समन्न करावें, पूजन के बाद जप आरम्भ करें जप समाप्ति के बाद नित्य ही आरती करें। अन्तिम दिन मंत्र जप की दशांश संख्या मंत्र जप द्वारा हवन करें, आरती करें, तत्पश्चात् पूजन विसर्जन कर वैदिक पंडित एवं 11 कुंवारी कन्याओं को भोजन करावें।

याद रहे पूजन समाप्ति के बाद अपने हाथों से भोजपत्र पर भगवती से सम्बन्धित यंत्र अनार की कलम व रक्त चन्दन की स्याही से निर्माण कर सिंहासन पर रखना न भूलें अन्तिम दिन वह निर्मित यंत्र काले डोरे में डाल कर अपने गले या बाजू में धारण कर लें।

इस प्रकार साधना करने से माँ काली की आपके उपर अपार कृपा हो जायेगी, और जिसे भी आप शनिवार के दिन यंत्र अपने हाथ से निर्माण कर दे देंगे उसका भाग्य चमक उठेगा और उसकी समस्त कामनावों की पूर्ति हो जायेगी।

उपासको ! माता महाकाली के किसी भी महामंत्र को दिवाली की रात गंगा के किनारे की श्मशान भूमि में "शव" पर बैठकर एकान्त में जप करेंगे तो एक ही रात में पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जायेगी। परन्तु याद रखें महाकाली के किसी भी यंत्र–मंत्र की साधना गुरू से आज्ञा लेकर ही करें।

श्री दक्षिणा महाकाली यंत्र साधना

(विजय, सफलता, शक्ति, मुकदमे में जीत, सन्तान प्राप्ति एवं धन प्राप्ति हेतु अति चमत्कारी यंत्र)

उपासको ! यह माता महाकाली का अमोध यंत्र है। साधक जब यह यंत्र स्वयं साधना कर या गुरू से प्राप्त कर धारण करता है तो हर

नहीं होता तथापि ''महेश'' के प्रताप से ये मंत्र और यंत्र तत्काल अपना चमत्कारिक फल प्रकट करते हैं।''

यंत्र–मंत्र की शक्तियों का ''वेद्'' स्वतः प्रमाण है, इनको किसी से प्रमाणित होने की आवश्यकता नहीं। अतः यंत्र–मंत्र की प्रमाणिकता भगवान शंकर के मुख से निकले होने के कारण सिद्ध है। आइये ! अब आपको कुछ महान अद्भुत, स्वयं रिसर्च किया प्रमाणिक महान चमत्कारिक ''महाकाली यंत्रों'' के निर्माण एवं उनकी साधना विधि की जानकारी प्राप्त कराता हूँ, जिसकी सिद्धि प्राप्त कराता हूँ, जिसकी सिद्धि प्राप्त कर आप जीवन सफल व सार्थक बना सकते हैं।

माता महाकाली के किसी भी यंत्र-मंत्र की सिद्धि करने हेतु सूक्ष्म रूप से परिक्षित एवं सफलता प्रदायक विधि

उपासको ! भगवती महाकाली के किसी भी यंत्र–मंत्र की सिद्धि करने हेतु–आश्विन मास के नवरात्री की अष्टमी की रात्रि में शुभारम्भ करना ही सफलता प्रदायक होता है। यह साधना विधि जो लिख रहा हूँ, वह पुस्तकों से पढ़कर नहीं बल्कि स्वयं का ''साधना अनुभव'' लोक रक्षा हेतु प्रस्तुत कर रहा हूँ।

साधक जब महाकाली के यंत्र–मंत्रों की सिद्धि की धारणा बना ले तो सबसे पहले–''महाकाली सिद्ध गुरू'' से इनकी पूर्ण दीक्षा लेनी चाहिए, अन्यथा मृत्यु प्राप्त करे की सम्भावनाएं होती हैं, अतः सावधान! यह साधना विधि मात्र पढ़कर साधना आरम्भ न करें, क्योंकि ऐसी भूल करने से अनेकों साधक अपना प्राण गवां बैठे हैं।

साधको ! इस परम पवित्र पुस्तक में वर्णित जितने भी यंत्र–मंत्र हैं, उन सबकी साधना विधि (पूजन आदि) एक ही है। फर्क केवल मंत्र, मंत्र जप की संख्या, विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास और माता के विविध रूप का है। परन्तु पूजन सभी रूपों का, यंत्र–मंत्रों का–''षोड़शोपचार विधि'' द्वारा ही सम्पन्न करना होगा।

जब साधना आरम्भ करें तो वैदिक पंडित को बुलाकर घर में एकान्त कमरे में महाकाली की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित कर, अथवा श्मशान भूमि, महाकाली मन्दिर में सर्वप्रथम भगवती का–''षोड़शोपचार पूजन'' विधि पूर्वक सम्पन्न करें, फिर निर्धारित मंत्र (जप संख्या) पूर्ण करें। जिस रात्रि में मंत्र जप पूर्ण हो उस रात्रि में मंत्र जप संख्या का दशवां हिस्सा मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें। नित्य ही मंत्र जप समाप्त होने के बाद माता की आरती अवश्य करें।

महाकाली के यंत्र मंत्र की साधना नवरात्री अष्टमी की रात्रि से अथवा दिवाली की रात्रि से या किसी भी शनिवार की रात्रि में आरम्भ कर सकते हैं। पूजन का शुभारम्भ 12 बजे रात्रि में करें और तीन बजे प्रातः तक जप करें।

साधको ! माता महाकाली के जिस रूप की साधना करनी हो, उस रूप से सम्बन्धित ''सिद्ध गुरू यंत्र'' महाकाली सिद्ध गुरू से प्राप्त कर धारण कर ही साधना आरम्भ करें।

यंत्र–मंत्र साधना आरम्भ की रात्रि में स्नान से पवित्र हो जावें। एकान्त कमरे में पश्चिम दिशा में पूरब मुहं करके बैठें। सामने आम की लकड़ी से बना सिंहासन रखें, उस पर लाल वस्त्र का आसन बिछावें और माता काली की तस्वीर की स्थापना करें। तत्पश्चात् पंडित के द्वारा ''षोड़शोपचार'' पूजन समन्न करावें, पूजन के बाद जप आरम्भ करें जप समाप्ति के बाद नित्य ही आरती करें। अन्तिम दिन मंत्र जप की दशांश संख्या मंत्र जप द्वारा हवन करें, आरती करें, तत्पश्चात् पूजन विसर्जन कर वैदिक पंडित एवं 11 कुंवारी कन्याओं को भोजन करावें।

याद रहे पूजन समाप्ति के बाद अपने हाथों से भोजपत्र पर भगवती से सम्बन्धित यंत्र अनार की कलम व रक्त चन्दन की स्याही से निर्माण कर सिंहासन पर रखना न भूलें अन्तिम दिन वह निर्मित यंत्र काले डोरे में डाल कर अपने गले या बाजू में धारण कर लें।

इस प्रकार साधना करने से माँ काली की आपके उपर अपार कृपा हो जायेगी, और जिसे भी आप शनिवार के दिन यंत्र अपने हाथ से निर्माण कर दे देंगे उसका भाग्य चमक उठेगा और उसकी समस्त कामनावों की पूर्ति हो जायेगी।

उपासको ! माता महाकाली के किसी भी महामंत्र को दिवाली की रात गंगा के किनारे की श्मशान भूमि में ''शव'' पर बैठकर एकान्त में जप करेंगे तो एक ही रात में पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जायेगी। परन्तु याद रखें महाकाली के किसी भी यंत्र–मंत्र की साधना गुरू से आज्ञा लेकर ही करें।

श्री दक्षिणा महाकाली यंत्र साधना

(विजय, सफलता, शक्ति, मुकदमे में जीत, सन्तान प्राप्ति एवं धन प्राप्ति हेतु अति चमत्कारी यंत्र)

उपासको ! यह माता महाकाली का अमोध यंत्र है। साधक जब यह यंत्र स्वयं साधना कर या गुरू से प्राप्त कर धारण करता है तो हर

स्थानों में विजय और सफलता उनका चरण चूमती है और साधक धन, सन्तान, सुख, शान्ति व प्रसन्नता से परिपूर्ण हो जाता है।

(यंत्र चित्र)
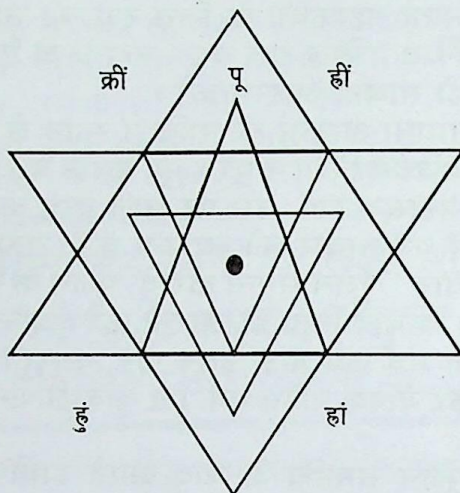
साधना विधि—इस महायंत्र की साधना किसी भी शनिवार को आरम्भ कर सकते हैं। रात्रि बारह बजे स्नान से पवित्र होकर वैदिक पंडित द्वारा षोड़शोपचार पूजन सम्पन्न करावें। इस पूजन में— निम्नलिखित विनियोग, ऋष्यादि, हृदयादि व करन्यास सम्पन्न करें—

विनियोग

अस्य श्री दक्षिण कालिका मन्त्रस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक छन्दः दक्षिण कालिका देवता, ह्रीं बीजं, हुं शक्ति, क्रीं कीलकं, मन अभिष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

नोट—इसके बाद करन्यास करें—

करन्यास मंत्र

ॐ क्रां अगुष्टाभ्यां नमः। ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्रुं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ क्रः करतल करपृष्टाभ्यां नमः।।

ऋष्यादि न्यास

ॐ भैरव ऋषेय नमः, शिरसि। उष्णिक छन्द से नमः मुखे। दक्षिण कालिका देवतायै नमः हृदि ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। हुं शक्तये नमः पाद्योः। क्रीं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

अब हृदयादिन्यास करें–

ॐ क्रां हृदयाय नमः। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ क्रुं शिखायै वषट्। ॐ क्रें कवचाय हुम।
ॐ क्रों नेत्रययाय वौषट्। ॐ क्रः अस्त्राय फट्।।

ध्यान मंत्र

शवारूढां महाभीमां घोर दष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजा खड्ग मुण्ड वराभयकरां शिवाम्।।
मुण्डमाला घरां देवीं ललजिह्वा दिगम्बराम्।
एवं संचितेतयेत काली श्मशान निघनि वासिनीम्।।

नोट—इसके पश्चात् अनार की कलम, रक्त चन्दन की स्याही से भोजपत्र पर यंत्र निर्माण कर, तांबे या चांदी अथवा सोने के तावीज़ में यंत्र को भर कर तांबे के प्लेट में माता काली तस्वीर के समक्ष रखे और सम्पूर्ण ''षोडशोपचार पूजन'' सम्पन्न करें। पूजन होने के बाद रुद्राक्ष की माला से नीचे लिखित मंत्र का 11 माला जप सम्पन्न करें–

श्री दक्षिण कालिका मूल मंत्र

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं हुं दक्षिण कालिके।
क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्त्रीं ह्त्रीं स्वाहा।।

नोट—11 माला जप सम्पन्न होने के बाद आरती करें। यह क्रम 41 रात्रि तक जारी रखें, परन्तु ''षोडशोपचार पूजन पंडित द्वारा'' केवल प्रथम रात्रि ही सम्पन्न कराना है। दूसरी रात्रि से धूप–दीप जगाकर यंत्र पे पुष्प चढ़ाकर मंत्र जप आरम्भ कर दें। 42 वें रात्रि में उपरोक्त मंत्र द्वारा 11 माला मंत्र जप करते हुए (वैदिक पंडित द्वार) हवन में हवन सामग्री की आहुति डालें। हवन के बाद आरती करें, तत्पश्चात यंत्र को प्रणाम कर गले में धारण कर लें। अब आप शनिवार के दिन यंत्र निर्माण कर उनका षोडशोपचार पूजन कर, एक माला मंत्र जप कर, जिसे भी प्रदान करेगें, उसकी कामनाएं अवश्य पूर्ण हो जायेगी।

नौकरी, विद्या, इन्टरव्यू में सफलता एवं परिवार में शान्ति हेतु मंगलाकारी यंत्र

उपासको ! नीचे लिखित यंत्र की साधना स्वयं करके अथवा–"गुरु द्वारा सिद्ध मंगलाकाली यंत्र" धारण करने से सरकारी नौकरी, विद्या में पूर्ण सफलता इंटरव्यू में सफलता एवं परिवार में सुख–शान्ति–प्रसन्नता की अवश्य प्राप्ति होती है। इस महायंत्र से अनेकों लोग पूर्ण सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

(मंगला काली यंत्र चित्र)
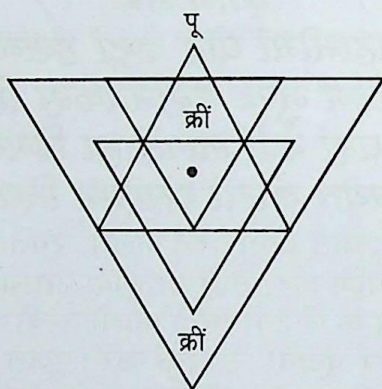
साधना विधि–इस महायंत्र का निर्माण दीवाली की रात्रि या किसी भी शनिवार की रात्रि में आरम्भ कर सकते हैं।

रात्रि बारह बजे स्नान से पवित्र होकर एकान्त कमरे में आम लकड़ी के सिंहासन पर लाल वस्त्र बिछाकर माता काली की तस्वीर स्थापित करें। उस पर गंगाजल छिड़क दें। धूप और दीप जगावें। दीप शुद्ध देसी घी का जगावें। गुरू से प्राप्त किया हुआ–सिद्ध गुरू यंत्र (कवच यंत्र) गले में धारण करें। अब–"क्रीं नमः" मंत्र जप करते हुए महा काली तस्वीर के उपर क्रमशः गंगा जल, अक्षत, (चावल) बिल्वपत्र, पुष्प और चन्दन, एवं पुष्पमाला चढ़ावें। सिंहासन के उपर एक थाल में फल वगैरह और सवा किलो लड्डू रखें। फिर उपर के यंत्र को भोजपत्र के उपर, रक्त चन्दन की स्याही और अनार की कलम से यंत्र निर्माण करें। सभी निर्मित यंत्र को सिंहासन पर रख दें।

अब रुद्राक्ष की माला से नीचे लिखित मंत्र का 11 माला जप रूद्राक्ष की माला से सम्पन्न करें–

मंगलाकाली यंत्र साधना मंत्र

"ॐ क्रीं नमः"

मंत्र जप समाप्त होने के बाद माता काली की आरती करें। दूसरी रात्रि में मात्र धूप-दीप, जगाकर यंत्र पे पुष्प चढ़ाकर पुनः 11 माला जप, एवं आरती कर्म सम्पन्न करें। इस प्रकार 21 रात्रि तक 11 माला जप करते हुए, हवन करें। फिर अन्तिम आरती सम्पन्न करें। अब यंत्र को प्रणाम कर सिंहासन से उठाकर, उसमें काले डोरे डालकर अपने गले में धारण कर लें तो उपरोक्त सभी कार्य आपके अवश्य सिद्ध हो जायेंगे। तत्पश्चात् आप किसी भी शनिवार को यंत्र निर्माण कर, विधि पूर्वक पूजन कर एक माला मन्त्र जप सम्पन्न कर किसी को भी प्रदान कर देंगे तो उनके भी उपरोक्त सभी कामनाएं पूर्ण हो जायेगीं। इसका अनेको प्रयोग मैं कर चुका हूँ, अनेकों को यंत्र प्रदान किया हूँ वे चमत्कारिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

रोग, शोक, अशान्ति और ऋण से मुक्ति हेतु - श्री भद्रकाली यंत्र

उपासको ! "माता भद्रकाली यंत्र" निर्मित कर, स्वयं साधना सम्पन्न कर, अथवा "सिद्ध काली महागुरु" से सिद्ध किया हुआ यंत्र प्राप्त कर जो भी धारण करता है, उसके समस्त असाध्य रोग नष्ट हो जाते हैं। पारिवारिक कलह क्लेश शान्त हो जाते हैं। और घर में सुख-शान्ति व प्रसन्नता का आविर्भाव होता है तथा प्राणी समस्त ऋणों से मुक्त होकर परम सुखी जीवन व्यतीत करने लगता है।
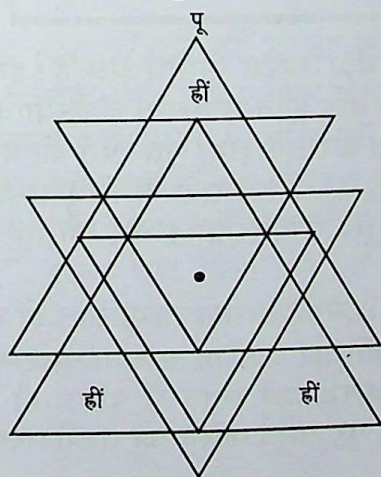
श्री भद्रकाली यंत्र चित्र

साधना विधि—मातेश्वरी भद्रकाली यंत्र की साधना नवरात्री (आश्विन या चैत्र मास की) की प्रथम रात्रि से आरम्भ करें और नवमी की रात्रि में पूर्णाहुति करें।

प्रथम नवरात्रि की रात्रि काल बारह बजे स्नान से पवित्र होकर एकान्त कमरे में आम लकड़ी के सिंहासन पर माता काली की तस्वीर की स्थापना करें। धूप–दीप जगावें। यंत्र के उपर पुष्प चढ़ावें। अब उपरोक्त यंत्र भोजपत्र के उपर अनार की कलम और रक्त चन्दन की स्याही से स्वयं यंत्र निर्माण करें। यंत्र निर्माण करने से पूर्व महाकाली सिद्ध गुरु से प्राप्त किया हुआ "गुरु कवच यंत्र" काले डोरे में अवश्य धारण कर लें। प्रथम रात्रि से लेकर नवमी की रात्रि तक प्रत्येक रात्रि में 151 यंत्र निर्माण करें। निर्मित यंत्रों को सिंहासन पर ही हर रात्रि रखते जावें।

अन्तिम रात्रि में यंत्र निर्माण करने के बाद सभी यंत्रों की आरती करें। दशवी के दिन प्रातः काल एक यंत्र तांबे की ताबीज में भरकर गले में धारण कर लें। बाकी निर्मित यंत्रों को बहती दरिया में प्रवाहित कर दें। इसके पश्चात् किसी भी शनिवार की रात्रि में यंत्र निर्माण कर पंचोपचार पूजन कर किसी को भी प्रदान करेंगे तो उनकी उपरोक्त इच्छित कामनाएं प्राप्ति तथा रोग शोक, अशान्ति का निवारण गारंटी के साथ हो जायेगा।

नवग्रह दोष निवारक, शनि साढ़सति एवं ढैय्या नाशक, भूत-प्रेत बाधा निवारक "महाकाली कपालिनी यंत्र"

यह "महाकाली कपालिनी यंत्र" परम अमोघ यंत्र है। इस यंत्र को धारण करने से मनुष्य नवग्रह दोष शनि साढ़ेसति व ढैय्या के दोष से मुक्त होकर सुखी जीवन व्यतीत करता है तथा भूत–प्रेत की बाधाएं, काले जादू का प्रभाव, टोने टोटके का प्रभाव सदा के लिए समाप्त हो जाता है और मनुष्य धन–जन–सुख सम्पत्ति प्राप्त कर जीवन सफल बना लेता है।

इस महायंत्र की साधना कर अनेकों साधक लाभान्वित हो रहे हैं।

साधना विधि—किसी भी शनिवार को यह साधना आरम्भ कर सकते हैं। शनिवार की रात्रि में बारह बजे स्नान से पवित्र हो जावें। आम की लकड़ी पर बने सिंहासन पर माता काली की तस्वीर स्थापित

करें। धूप और दीप जगावें। यंत्र के उपर पुष्प चढ़ावें। तत्पश्चात् गुरू से प्राप्त किया ''गुरू कवच यंत्र'' गले में धारण करें।

(महाकाली कपालिनी यंत्र चित्र)
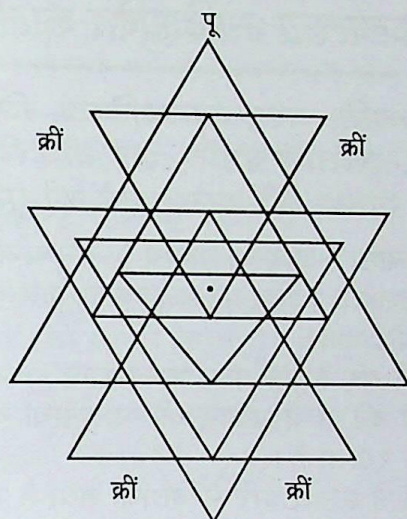
अब उपरोक्त यंत्र का निर्माण सादे कागज पर रोली चन्दन की स्याही, कुशा जड़ की कलम से करें। निर्मित यंत्र को ताबें की ताबीज में भरकर सिंहासन पर स्थापित कर दें। अब नीचे लिखित मंत्र का 11 माला जप रूद्राक्ष की माला से सम्पन्न करें–

(जप हेतु कपालिनी काली मंत्र)

।। ॐ क्रीं ह्रीं हुं ह्रां हुं नमः ।।

नोट–मंत्र जप समाप्त होने के बाद माता की आरती करें। 11 माला जप लगातार 5 रात्रि करें। अन्तिम रात्रि में 11 माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें, फिर आरती करें। तत्पश्चात् यंत्र को प्रणाम कर उठा लें और उसमें काले डोरे डालकर गले में धारण कर लें।

इसके बाद किसी भी शनिवार की रात्रि में यंत्र निर्माण कर पंचोपचार पूजन कर, एक माला मंत्र जप सम्पन्न कर जिसे भी प्रदान करेंगे उसे यंत्र सम्बन्धित कामनाएं अवश्य पूर्ण हो जायेगी।

(यंत्र-मंत्र संसार के अद्वितीय दुर्लभ प्रयोग)

समस्त इच्छा पूर्ति हेतु "वांछाकल्पलता आदिशक्ति काली यंत्र"
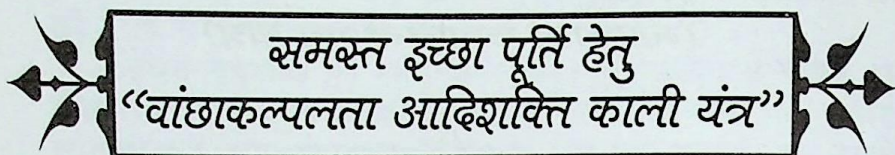
(नौकरी, पदोन्नति, यश, मानप्रतिष्ठा, विवाह, व्यापार, विदेश यात्रा, सन्तान प्राप्ति, ग्रह दोष निवारक, एवं समस्त प्रकार की कामनाओं की पूर्ति हेतु)

उपासको ! "वांछा" शब्द का तात्पर्य है—मनुष्य की इच्छा अभिलाषा और कामना। "कल्पलता" शब्द का मतलब है—कल्पवृक्ष जैसे महत्वपूर्ण कामना दायक दैविय वृक्ष।

इसका तात्पर्य यह है कि यह "यन्त्र राज" कल्प वृक्ष के समान साधना करने वाले की सभी प्रकार की भावनावों को पूर्ण करने की सामर्थ्य एवं शक्ति रखता है।

तांत्रिक ग्रन्थों में इसके बारे में बताया गया है वांछा कल्पलता न होमो न च तर्पणम्।

यन्त्र रचणं स्मरण देवि सिद्धि स्यात् यदिच्छति हि तद् भवेत्।

दशा वृत्या तथा विष्णु रूद्रकाली शक्तिःर्भवेदिह।
सार्व भौमः शतावृत्या भवत्येव न संशयः।।

अर्थात्—"यह वांछा कल्पलता काली यंत्र साधना विश्व की दुर्लभ व सरल साधना है। इसके प्रयोग में होम या तर्पण करने की ज़रूरत नहीं होती। केवल इस यंत्रराज का निर्माण, मंत्र जप से ही प्रत्येक इच्छा पूरी हो जाती है, इसमें कोई संशय नहीं है।"

साधना व यंत्र निर्माण विधि—इस यंत्रराज का निर्माण किसी भी शनिवार की रात्रि में लाल चन्दन की स्याही से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर करें।

यंत्र निर्माण करने से पूर्व आम लकड़ी के सिंहासन पर माता काली की तस्वीर स्थापित करें और महाकाली सिद्ध गुरु से प्राप्त किया हुआ सिद्ध गुरु यंत्र काले डोरे के साथ गले में धारण कर लें। तत्पश्चात् धूप-दीप जगावें। माता काली की तस्वीर पे पुष्प माला चढ़ावें। इसके पश्चात् यंत्र निर्माण कर तांबे के तावीज़ में भर कर सिंहासन पर रख

दें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का 5 माला जप करें और यह मंत्र जप लगातार 16 दिन तक 5 माला करते रहें।

यंत्र सिद्धि हेतु मंत्र

।। ॐ क्रीं ह्रीं हुं हं ह्रौं हूं कालिका नमः स्वाहा।।

सोलहवें दिन जप समाप्त होने के बाद यंत्र को प्रणाम कर सिंहासन से उठाकर, काले डोरे डालकर गले में धारण कर लें।

वांछा कल्पलता काली यंत्र धारण करने का फल

1. इस यंत्रराज को गले में धारण कर किसी से भी मिलने जाएं और कोई भी कार्य कहें, तो सामने वाला तुरन्त कार्य कर देता है।

2. जिस लड़के–लड़की के विवाह में विलम्ब हो रहा हो, उसे यह यंत्र धारण करने से दो महीने के अन्दर विवाह हो जाता है और दाम्पत्य जीवन सदैव सुखी रहता है।

3. यदि यंत्रराज को धारण कर किसी अधिकारी या बहुत बड़े व्यापारी के सामने जाकर अपनी इच्छा प्रकट करें, अथवा प्रमोशन, स्थानन्तरण या कोई एजेन्सी प्राप्त करने की बात कहें तो वह निश्चय ही स्वीकार कर ली जाती है।

(यंत्रराज का चित्र)
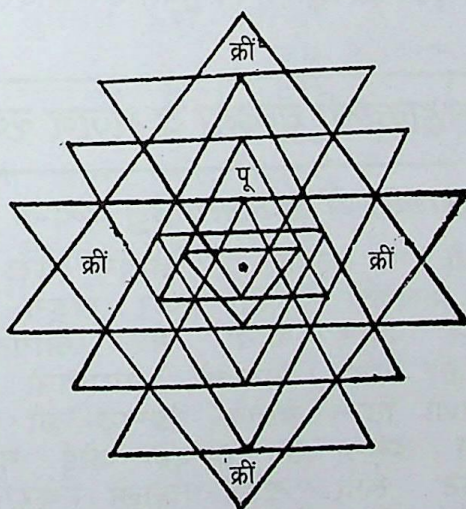
4. यदि यन्त्रराज को जल से धोकर, वह जल किसी को भी

पिला देंगे तो वह आपके वश में हो जायेगा। यह अनुभूत प्रयोग है और इसका प्रभाव तुरन्त होता है।

5. यह दिव्य यंत्र धारण करने से दुकान या फैक्ट्री अथवा घर के ऊपर किये गए गलत तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाते हैं और व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होने लगती है।

6. यंत्र धोकर, धोए जल को रोगी को पिलाने से असाध्य रोग भी महीने में ही नष्ट हो जाते हैं।

7. यंत्र धारण करने वाले के सम्मुख शत्रु टिक नहीं पाता और मुकद्दमे में विजय प्राप्त करता है।

8. इस दिव्य यंत्र को धोकर, धोए हुए जल में 101 काली मिर्च डालकर शत्रु के घर आगंन में उढेल दिया जाय तो उसका विनाश हो जाता है।

9. यदि इस यंत्र को धोकर, रजस्वला समय में स्त्री को तीन दिन तक पिलायी जाये तो वह अवश्य गर्भ धारण करती है और सन्तान पुत्र ही होता है।

उपासको ! मैंने इस यंत्र के प्रयोग को कई स्थानों पर कई प्रकार से आजमाया है, कितने दुःखी व्यक्ति को यह यंत्र सिद्ध करके दिया हूँ। इस कलियुग में भी यह दिव्य महान यंत्रराज का प्रभाव देखकर मैं दंग रह गया हूँ। उपर बताये गये फल तो मात्र सूर्य को रोशनी दिखाने के समान है। वास्तव में तो यह यंत्र धारण करने वाला अद्वितीय तेजस्वी युग पुरुष बन जाता है साथ ही साथ वह समस्त ज्ञान–विज्ञान में पारंगत हो वर्तमान पीढ़ी का मार्ग दर्शन करने में सक्षम हो जाता है। उसे दुनियां दिव्य पुरुष की संज्ञा से विभूषित कर आदर भाव से देखती है।

श्री महाकाली वन्दना व भजन खण्ड

साधना में सफलता हेतु वन्दना

सिद्धि दात्री मां कपालिनी, जीवन मेरा संभाल।
रक्षा कर कलकत्ते वाली, लेकर खड्ग विशाल।।
अनिष्ट न आने पावे, मेरे आंगन द्वार।
बाधाओं को मार भगाओ, भयावनी हुंकार।।
शोक विनाशो छिन्न मस्तके, खप्पड़ को खड़काय।
खीचें रेखा खड़ग से, अन्दर कोई न आय।।
सारे संकट रूपी ग्रह, काली दूर भगाय।
दृष्टि रखो कभी असिद्धि, घर में नहीं समाय।।

मेरी रक्षा करने माता, बने रहे विकराल।
आ न पाये महाकाल भी, देखे तेरो भाल।।
मेरे उपर से काटो, माता माया जाल।
सेवक बनूं तेरे चरण का, होवे जन्म निहाल।।
दें काली माँ इतनी सिद्धि, चमकूं जग संसार।
प्रसाद दूं जिसे तेरे नाम का, मानव वो तर जाय।।
मिटाओ हे काली माँ, हमपर से अत्याचार।
टकरावे दुष्ट यदि तो, उनको अम्बे मार।।
कृपा करो हे काली माता, सिद्धि दे मेरे हाथ।
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो मेरे तात्।।

मुरादें पूर्ण करने हेतु काली वन्दना

सभी मुरादें पूरी करदे,
जय हे खप्पड़ वाली माँ।
जय-जय कार करूँ दरपे,
बनके आज सवाली माँ।।१।।
टिके न दुश्मन कभी सामने,
जिनपर कृपा तेरी हो।
मैं भी बालक तेरा अम्बे,
मुझसे क्यों मुख फेरी हो।।
करो सुमंगल हरो अमंगल,
जय हे मंगला काली माँ।
सभी मुरादें करदे पूरी,
जय हे खप्पड़ वाली माँ।।२।।
जयन्ती काली मंगला काली,
भद्र काली कहलाती हो।
दुष्ट निवारण करने अम्बे,
कई रूप में आती हो।।
प्रलय मचा जीवन में मेरा,
कर मेरी रखवाली माँ।
सभी मुरादें करदे पूरी,
जय हे खप्पड़ वाली माँ।।३।।
उनको भी तू मारी अम्बे,
जिसे न कोई मार सके।

तार दिए उन दुष्टों को भी,
जिसे न कोई तार सके।।
चण्ड–मुण्ड व शुम्भ निशुम्भ
रक्तबीज संहारी माँ।
सभी मुरादें करदे पूरी,
जय हे खप्पड़ वाली माँ।।

हे काली मैया तेरो जय-जयकार

करे भक्तों ने दर पे पुकार,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।
तेरो सांचा है दाती दरबार,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।१।।
''शव'' के आसन, पे मैया बिराजे,
मुण्डों की माला गले में हैं साजे।
लिपटाये वदन मृगछाल,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।२।।
खड़का के खप्पड़, पापी संहारे,
अद्‌भुत खड़गों से दुष्टों को मारे।
सेवक को करती निहाल,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।३।।
नागों की मैया, जनेऊ हैं पहने,
चमचम हाड़ों का चमकत गहने।
त्रिनयनी की नयना विशाल,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।४।।
द्वितीया चन्द्रमा, मस्तक पर शोभे,
सिर की जटा ने सेवक को लोभे।
सबको लुटाती है प्यार,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।५।।
दर पे खड़ा हूँ माँ, बालक तेरो,
प्रिती नयन से ये नांदा को हेरो।
लिपटा के आंचल दो प्यार,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।६।।
''तूफान'' तेरो चरण में पड़ा है,
जिनके नैनों में आंसू भरा है।
मांगे ज्ञान भंडार,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।७।।

निर्धनता दूर करने हेतु काली वन्दना

नयन के पट खोल हे दाती,
नयन के पट् खोल।।१।।
द्वार खड़ा है दास ये तेरो,
अपने जया पर आंखे हेरो।
मुख से तनिक कुछ बोल, हे दाती,
नयन के पट् खोल।।२।।
तुम बिनु बिगड़ी कौन संवारे,
तारो हमें भी जग को तारे।
दरश दिखा अनमोल, हे दाती,
नयन के पट् खोल।।३।।
झोली खाली धन–जन भरदें,
विद्या बुद्धि ज्ञान का वर दें।
दुष्ट करत है। ठिठोल हे दाती,
नयन के पट् खोल।।४।।
कबसे खड़ा हूँ द्वार तुम्हारो,
पूरण करदे आस हमारो।
अमृत रस माँ डोल हे दाती,
नयन के पट् खोल।।५।।
सकल मंत्र के सिद्धि दाती,
कृपा करो हे भाग्य विधाती।
मुख निकले हरि बोल हे दाती,
नयन के पट् खोल।।६।।

आदिशक्ति तूं प्रलय काल में विष्णु को भी सुला दिए

''आदिशक्त'' माँ प्रलय काल में,
विष्णु को भी सुला दिए।
''हरि'' के नाभिकमल पे माँ,
ब्रह्मा को तूने बिठा दिए।।१।।
मधुकैटभ को पैदा करके,
तोड़े ''ब्रह्म'' गुमानों को।

तार दिए उन दुष्टों को भी,
जिसे न कोई तार सके।।
चण्ड–मुण्ड व शुम्भ निशुम्भ
रक्तबीज संहारी माँ।
सभी मुरादें करदे पूरी,
जय हे खप्पड़ वाली माँ।।

हे काली मैया तेरो जय-जयकार

करे भक्तों ने दर पे पुकार,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।
तेरो सांचा है दाती दरबार,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।१।।
"शव" के आसन, पे मैया बिराजे,
मुण्डों की माला गले में हैं साजे।
लिपटाये वदन मृगछाल,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।२।।
खड़का के खप्पड़, पापी संहारे,
अद्‌भुत खड़गों से दुष्टों को मारे।
सेवक को करती निहाल,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।३।।
नागों की मैया, जनेऊ हैं पहने,
चमचम हाड़ों का चमकत गहने।
त्रिनयनी की नयना विशाल,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।४।।
द्वितीया चन्द्रमा, मस्तक पर शोभे,
सिर की जटा ने सेवक को लोभे।
सबको लुटाती है प्यार,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।५।।
दर पे खड़ा हूँ माँ, बालक तेरो,
प्रिती नयन से ये नांदा को हेरो।
लिपटा के आंचल दो प्यार,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।६।।
"तूफान" तेरो चरण में पड़ा है,
जिनके नैनों में आंसू भरा है।
मांगे ज्ञान भंडार,
हे काली मैया, तेरो जय–जयकार।।७।।

निधर्नता दूर करने हेतु काली वन्दना

नयन के पट खोल हे दाती,
नयन के पट् खोल।।१।।
द्वार खड़ा है दास ये तेरो,
अपने जया पर आंखे हेरो।
मुख से तनिक कुछ बोल, हे दाती,
नयन के पट् खोल।।२।।
तुम बिनु बिगड़ी कौन संवारे,
तारो हमें भी जग को तारे।
दरश दिखा अनमोल, हे दाती,
नयन के पट् खोल।।३।।
झोली खाली धन–जन भरदें,
विद्या बुद्धि ज्ञान का वर दें।
दुष्ट करत है। ठिठोल हे दाती,
नयन के पट् खोल।।४।।
कबसे खड़ा हूँ द्वार तुम्हारो,
पूरण करदे आस हमारो।
अमृत रस माँ डोल हे दाती,
नयन के पट् खोल।।५।।
सकल मंत्र के सिद्धि दाती,
कृपा करो हे भाग्य विधाती।
मुख निकले हरि बोल हे दाती,
नयन के पट् खोल।।६।।

आदिशक्ति तूं प्रलय काल में विष्णु को भी सुला दिए

''आदिशक्त'' माँ प्रलय काल में,
विष्णु को भी सुला दिए।
''हरि'' के नाभिकमल पे माँ,
ब्रह्मा को तूने बिठा दिए।।१।।
मधुकैटभ को पैदा करके,
तोड़े ''ब्रह्म'' गुमानों को।

तूने बचायी विनती पे माँ,
ब्रह्मा जी के प्राणों को।।
अमृत वितरण में तूने ही,
दानव दल को भुला दिए।
आदिशक्त माँ प्रलय काल में,
विष्णु को भी सुला दिए।।२।।
सौ वर्षों तक जब पृथ्वी पर,
देव–असुर संग्राम हुआ।
तीनों लोक में जब खल–बल का,
देव दरों पे मुकाम हुआ।।
आदिशक्ति तूं बनकर,
काली रूप अवतार लिए।
फिर क्षण में ही तू जगदम्बे,
दानव दल संहार किए।।
असुर शक्ति को नैन की ज्वाला,
क्षण भर में ही जला दिए।
आदिशक्त माँ प्रलय काल में,
विष्णु को भी सुला दिए।।३।।
''ताड़कासुर'' का जब धरती पर,
महाघोर अपराध हुआ।
दानव के अत्याचारों से,
जब तीनों लोक बर्बाद हुआ।।
तब तूं ''दक्ष तपस्या'' पे,
पुत्री बन उनके घर आयी।
तपस्विनी ''विरणी'' के आंचल,
''सती'' नाम तूं कहलायी।।
''शिव की भार्या'' बनकर तूने,
''कार्तिकेय'' अवतार किया।
जिनके हाथों तू जगदम्बे,
''ताड़के'' का संहार किया।।
मृत्यु भी होने पर तूने,
कितने भक्तों को जगा दिए।
आदिशक्त माँ प्रलय काल में,
विष्णु को भी सुला दिए।।४।।
पाप से फिर ये दबी है धरती,
महाकाली अवतार धरो।
मानव फिर संकट में अम्बे,

आओ फिर उद्धार करो।।
दया करो ''तूफान'' पे अम्बे,
सब पर तूने दया किए।
आदिशक्त माँ प्रलय काल में,
विष्णु को भी सुला दिए।।५।।

जय बोलो माता काली की

(दश महाविद्या अवतार कथा)

जय बोलो माता काली की, जय बोलो खप्पड़ वाली की।
जिसने राह रोक ली भक्तो, ''शिव'' जैसे बलशाली की।।
जय बोलो माता काली की, जय बोलो खप्पड़ वाली की।।१।।
पूर्व काल में गौरी से शिव, रूठ चले बौराए।
रोके गौरी शिव भोले को, समझ नहीं कछु आए।।
कहते शिव जी पार्वती से, वाट हमारा छोड़े।
चरण पकड़कर गौरी माता, बार–बार कर जोड़े।।
रो–रो कर कहती अम्बे, ना नाथ छोड़कर जायें।
क्रोध में बोले शिव जी, गौरी आगे अब न आये।।
फिर तो क्रोधित हो गई ज्वाला, सुन कथा ये मुण्डो वाली की।
जय बोलो माता काली की, जय बोलो खप्पड़ वाली की।।२।।
गौरी माँ ने सोची मन में, ''शिव'' अभिमान में आए।
राह रोककर ''आदिशक्ति'' का, मैं सम्मान बढ़ाये।।
फिर न शिव जी हमें छोड़कर, कभी रूठ कर जायें।
राह रोककर ''पारब्रह्म'' का, अब मैं ज्ञान जगायें।।
महाकाली फिर बनी गौरी, ये कमाल था खड्ग वाली की।
जय बोलो माता काली की, जय बोलो खप्पड़ वाली की।।३।।
एक दिशा को बदले शंकर, दूजे दिशा को जायें।
फिर–फिर कर महाकाली अपना, रूप भयंकर लायें।।
पारब्रह्म की हारी शक्ति, भोले नाथ अकुलाए।
''महाशक्ति'' के आगे शिव जी, प्रथम बार घबड़ाए।।
विनती की फिर इनके आगे, भोले नाथ भंडारी जी।
जय बोलो माता काली की, जय बोलो खप्पड़ वाली की।।४।।
दश दिशा बदले थे शिव, ये दश रूपों में आई।
महाकाली की ''महाशक्ति'' ये, ''दश विद्या'' कहलाई।।
मुहंमांगा वर पाता जो, विनती करता ''बैताली'' की।
जय बोलो माता काली की, जय बोलो खप्पड़ वाली की।।५।।

श्री कामाख्या महाकाली की महिमा

भक्तो ! दक्ष यज्ञ में शिव की निन्दा सुनकर जब "सती" ने प्राण त्याग कर दिया तब उनके मृत देह को कन्धे पर लेकर महादेव उन्मत्त भाव से नृत्य करने लगे। उस समय "नारायण" ने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को इक्यावन (51) भागों में काट-काट कर गिरा दिया, वे अंश इक्यावन जगह गिरे, इसी से इक्यावन "शक्ति पीठ" का उद्भव हुआ। समस्त शक्ति पीठों में महादेव भी "भैरव रूप" से विराजमान हुए।

"कामरूप क्षेत्र" में देवी का "महामुद्रा" गिरा, उसी से "कामाख्या महापीठ" की उत्पत्ति हुई। समस्त भारत में जितने "शक्ति स्थान" हैं उनमें से "शक्ति स्थान" है उनमें से "कामाख्या धाम" ही सर्वश्रेष्ठ है।

"दक्ष यज्ञ" की घटना आदि "सतयुग" में घटित हुई। "पीठ की सृष्टि" उस प्राचीन काल में होने पर भी "मध्य युग" में प्रायः समस्त पीठ लुप्त हो गए थे। इस घोर कलिकाल में तन्त्र के अवलम्बन के बिना दूसरी गति नहीं है और तन्त्रोक्त साधन-भजन शक्ति पीठ में ही अच्छी तरह हो सकते हैं। इसलिए कलिमल-कलुषित जनों के प्रति करूणा कर-"श्री-श्री भगवती" ने अपने पीठों को अब एक-एक करके प्रकाशित कर दिया, जिससे जीवों के उद्धार का मार्ग उन्मुक्त हो गया।

"कालिका पुराण" में लिखा है कि-"त्रेता युग" में वराह पुत्र "नरक" जब नारायण के द्वारा "कामरूप राज" में राजपद को प्राप्त हुआ तब भगवान ने "नरक" को यह उपदेश दिया कि तुम "कामाख्या" के प्रति भक्ति भाव बनाए रखना। जब तक उसने यह उपदेश पालन किया तब तक वह सुख-पूर्वक स्वच्छन्द राज्य करता रहा। पीछे "वाणासुर" के परामर्श से नरक देवद्रोही होकर असुर संज्ञा को प्राप्त हो गया।

एक कथा है कि-"नरक" ने "कामाख्या देवी" के निकट विवाह का प्रस्ताव किया। देवी ने कहा-"मैं सहमत हूँ, परन्तु आज रात भर में ही इस धाम के मार्ग घाट, मन्दिर प्रभृत्ति सब बना देने होंगे।" नरक ने विश्वकर्मा को बुलाकर इन सब के बनाने में लगा दिया। काम प्रायः समाप्त होने को ही था कि मुर्गे ने रात्रि के अवसान की सूचना दी, अतएव विवाह नहीं हुआ।

आज कल भी कामाख्या पर्वत का नीचे से लेकर मन्दिर पर्यन्त जो पत्थर का बंधा हुआ रास्ता है, वह नरकासुर के पथ के नाम से पुकारा जाता है। परन्तु जिस मन्दिर में माता की "महामुद्रा" विराजमान

है, उसे ''कामदेव'' का मन्दिर कहते हैं। मन्दिर के सम्बन्ध में नरकासुर का नाम सुनने में नहीं आता। जो हो, नरकासुर के अत्याचार से कामाख्या के दर्शन में बाधा होने से वशिष्ठ ने क्रोधित होकर शाप दे दिया, जिसके फलस्वरूप कामाख्या पीठ का लोप हो गया।

ईशा की सातवीं से बारहवीं शताब्दी पर्यन्त कामरूपधिपति राजाओं के दिए हुए ताम्र शासनों में कामाख्या का कोई उल्लेख नहीं है। परन्तु वनमाल और इन्द्रपाल के शासन में कामेश्वर महागौरी का उल्लेख मिलता है। ये सम्भवतः उन राजाओं के इष्ट देवता (शिव–शक्ति) थे। जान पड़ता है कि महापीठ लुप्त होने पर अधिष्ठात्री देव–देवि ''इस छझनाम'' से पूजे जाते थे।

ईशा के सोलहवीं शताब्दी के प्रथमांश में कामरूप प्रदेश के छोटे–छोटे राज्यों के राजा लोगों में एकाधिपत्य प्राप्ति के लिए संग्राम चल रहा था। उसमें ''कोचराज विश्व सिंह'' विजयी होकर प्रायः समस्त कामरूप के एक छत्र अधिपति रूप में प्रतिष्ठित हुए।

किदवन्ती है कि–जब यह युद्ध चल रहा था तब एक दिन अपने साथियों को कहीं खोकर विश्वसिंह अपने भाई के साथ उनको खोजने के लिए घूमते–घूमते नीलांचल के शिखर पर पहुंचकर एक वटवृक्ष के नीचे विश्रामार्थ बैठ गये। उस समय उस जगह कोई बस्ती नहीं थी। उन्होंने एक वृद्धा स्त्री को वहां पर देखा और उसकी सहायता से जल प्राप्त कर अपनी पिपाशा को शान्त किया। वट वृक्ष के नीचे एक मिट्टी का टीला था। वृद्धा के द्वारा उन्हें ज्ञात हुआ कि वहां स्थानीय कोच जाति के लोग पूजा चढ़ाया करते हैं। पूजा का उपकरण स्त्रियों के योग्य परिधेय वस्त्र, अलंकार तथा बलि होता है। वृद्धा ने फिर कहा कि वहां के देवता बड़े ही जागृत हैं, जो जैसा मनोरथ करता है उसका वहीं मनोरथ सफल होता है। तब विश्व सिंह ने भी अपने साथियों के शीघ्र मिलने की कामना की, कामना करते ही वे वहां आ पहुंचे। अब विश्व सिंह को ''स्थान माहात्म्य'' में विश्वास हो गया और उन्होंने यह मनौती की कि–''मेरे राज्य में कोई उपद्रव नहीं रहेगा तो मैं यहां पर देवता के लिए एक सोने का मन्दिर बनवा दूंगा।''

शीघ्र ही राज्य में शान्ति स्थापित हो गयी। विश्व सिंह ने राज्य के पंडितों को बुलाकर उन्हें तथ्य का पता लगाने में नियुक्त किया। पण्डितों ने निश्चय किया कि वही ''कामाख्या पीठ'' है।

विश्वसिंह ने मन्दिर बनाने के लिए वटवृक्ष को कटवा डाला और उस मिट्टी के टीले को भी खुदवा दिया। खुदते ही वहां कामदेव के बनाए मूल मन्दिर का निम्न भाग बाहर निकल आया। राजा ने उसी के उपर नया मन्दिर बनवाया। सोने के मन्दिर के बदले में प्रत्येक ईंट के भीतर एक–एक रत्ती सोना देकर मन्दिर बनवाया गया।

विश्व सिंह की मृत्यु के बाद उनके बनाए मन्दिर को काला पहाड़ ने तोड़ दिया था, तब फिर विश्व सिंह के पुत्र प्रसिद्ध नृपति–नर–नारायण ने अपने अनुज शुक्लध्वज द्वारा 1565 ई० में वर्तमान मन्दिर का पुनः निर्माण कराया।

नर–नारायण और उसके छोटे भाई शुक्लध्वज की (युगल) मूर्ति मन्दिर में एक साथ पीठ के सामने खड़ी बनी हुई है। भक्तिमान राजा ने कामाख्या की सेवा भली भान्ति परिचालन करने के लिए– "केन्दुकलाई" नामक एक साधक ब्राह्मण को नियुक्त किया था। कहते हैं कि जब वह ब्रह्मण घंटा बजाकर देवी की सान्ध्य आरती करता तब देवी मूर्तिमती होकर बाद्य के ताल पर नृत्य करने लगती थीं। यह समाचार नर–नारायण को मिला। उसने देवी को उसी अवस्था में दिखाने के लिए पुजारी ब्राह्मण पर जोर दिया। ब्राह्मण ने राजा को आरती करते समय मन्दिर की खिड़की से ताकने के लिए कहा। अन्तर्यामी भगवती से यह बात छिपी न रही। अत्यन्त क्रुद्ध होकर देवी ने केन्दुकलाई का शिरच्छेद कर दिया और राजा को यह शाप दिया कि–"इस राजवंश का कोई भी पुरुष कामाख्या में आकर दर्शन करना तो दूर रहा, नीलांचल की ओर दृष्टिपात भी न कर सकेगा। दृष्टिपात करने से ही उसका सिर कट जायेगा। आज भी कोच राजवंशीय कोई पुरुष इस अंचल में आकर नीलाचल की ओर दृष्टि पात नहीं करता।

ऐसी अवस्था मे कोच विहार के राजा भी कामाख्या देवी की सेवा–पूजादि के सम्बन्ध में क्रमशः कामरूप अंचल का यह अंश "आहोम" राजाओं के अधिकार में आ गया तथा कुछ समय बाद नदिया शान्ति पुर से एक साक्त साधक को बुलाकर राज गुरु के पद पर नियुक्त किया गया। वे ही कामाख्या पहाड़ पर अधिष्ठित हुए। इसी कारण वे और उनके वंशज पर्वतीया गोसाई के नाम से पुकारे जाते हैं।"

आहोम राजा गण–विशेषतः पर्वतीया गोसाई के द्वारा शक्ति मंत्र में प्रथम दीक्षित राजा शिव सिंह–बहुतेरी देवत्र और ब्रम्हर्त भूमि दान कर गये हैं। आज कल जिस प्रकार कामाख्या की पूजा अर्चना होती है, वह पर्वतीया गोसाई के द्वारा व्यवस्थित है तथा महापीठ के समस्त कार्यक्रम के सम्पादनार्थ जिस प्रकार का बन्दोबस्त प्रचलित है, वह आहोम राजावों के द्वारा ही चलाया हुआ है।

श्री "दक्षिणा काली पीठ" का प्रादुर्भाव और महिमा

आदिशक्ति भगवती दक्षिणा काली का प्रार्दुभाव पूर्वी भारत के

बिहार राज्य में हुआ है। कहा जाता है कि दक्ष यज्ञ के समय माता "सती" के शव को शिव के कन्धों पर से भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से 51 इक्यावन भागों में काट डाले थे। उन्हीं की कटी हुई "जिह्वा" यहां पे गिरी हैं, जो दक्षिणा काली के रूप में प्रतिष्ठित है।

धन्य है भागलपुर जिला का "जहांगीर पर बैसी" ग्राम, जहां आदिशक्ति महाकाली की जीती–जागती नित्य बढ़ने वाली पत्थर की प्रतिमा ने अपना निवास स्थान चुनी है। कल–कल बहती हुई कोशिका नदी के किनारे भगवती माँ विराजित हैं, जो नित्य शरणों में आए शरणार्थियों की अपार भीड़ को मोहित कर लिया करती है।

प्राचीन समय की बात है। एक बार महारानी "कोशिका" नदी ने जहांगीर पुर बैसी ग्राम पर भयानक क्रोध किया था, जिसके परिणामस्वरूप उग्र तेज कोशी की धारावों ने सम्पूर्ण ग्राम को प्रवाहित कर देना चाहती थी। तभी–तभी ग्राम वासियों के आर्त्तनाद को सुनकर आदिशक्ति नदी के किनारे श्मशान भूमि में दक्षिणा काली के रूप में प्रकट होकर ग्राम वासियों की रक्षा की। जहां पर भगवती प्रकट हुई वहीं पर कोशी नदी का भयानक कटाव सिमट कर रह गया। जिस समय माहेश्वरी वहां पर पत्थर की पिण्डी रूप में प्रकट हुई थी उस समय उनका आकार बहुत छोटा था, जिसे किसी ने देख न पाया था।

तभी वहां के जमींदार श्री विरची प्रसाद सिंह के हाथी श्री काली प्रसाद ने एक चमत्कार दिखलाया। वो नित्य ही उनके अवतरण स्थान पर पहुंचकर नदी किनारे से अपने सूंड में जल भरकर उन्हें स्नान कराने लगा और वहीं पर लगे कनेर के वृक्ष से पुष्प को सूंड से तोड़कर दक्षिणा काली के उपर समर्पित करने लगा।

हाथी के द्वारा नित्य ही उन पत्थर प्रतिमा की पूजन करते देखकर गांव के सभी लोग हैरान हो गए। गांव के लोग उन प्रतिमा के पास आकर उन्हें उठाने की कोशिश की किन्तु प्रतिमा को टस से मस न कर सके। तब उन ग्राम वासियों ने प्रतिमा की नीचे की सतह तक खुदाई करने का प्रयास किया, किन्तु प्रतिमा नीचे जमीन में कहां तक गड़ी हुई है, उसका पता लगाने में बिल्कुल असमर्थ रहे। तत्पश्चात् उन्हें महाकाली का साक्षात अवतार समझकर गांव वाले नित्य पूजन और भवन निर्माण के बारे में सोचने लगे।

जमींदार श्री बिरंची सिंह ने अपने कुल पुरोहित पंडित श्री बेचन झा को पूजन के लिए वहां नियुक्त किया। लोग भवन निर्माण के बारे में सोच ही रहे थे कि अचानक एक रात में ही गांव के कई प्रमुख व्यक्तियों को स्वप्न में महाकाली दिव्य विकराल रूप में दर्शन देती हुई बोली–

"गांव वालो ! मुझे भवन के बीच कैद करने की कोशिश छोड़

दो। मैं श्मशान भूमि में आजाद विचरने वाली हूँ। अगर तुम लोगों ने यह दुःसाहस किया तो समूचे गांव के इन्सान को अपनी विकराल ज्वाला से भस्म कर डालूंगी।''

दूसरे दिन प्रातः सभी प्रमुख व्यक्तियों ने अपने-अपने स्वप्न की एक ही बातें बतायी, किन्तु आधुनिक युग के नौजवान ने इस ख्वाब को झूठ करार देते हुए उनके स्थान के समीप ईट वगैरह मन्दिर निर्माण हेतु जमा करना शुरु कर दिया।

तभी गांव में भयंकर हैजा रूपी महामारी फैल गयी और देखते ही देखते चन्द घंटों में ही गांव का घर-घर लाशों से पटने लगा। हर तरफ हाहाकार मच गया। गांव में इतने ''शव'' जमा हो गए कि उन्हें श्मशान तक पहुंचाने वाला भी नहीं मिलता था। गांव की औरतों और बच्चों के आर्त्तनाद से हर दिशाएं गूंज उठी। तब जाकर गांव के लोगों में जागृति आयी और उनकी महिमा का पता चला और गांव के सभी नर-नारी बच्चे सहित उनके चरणों में जाकर दया की भीख मांगने लगे। माता जी का नित्य पूजन करने वाले पुजारी पंडित बेचन झा ने अपनी जनेऊ उतार कर माँ के चरणों में समर्पित कर, रो-रो कर गांव की रक्षा हेतु मातेश्वरी की अनेकों विधि से पूजा-अर्चना की। तब जाकर भगवती पुनः द्रवित हुई और अपनी क्रोध रूपी माया को समेट लिया और गांव में शान्ति की स्थापना हुई। तभी से उनके सिर के उपरी भाग में विशाल चन्दवा डाल दिया गया है, मात्र उपरी भाग में छत डाला गया है जो छत चारों तरफ के पीलर पर टिका है, परन्तु मन्दिर में दीवार नहीं बनायी गयी है। हर दिशाओं से खड़े होकर भक्तगण भगवती का दर्शन कर सकते हैं।

वर्तमान समय में महाकाली स्थान का आधुनिकरण करने में- जहांगीर पुर बैसी के निवासी पंडित वाई० एन० झा ''तूफान'' श्री बुटी लाल यादव, श्री अखिलेश कुमार सिंह, श्री नन्द कुमार गुप्ता, श्री दिनेश झा श्री खगेश झा आदि कई भक्तजनों द्वारा विशेष सहयोग दिया जा रहा है।

भक्तो ! पूर्व काल से ही आज तक नित्य ही दूर-दूर से अपार संख्या में महाकाली के सेवक दरबार में दर्शन को आया करते हैं और मुंहमांगा मुराद पाया करते हैं। यहां सबकी कामनाएं पूरी होती हैं।

दिवाली की रात्रि में बृहद् पूजा का आयोजन किया जाता है। उस रात पूजन समाप्ति के बाद मध्य रात्रि में मन्दिर के खुले प्रांगन में अनेकों स्वर्ण कलश प्रज्जवलित दीपक उपर विराजित फुंफकारते नागराज के साथ वहां पर दूर से घूमते दिखाई पड़ते हैं। कहा जाता है कि भगवती के प्रांगन में सहस्त्रों स्वर्ण कलश स्वर्ण की नौकाएं स्वर्ण मुद्रावों से भरे दबे पड़े हैं। और हर कलश के उपर नागराज का पहरा

है। वो सभी कलश दिवाली की रात एक से तीन बजे के अन्दर बाहर निकलकर भगवती के चारों ओर परिक्रमा कर फिर वहीं की भूमि में समा जाते हैं इतना ही नहीं बल्कि साल में एक बार भगवती काली की उस गांव में रात्रि के वक्त ''रथ यात्रा'' भी होती है। रथ यात्रा के समय ज़ोरों की आंधी आती है और उसी बीच गांव के चारों ओर राहों पर किसी विशाल शोभायात्रा का आभास और वाद्य स्वर सुनाई पड़ते हैं।

उसी वक्त से पंडित बेचन झा के खानदान से ही अब तक उस मन्दिर में पुजारी नियुक्त हैं। जिनमें से क्रमशः पंडित श्री छोटकु झा, श्री दरबारी झा, श्री–श्री कान्त झा, श्री रमाकान्त झा, श्री महावीर झा, श्री दिनेश झा आदि मुख्य पुजारी रह चुके हैं। यहां पर जो भी व्यक्ति साधना करता है उसे अवश्य सफलता मिलती है। ग्राम निवासी नगरह के प्रख्यात पंडित व काली भक्त श्री रामू जी, व बैसी निवासी श्री वाई० एन०झा जी ने भगवती की साधना कर उनके साक्षात् दर्शन प्राप्त किए हैं। यहां पर आए भक्तों की मुराद अवश्य पूरी होती है और कलियुग में इन महाशक्ति का प्रभाव बहुत उद्गम है। पुरातन समय में प्रतिमा सिर्फ एक फुट लम्बी थी किन्तु आज वही प्रतिमा $3\frac{1}{2}$ फुट की विशाल आकृति में दिखाई पड़ती है।

मार्ग परिचय–पूर्वी भारत, बरौनी कटिहार लाईन, नवराछिया रेलवे स्टेशन से तीन मील उत्तर दिशा–ग्राम जहांगीर पुर बैसी में।

माता काली की आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निश दिन ध्यावत, ब्रह्मा हरि शिवजी।।

मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को,
मैया टीको मृगमद् को।
उज्जवल से दोऊ नयना, निर्मल दोऊ नयना,
चन्द्र वदन नीको।। मैया जय।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे,
मैया पीताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, लाल पुष्प गल माला,
कण्ठन पर साजै।। मैया जय।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती,
मैया नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, कोटिक चन्द्र दिवाकर,
राजत सम ज्योति।। मैया जय।।
केहरि वाहन राजत, खड़्ग खप्पर धारी,
मैया खड़्ग खप्पर धारी।
जो नर तुमको सेवत, जो नर तुमको सेवत,
तिनके दुःख हारी।। मैया जय।।
मधुकैटभ मद् हरणी, महिषासुर घाती,
मैया महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, धुम्र विलोचन नयना,
निशदिन – मदमाती।। मैया जय।।
चंड–मुंड संहारे, शोणित बीज हरे,
मैया शोणित बीज हरे।
शुंभ–निशुम्भ पछाड़े, शुम्भ–निशुम्भ पछाड़े,
निर्भय राज करे।। मैया जय।।
ब्रह्मादिक रुद्रादिक इन्द्रादिक ध्यावें,
मैया सनकादिक ध्यावे।
सुर नर मुनि जन सेवें तुमको,
मनवांछित फल पावे।। मैया जय।।
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरो,
मैया नृत्य करत भैरो।

बाजत ताल मृदंगा, बाजत ढोल मृदंगा,
अरू बाजत डमरू।। मैया जय।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती,
मैया अगर कपूर बाती।
श्री माल केतु में राजत, नगर कोटि में राजत,
कोटि रतन ज्योति।। मैया जय।।
ब्रह्माणी रूद्राणी तुम कमला रानी,
मैया तुम कमला रानी।
आगम–निगम बखानी, चारों वेद बखानी,
तुम शिव पटरानी।। मैया जय।।
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्राधारी,
मैया वर मुद्रा धारी।
मन वांछित फल पावत,
सेवत नर – नारी।। मैया जय।।
श्री अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे,
मैया जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, भनत शिवानन्द स्वामी,
सुख सम्पत्ति पावे।। मैया जय।।
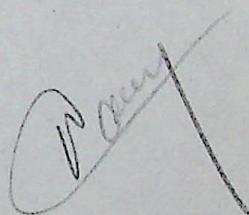
(राष्ट्रकवि तूफान द्वारा रचित)

आरती करो, महाकाली जी की।
खड़ग वो खप्पड़, वाली जी की।।
आरती करो, महाकाली जी की।।१।।
श्याम वर्ण है, भुजा विशाला।
शोभे गले, मुण्डों की माला।।
दया लो अम्बे दयाली जी की।
आरती करो, महाकाली जी की।।२।।
पहनी हैं, चर्मों की साड़ी।
हाथ लिए हैं, खड्ग दुधारी।।
पद गहो जिह्वा वाली जी की।
आरती करो, महाकाली जी की।।३।।
हाड़ों का आभूषण पहने।
मोती सम चमकत हैं गहनें।।
विनय करो शक्तिशाली जी की।
आरती करो, महाकाली जी की।।४।।
रौद्र रूप में दुष्ट संहारे।
दया रूप सेवक को तारे।।
दिल लगो अम्बे कपाली जी की।
आरती करो, महाकाली जी की।।५।।
चण्ड-मुण्ड को स्वर्ग पठाए।
रक्तबीज का भाग्य जगाए।।
कृपा लो हस्त भुजाली जी की।
आरती करो, महाकाली जी की।।६।।
दाती के दर, जो भी आए।
मुंहमांगा वर, लेकर जाए।।
लो वर मुण्डों वाली जी की।
आरती करो, महाकाली जी की।।७।।

।। इति श्री महाकाली उपासना सम्पूर्णम्।।